आल्हाखण्ड रामायण 1899

॥ श्री ॥

आल्हखण्ड रामायण ॥

सातौंकाण्ड ॥

एक पंथ होवैं दो काम ❊ आम खाय गुठलीके दाम

जिसको

पण्डित नारायणप्रसाद मुकुन्दराम जी ने
आल्हारस रसिकजनोंके चित्त बिनोदार्थ
रघुवंश भूषण कौशल्यानन्द वर्द्धन
दशरथनन्दन श्रीरघुनन्दनजी के
चरणारविन्दों में प्रेमभक्ति बढ़ाने
के अर्थ अत्यन्त रोचक आल्हा
छन्द में निर्माण की

वही

पं० नारायण प्रसाद, मुकुन्दरामजी ने

बम्बई

टाइप में छपवाया ॥

सम्बत् १९५६

बंबई पुस्तकालय-बाँसबरेली और लखीमपुर (अवध)

बिना तसवीरकी पुस्तक चोरीकी जानना.

मुं० श्रीधरशिवलाल-ज्ञानसागर छापखाना-बंबई.
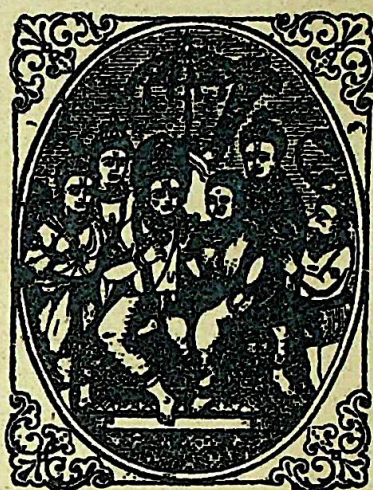
❋ प्रस्तावना ❋

प्रियवर—इसभारत मंडलमें वर्षासमय की बहार आने पर सैकड़ोंमनुष्य आल्हा सुनते और गातेहैं,यहांतक कि आल्हाके स्थानपर हजारोंमनुष्य एकत्रित होजातेहैं, परन्तु आल्हासे इह लोक, परलोक संबंधी सुख नहीं दीख पड़ता, व्यर्थ समय व्यतीतकरनेके बिना अन्य कुछभीसुख व लाभप्रतीत नहींहोताहै, इसकारण हमनेपरोपकार बुद्धिसे रामायण के सातौकांडों का आशय ग्रहण करके श्रीराम यश आल्हा छन्दमें बर्णन कियाहै जिस्से एकपंथ दोकाज सुधरैं,अर्थात् आल्हाका भी गान होवै, और रामका यशभी गायाजावै किमधिकम् ॥

समस्तजनों के हितैषी

पं॰नारायणप्रसाद मुकुन्दरामजी

बंबई पुस्तकालय—बांसबरेली व लखीमपुर ॥

आल्हखंड रामायण का सूचीपत्र॥

पुस्तक मिलने का पता

पंडित नारायणप्रसाद मुकुन्दराम

बम्बई पुस्तकालय बाँसबरेली

तथा—लखीमपुर (अवध)

❋ मंगलाचरण ❋

——०——

श्रीगणेशस्तुति ॥ छन्द षट्पद ॥

जय गणेश सुखसदन मत्तगजबदन विनायक ।
जय सुरेशगिरिजेशसुवन निजभक्त सहायक ॥
ऋद्धि सिद्धि दातार भक्त वरदायक सन्ता ।
लम्बोदर गणईश जगततारक भगवन्ता ॥
जय२गणेशगिरिजासुवनसकलभक्तजनअघहरण
शिरनाय२बन्दनकरतनारायणगणपतिचरण १।
सुमुख दन्तयक कपिल नाम गजकर्ण सुहायक ।
लम्बोदर अरु विकट विघ्ननाशक सुविनायक ॥
धूम्रकेतु अरु गणाध्यक्ष शशिभाल गजानन ।
द्वादश नाम गणेश प्रात सुमिरो निज आनन ॥
कहु विद्यारम्भ विबाहमें गृहप्रवेश गमने मुदा ।
अरु संग्राममेंसंकटसमय,नारायणसुमिरौमदा ॥२॥

॥ छन्द त्रिभंगी ॥

जयगणनायक जयति विनायक जनसुखदायकलम्बोदर ।
जय जय प्रतिपाला दीनदयाला रूप विशाला गजशेषर ॥

जयजय भगवन्ता जयति अनन्ता जय इकदन्ता नागबदन।
जयगौरीनन्दन त्रिभुवन बंदन शत्रुनिकन्दन सिद्धिसदन ॥३॥
सुरमण्डल मण्डित शक्ति अखण्डित पूरण पंडित भूमिभरं।
गिरिनन्दिनि नन्दनदुष्टनिकन्दन जनमनरंजन सौख्यकरं॥
शोभित सिन्दूरं खलगणशूरं आनँदपूरं पाशधरं।
जयजय गणनायक दाससहायक सुखउपजायकविघ्नहरम् ४॥

॥ विनय श्रीरामचन्द्रजी ॥ छन्द छप्पय ॥

जय जय जय गुणरूपधाम रघुवंश विभूषण।
जय जय जय सुरभूप दलन कामादिक दूषण॥
जय जय जय भुविभार दैत्य परिवार नशावन।
जय जय जय द्विज धेनुहेत अवतार सुहावन॥
जय रसुरेशदशरथसुवनानिजलीलाजनमनहरण।
शिरनायनायवन्दनकरतनारायणरघुपतिचरण ५

॥ विनय श्रीकृष्णचन्द्रजी की ॥ छन्द छप्पय ॥

जय जय जय गुणरूपधाम यदुकुलदलमण्डन।
भक्त हेत तनु धरत दैत्य दानव दल खण्डन॥
करिकारिविनयअनन्तसन्तचिन्ततउरधारिधरि।
जिनको सबब्रजबाम रूपपीवत दृग भरि भरि॥
जयरतिनन्दयशुमतिसुवनसकलभक्तजनअघहरण।
शिरनायनायबन्दनकरत नारायणयदुपतिचरण६॥

॥ विनय श्रीभगवतीजीकी ॥ चौपदी छन्द ॥

जय त्रिभुवनवन्दनि सुरउरचन्दनि दुष्टनिकन्दनि सदा जये ।
मम विपतिविभंजनि खलदल गंजनिजनमन रंजनि कृपामये ॥
जय जय जगजननी भव भय हरणी जगविस्तरणी शिववामा ।
जय बिषयनिवारणि कलिमलहारिणिअधमउधारणिसुखधामा ७
जय जय जगदम्बा तव अवलम्बा कहा विलम्बा मम बारा ।
जय मंगलदाता त्रिभुवनमाता सुरनरत्राता श्रुतिसारा ॥
पीताम्बरधारी जनसुखकारी कलिमलहारी भव फन्दै ।
जय जय ब्रह्माणी श्रीपतिरानी शिवा भवानी पद बन्दै ॥ ८ ॥

॥ सवैया ॥

हौ वरदानि अनुग्रहखानि सुनी यह बानि भवानि तिहारी ।
द्वै कर तीव्र गदा धरि ज्यों करती सब दासनकी रखवारी ॥
त्यों करिये हमरी रखवारि दया उरधारि सुनो करतारी ।
केवल है अवलंब तुही जगदम्ब विलम्ब कहा मम बारी ॥ ९ ॥
दीनदयालु कहावत हौ तेहि नामकी लाज करौ रघुवीरा ।
नाम रटौं तुमरो हियमें नित मांगत हौं तुव भक्ति गँभीरा ॥
भक्तनके दूख दूरि दुरावत ताते रटौं धरिकै मन धीरा ।
माथ नवाय करौं विनती प्रभु बेगि हरौ हमरी सबपीरा ॥ १० ॥

॥ कुंडलिया ॥

बन्दौं राधारमणपद महामन्दमति मोरि ।
विद्याबल मोहिं दीजिये विनय करौं कर जोरि ॥

विनय करौं कर जोरि राम लक्ष्मण गुण गावा।
गाय रामगुण ग्राम यथा मनमोद बढ़ावौं ॥
मिटै सकल जंजाल भक्तजनकी सब बाधा।
भक्तिभाव उर लाय रटै नँदनंदन राधा ॥११॥

॥ छंद आल्हा ॥

श्री गणनायक जन सुखदायक सुन्दर बदन रूप अभिराम।
विघ्नविनाशक दाससहायक सुमिरे करतासिद्धि सबकाम॥१२॥
आदि देवता सब जगवन्दित महिमा अमित बर्णि नहिं जाय।
ऐसे गणपति के पद बंदौं बन्दौं बहुरि शारदा माय॥ १३ ॥
श्रीजगदम्बाको सुमिरन करि सुमिरौं महाकालिका माय।
सिंहवाहिनी खड्गधारिणी सुमिरौं बार बार शिरनाय॥ १४ ॥
दशहु महाबिद्याको सुमिरौं जिनके नाम कहौं हरषाय।
काली तारा त्रिपुरसुन्दरी भुवनेश्वरी मात समुदाय॥ १५ ॥
छिन्नमास्तिका त्रिपुरभैरवी धूमावती नवौं शिर नाय।
बगलामुखी मातु मातंगी कमला दशौ अंबिका माय॥१६॥
जो कोइ सुमिरे दश विद्याको सिगरे काम सिद्धि ह्वै जायँ।
सुखी रहै जग में निशि वासर पाछे स्वर्ग लोक चलि जायँ॥१७॥
बहुरि सरस्वतिको सुमिरौं मैं माता कण्ठ विराजौ आय॥
शरदचन्द्रमाके सम आनन शोभा अंग अंग दरशाय॥१८॥
पुस्तक राजै एक हाथमें वीणा दूजे हाथ सोहाय।
कानन कुण्डल अति सोहत हैं अस्तुतिकरैं देव समुदाय॥१९॥
हँसवाहिनी बुद्धिदायिनी जाको रूप न वरणो जाय।

यक्ष नाग गन्धर्व सुरासुर सुन्दरि मोहि मोहि रहि जायँ ॥२०॥
पुनि पद बन्दौं शिवशंकर के जेहि शिर गंग भंग आधार।
अंग अंग में भस्म रमाये नन्दी वृषभनाथ असवार ॥ २१ ॥
भाल चन्द्रमा अति सोहत है धारे कण्ठ मुण्डकी माल।
वृश्चिकसर्प आभरणतनमें अम्बुज सदृशनयन त्रयलाल ॥२२॥
जटा जूट अर्धंग विराजै आधे अंग अम्बिका माय।
प्रेत पिशाच भूत सँग डोलैं बोलैं बचन बनाय बनाय ॥ २३ ॥
डमरू हाथ त्रिशूल बिराजै नयनन रही लालरी छाय।
हैं बरदानी सब देवनमें महिमा रटैं वेद समुदाय ॥ २४ ॥
सुख राशी कैलाश निवासी हैं अविनाशी शम्भु सुजान।
सेवक सुखदायक सबलायक पूरण करैं दासमन मान ॥ २५ ॥
शीश नवाऊँ सब मित्रनको क्षमियो चूक जानि अज्ञान।
एक पंथ दोय काज हेत मैं बरणन करौं राम यशखान ॥२६॥

॥ इति मंगलाचरणं समाप्तम् ॥

आपका,

पण्डित नारायण प्रसाद मुकुन्दरामजी,
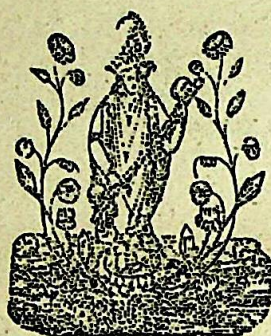
श्रीगणेशायनमः ॥

आल्हखण्ड रामायण प्रारम्भः

सुमिरण

॥ दोहा ॥

सुमिरौं श्रीगुरुदेवपद, बहुरि शारदा माय ॥
नारायण सुमिरण करत बारबार शिरनाय ॥ १ ॥

॥ सोरठा ॥

लम्बोदर दातार, विघ्न हरण मंगलकरण ॥
सुमिरिस्वमतिअनुसार,रामायणआल्हारचौं २॥

॥ छंद आल्हा ॥

प्रथम मनावत हौं गणपतिको सुमिरत काम सिद्धि ह्वैजायँ।
ऋद्धि सिद्धिनिधि चमरढुलावैं सुरगण हाथबांधि रहिजायँ ॥२॥
शंकरनंदन दुष्टनिकन्दन बन्दन जगत हरण महिभार।
दयासिन्धु जगदीश निरन्तर प्रभु अज अमर विश्वआधार ४ ॥
मस्तक कंचन मुकुट बिराजे हाथ त्रिशूल गले बनमाल।
रक्तवर्ण लंबोदर सोहै सोहै अंग अंग सब लाल ॥ ५ ॥
कहँलग बरणौं मैं तुम्हरे गुण बिनती करौं चरण शिर नाय।
आदि सनातन पूजनीय हौ नारायण को होउ सहाय ॥ ६ ॥
पुनि जगदम्बाको सुमिरण करि सुमिरौं महाकालिका माय।
सिंहबाहिनी आदि भवानी सुमिरौं बार बार शिरनाय ॥ ७ ॥
कोटि चन्द्रसम आनन राजै जय जगदम्ब आदि महरानि।
मधुकैटभ महिषासुर भंजिनिभंजिनि चण्ड मुण्ड जगरानि ॥८॥
शुंभ निशुंभ बिदारिनि माता जय जय सकलबुद्धि गुणखानि।
वेदविदित सुर नर मुनि गावत जयजय करत होत अघहानि९
जय शिवदूती जय चामुण्डा जय अम्बिका सकलगुणखानि।
जय ब्रह्माणी जय रुद्राणी जय इन्द्राणी वेदनभानि ॥ १० ॥
जय जय रमा मातु वाराही जय जय नारसिंहि जगजानि।
नारायण की मनो कामना पूरण करौ मातु प्रणठानि ॥ ११ ॥
अब मैं सुमिरौं हनूमान पद सागर रूप बुद्धि बलधाम।
अंजनि तनय सन्त सुखदायक लायकसुभट शूरसंग्राम ॥ १२ ॥
रामदुलारे सीताप्यारे लक्ष्मण प्राण दान गुणखान।
आशा मेरी पूरण करियो हे बलवन्त बीर हनुमान ॥ १३ ॥

तुमरे अखाड़े में गावत हौं बेड़ा खेइ लगैऔ पार।
जो जोअक्षर हनुमत भूलौं सोसब लिखिऔ जीभ हमार ॥१४॥
चरण तुम्हारे के सुमिरनते मनसा सिद्धि होयँ सब काम।
नाम तुम्हारो साधु सन्तजन सुमिरन करत आठहू याम ॥१५॥
अब रामायणकों बरणौं मैं आल्हाछन्दमाहिं जगहेतु।
सात काण्डको सार खैंचिके बरणन करिहौं हर्ष समेत ॥ १६ ॥
मैं मतिमन्द कहांलग बरणौं है रामायण सिन्धु समान।
पै हरिचरण धारि उरअन्तर बर्णन करों राम यशखान ॥ १७ ॥

॥ अथ बालकाण्ड प्रारम्भः ॥

॥ सवैया ॥

श्रीरघुनन्दनको सुमिरौं सुमिरौं पुनि मैं गिरिजेशदुलारो।
अंजनिपुत्र बली हनुमान तुही सब भाँतिन सों रखवारो॥
हर्षि हिये बिनवौं सब देवन भक्तनकष्ट सदा निरवारो।
मैं मतिमन्द यथामतिसों सब के हित गावत बीरपँवारो ॥१॥

॥ छन्द आल्हा ॥

एक समय हरिके दर्शनहित सनकसनंदनादि मुनि चार।
सो बैकुण्ठ धाम में पहुंचे जहँ जय विजय रहैं तेहि द्वार ॥२॥
द्वारपाल रोंक्यो तेहि अवसर मुनियन शाप दीन ततकाल।
तीनिजन्म लग होउ असुरतुम मानों बचन सत्ययहिकाल॥३॥
सुनत शाप कांपे दोऊ गण चरणन गिरे मूर्छा खात।
दया लागि भाष्यो तब देवन तुम्हरी मुक्ति विष्णुके हात॥ ४ ॥
सोई दोनौं द्वारपालगण सतयुगमाहिं असुर विख्यात।
हिरणाकुश अरु हिरण्याक्ष ह्वै मुक्ती भये विष्णु के हात ॥ ५ ॥
त्रेता युगमें महा असुर ह्वै रावण कुम्भकरण बलवान।
अपने बलसे सकल विश्वमें कीन्ही आय पुण्यकी हान ॥ ६ ॥
कोउ नर धर्म करन नहिं पावे साधू सन्त महा अकुलान।

रावणत्रासबढ़ो जगअन्तर नहिं कोउ करै यज्ञ जप दान ॥७॥
परम सभीत धरा अकुलानी अतिशय देखि धर्मकी हानि ।
धेनुरूप धरि इन्द्रलोकको गवनी असुरनाश प्रण ठानि ॥८॥
जाय पुकारी इन्द्रलोकमें सुरपति सभा सुनायसि हाल ।
बढ़े असुरगण मृत्युलोक में तिनको हतौ बेगि सुरपाल ॥ ९ ॥
सुनिके बातैं सो पृथिवीकी सुरपति चले ब्रह्मके लोक ।
गोतनुधारी भूमि बिचारी सुरगण संग लिये युत शोक ॥ १० ॥
कही हकीकति सब ब्रह्मा से ब्रह्मा करन लगे अनुमान ।
जबहीं भीर परत भक्तनपर रक्षा करत आय भगवान ॥ ११ ॥
यह बिचारि विधि सकलदेवयुत अस्तुति करन लगे तेहि काल ।
हे प्रभु दीनबन्धु भक्तनहित स्वामी प्रगट होउ ततकाल॥१२॥

॥ छन्द षट्पद ॥

जय जय मीन बराह कूर्म नरसिंह सुबावन ।
जय जय परशु समेत राम रघुनन्दन पावन ॥
कृष्णचन्द्र अरु बौद्ध रूप कल्की मनभावन ।
जय जयरूप अनन्त दशौ औतार सुहावन ॥
जयजयतिसनातनब्रह्मअजसकलभक्तजनदुखहरण
प्रभुबारबारबिनतीकरौंशरणगहौंभगवतचरण।१३।

॥ छन्द आल्हा ॥

जयजय मनरंजन भवभयभंजन गंजनविपति यूथमहिभार॥
सबविधिसुन्दर शुभगुण मन्दिरहौतुमसकलसृष्टिकरतार ॥१४॥
घटघट बासी अविनाशी हौ गोद्विज रक्षक दीन दयाल ।

महिमातुम्हरी सबजग जाहिर जानत सबैवृद्ध अरुबाल ॥१५॥
सुनिके विनय सकल देवनकी बाणी भई गगन ते आय।
सो ब्रह्मा समुझावन लागे सुनिये गिरा देवसमुदाय ॥ १६ ॥
कश्यप अदिति महातप कीन्हा तिनकहँ पूर्ब दीन वरदान ।
तेदशरथ कौशल्यारूपा कोशलपुरी प्रगट नर भान ॥ १७ ॥
तिनके भवन मांहिं अवतरिहौं रघुकुल तिलक चारिहू भाइ ॥
सीताशक्तिसमेत प्रगटिहौं हरिहौं सकल भूमिगरुआइ ॥ १८॥
सुनि के बाणी ब्रह्मदेवकी धरणी भई सर्ब भय हीन ॥
सावधानमन ह्वै ब्रह्मापुनि आयसुं सकल सुरनको दीन॥१६॥
वानरतनु धरि धरणिलोक में बिचरहु जाय विगत सबशोक॥
ब्रह्मागवने ब्रह्मलोक को सुरगण प्रगट भये महिलोक ॥ २० ॥
इत सब सुर गण प्रगट भये महिउत हरि मनमें कीनविचार॥
अबमैं प्रगटौं नृप दशरथ घर पुनिसब हरौं भूमिको भार ॥२१॥
यह बिचारि प्रभु चारि अंशते राजा दशरथ की पटरानि ॥
तिनके उदरमध्य प्रगटन हित गर्भित भयेपूर्ब तपजानि ॥२२॥
जबते गर्भ माहिं हरि आये शोभा शील तेज अधिकाय ॥
कौशल्या केकई सुमित्रा एक ते एक बरणि नहिंजाय ॥२३ ॥
सुखयुत कछुक काल चलि गयेऊ आयो समय विष्णुअवतार ।
चैत उजेरी तिथि नवमीमें अरु दिन आनिपरोगुरुवार ॥२४॥
दिवसमध्य उपजे रघुनंदन निशि में भरत लाल सुखखान ।
दुसरे दिवस लषण रिपुसूदन उपजे सुघररूप नरभान ॥२५॥
नगर अयोध्या में दशरथघर उपजे कामरूप सुत चारि ।
छबिके सिन्धु बुद्धिगुण सागर विद्याऐन प्राण नरनारि ॥२६॥
रामचन्द्र छबि परम मनोहर शारद सुयश कहत सकुचाय ।

कोटिकाम उपमालघुलागतिकाविधि वरणिसकैंकविराय॥२७॥
सागरसुयश अगम रघुनायक मम मति मशक रूप अज्ञान ।
शेष शंभु विधि पार न पावत मैं करिसकौं कौनगतिआन२८॥
सब तजि बहुरिकहत निजआशय श्रीअवधेश धन्य जगभाग ।
जबतेपुत्र परम जय उपजे सेवक बने देव नर नाग ॥ २९ ॥
राजभवन खेलैं सुतचारो निरखत मात पिता हर्षाहिं ।
पुरनरनारि परम सुख मानैं नृप दशरथके भाग सराहिं ॥ ३० ॥
बैरभाव सपने नहिं ब्यापै उड़गई गगन कलह दुख त्रास ।
गाय सिंह जुरि मिलि बन बिचरैं एकहि घाट बुझावैं प्यास ३१॥
निर्मल जल सरयूमें लहरैं मधुरी पवन चलै सुखवारि ।
समय समय घन घंटा उमँगैं बनबन फूलि रहीं फुलवारि ॥३२॥
तरुवर फलैं मधुर रस टपकैं पक्षी केलि करैं सुख पाय ।
सकल सम्पदा इंद्रपुरीकी भरिगइ अवध पुरी में आय ॥ ३३ ॥
धन्य भाग जग नृप दशरथ के जिनघर प्रगट भये भगवान ।
धन्यसुभाग मात कौशल्या जिनको क्षीरकियो हरि पान॥३४॥
धन्यभूमि जग अवधपुरी की जहँ नित रमणकरैं रघुनाथ ।
धन्यधन्य उन पुरबालनको विचरैं रामचन्द्रके साथ ॥ ३५ ॥
रामप्रताप प्रगट जिमि दिनकर पर्वत पाप होत जरिछार ।
देखौ वाल्मीकि घटयोनी ह्वै गये रामराम कहिपार ॥ ३६ ॥
रामनाम सतमूरि सजीवन हरिजन अमर भये जपि नाम ।
उत्तर गगन पंथको निरखौ ध्रुवकीज्योति दिपति सुरधाम॥३७॥
रामभक्तनिधि में नहिं डूबत अग्नि न सकति रोमलग जारि ।
जनप्रह्लादभक्तिबल उबरो दहकाति अग्निभई फुलवारि॥३८॥
रघुवरभरत धर्मयश बलानिधि लक्ष्मण रिपुसदन सुत चारि ।

जबसे जन्मे अवधपुरी में दशरथ अभय भये शर धारि ॥३९॥
कहँ लग वरणौं अवधपुरी की शोभा कछू कही नहिं जाय ।
अतिउछंग सब नगर नारिनर घरघर महामोदअधिकाय॥४०॥
राम लक्ष्मिन भरत शत्रुहन खेलत अवध चारिहू भाय ।
बालचरित्र करतभक्तनहित सुरगणमोहिमोहि रहिजायँ ॥४१॥

॥ दोहा ॥

पुरबनिता मन हर्षअति, निजनिजकरिशृंगार ।
पुनिपुनिआवतभूपगृह, देखनबालबिहार॥४२॥

॥ छंद आल्हा ॥

रामचंद्र लक्ष्मिन मिलिखेलैं खेलैं भरत शत्रुहन जोरि ।
श्याम गौरसुंदर दोउ जोरी निरखहिंछबिजननी तृणतोरि४३॥
चारिउ शील रूप गुणआगर तदपि अधिक सुखसागर राम ।
कोटिचन्द्रसम आनन शोभा देखत सकल नगर नर वाम४४॥

॥ दोहा ॥

नारायण अवतार सुनि, कौशिक हर्ष अपार ।
शिष्यवृन्द निजसंग लै, आये भूपति द्वार॥४५॥
गाधिसूनु आगमन सुनि, कोशलेश हुलसाय ।
द्वारं जाय पुनिलायगृह, विनय करत शिरनाय४६

॥ छन्द आल्हा ॥

चरण पखारि कीन्ह अतिपूजा मोसम धन्य आजु नाहिं कोइ ।
विविध भांति भोजन करवाये मुनिवर हृदय हर्ष अति सोइ४७॥
पुनि चरणन मेले सुत चारौं विश्वामित्र देखि प्रभुओर ।
भये मग्न देखत मुखशोभा मानहुँ मिलिगे चन्द्र चकोर४८॥

मुनिसन दशरथ पूंछनलागे केहि कारण आगमन तुमार ।
मेरे लायक जो कारज होय सो मैं करौं न लाऊँ बार ॥ ४६ ॥
असुर समूह सतावहिं मोहीं मैं याचन आयउँ नृप तोहिं ।
अनुज समेत देहु रघुनायक निश्चरबधन यज्ञहित मोहिं ॥५०॥
सुनि सुनि गिरा भूप ब्याकुल मन बोले तब वशिष्ठ समुझाय ।
अति आदरसमेत दोउ बालक सोतुम देहु वेगि मनलाय ॥५१॥
कछु संदेह चित्त नहिं लावहु गोद्विज हेत राम अवतार ।
हैं यह राम बुद्धिबलसागर पुनि अज अमर विश्वआधार ५२ ॥
गुरु वशिष्ठ के वचन मानि नृप सौंपे राम लषण सुत दोउ ।
मेरे प्राणनाथ यह बालकतुम मुनि पिता आननहिं कोउ॥ ५३॥

॥ दोहा ॥

हर्षि चले मुनिभयहरण, पुरुषसिंह दोउ वीर ।
अखिलविश्वकारणकरण, कृपासिन्धु मतिधीर ५४

॥ राग पद् ग़ज़ल ॥

मुनिन के यज्ञकी रक्षा करैं सौमित्र रघुराई ।
धरेधनुबाण कटिलूणी फिरैं चहुँओर दोउभाई ५५
तपो मखध्यान हरिपूजा करैंऋषिवृन्द मननिर्भय।
हरणअघदेवसरकूले धरणिशुचिरम्य सुखदाई ५६
समय तेहि ताड़का आई शैल सम देह भयकारी ।
निशाचरयूथबहुसँगमें रुधिरबिठमांस झरलाई ५७
चढ़ाई चाप रघुनन्दन कटकयुत दुष्टिनी मारी ॥
सुबाहू सेनयुत रणमें बधे करि कोप समुदाई ५८ ॥

हनो मारीच के यक शर पठायो पार सागर के ।
करीमुनियज्ञकीरक्षा मुनिनमनमोदअधिकाई ५९

॥ दोहा ॥

धनुष यज्ञ मिथिलापुरी, विरच्यो जनकनरेश ।
रामलषण देखनचले, मुनिसँग हर्षविशेष ॥६०॥

॥ छन्दआल्हा ॥

आश्रम एक दीख मगमाहीं खगमृग जीव जन्तुतहँनाहिं ।
शिलादेखि प्रभुमुनिसन पूँछा तब ऋषि कथाकहीप्रभुपाहिं६१
गौतमनारि शापवश यह तनु धारण किये सुनो मतिधीर ।
चरणकमलकी रजयह चाहति सोतुमकृपा करहुरघुवीर ॥६२॥
सुनि मुनिबाणी रामचन्द्र ने अपनो चरणकमल धरि दीन ।
परसत पाद पद्म नरतनु धरि अस्तुति रामचंद्रकीकीन ॥६३॥
जय रघुनायक जन सुखदायक सुंदर वदन रूप अभिराम ।
जयसुरपालक असुरनघालक जयप्रभुकृपासिंधुघनश्याम ६४॥
दीनदयाल भक्त हितकारी हमपर कृपा करी रघुनाथ ।
कहँलग बरणौं प्रभुतुमरे गुणहर्षित हृदय नवाऊँ माथ॥६५॥
गई अहिल्या पुनि अपने गृह आगे चले बहुरि रघुराय ।
पहुँचे जायगंगतट दोनौं कीन्हप्रणाम महासुखपाय ॥ ६६ ॥
मज्जन करि आगे पुनि गवने देखन हेत यज्ञ के साज ।
हर्षित हृदय जनकपुर पहुँचे शोभादेखिरहे शिरताज ॥६७ ॥
बनै न वर्णत नगर निकाई मणिमय जटित राज दरबार ।
भूषित सकल नगर नरनारी घरघर होयँ मंगलाचार॥ ६८ ॥
समाचार मुनिके पाये जब आये जनक तहां ततकाल ।

मुनिहिं भेंटि पुनिराम लषणकीशोभा निरखरहेतेहिकाल॥६९॥

॥ दोहा ॥

बहुरि भूपमन धीरधरि, लैसँग मुनि दोउ भाय ।
दिव्य बासदीन्होसुखद, सुरपति भवनलंजाय ७०
गुरु शासन नृपबाटिका, गये लषण रघुराय ।
सिया रामने परस्पर, कीन्हीप्रीतिदृढ़ाय ॥७१॥

॥ छन्द आल्हा ॥

नगर नगरके सब नरपालक आये सिया स्वयंबर माहिं ।
अपनी अपनी अभिलाषासे आये जनकनगर के माहिं ॥७२॥
सियास्वयंबरको दिन आयो सबराजनिको लीन बुलाय ।
शतानन्द तब जनक बुलाये कौशिक मुनिपहँ दीनपठाय ७३
जनक विनयतिन आय सुनाई मुनिने बोलि लिये दोउभाय ।
शतानंदपद बंदन करिकै बैठे राम गुरूपहँ जाय ॥ ७४ ॥
तब मुनि कहेउ रामलक्ष्मणसन तुमको पठवा जनक बुलाइ ।
चलहु तात नृप जनकयज्ञमें देखें केहि बिधि देइबड़ाइ ॥७५ ॥
पुनि पुनि वृन्द समेत रामजी देखन चले धनुष मखसाज ।
रंग भूमि आये दोउभाई शोभित भये सकल शिरताज॥७६॥
राजा जनक केर मंत्रीगण सब उठि उचित देइँ विश्राम ।
दीन्हविशाल मंच यकसुन्दर बैठे कृपासिन्धु सुखधाम॥७७ ॥
जानिसुअवसर नृपति जनकने पुनि तब पठवा सियहिबुलाय।
चतुर सखी सुंदर सब लायक सादर लाईं सँग लिवाय ॥७८ ॥
सभामध्य बोले बंदीगण अब तुम सुनहु सकल महिपाल ।
नृप विदेहकर प्रण हम वरणैं सबविधि भुजा उठाय विशाल॥७९॥

जो शिव धनुष तोरि महि डारै राजा जनक बरै सिय ताहि।
सुनि प्रण सकल भूप अभिलाषे सीताबरन हेत मनमाहि॥८०॥
फेंट बांधिके उठि ठाढ़े भये अपने इष्टदेव शिरनाय।
कोटिभांति शिवधनुषउठावैं आसन लौटिजायँ सकुचाय॥८१॥
तमकि धरहिं धनु मूढ़ महीपति सोपुनि उठै न चलहिं लजाइ।
मनहुँपाइभटबाहु महाबल सोधनुअधिकअधिक गरुआइ॥८२॥
श्रीहत भये सकल भूपतिगण बैठे निजआसन हियहारि।
नृपन बिलोकि जनक अकुलाने बोले रोष बचन शरमारि॥८३॥
द्वीप द्वीपके सकल भूपगण आये बड़े बड़े रणधीर।
तिल भरि धनुष टरो नहिं महिते जानी धराभई बिनबीर॥८४॥
यह सुनि लषणलाल अति कोपे सैनन दीनराम निर्वारि।
विश्वामित्र समय शुभ जान्यो बोले बचन राम पटतारि॥८५॥
उठहु राम शिवधनुष खंड करि मेटहु तात जनकसंताप।
सुनि गुरुबचन उठे रघुनायक हर्षित हृदय विगत उरताप॥८६॥

॥ राग कलंगड़ा ॥

भूपगणके मध्यमें छविपुंज रघुबरकी छटा।
व्योमउडुगणमेंयथा अतिहोयहिमकरकीछटा॥८७
जानकीमिथिलेशदुखलखि राम उर करुणाभई।
पीतपटकटिबांधिज्योंमृगदेखिकेहरिकीछटा॥८८
नाय गुरु मस्तक रमापति शंभुबाणासन लियो॥
खंडकरिपटक्योमहीज्योंनालकरिबरकीछटा॥८९
मैथिली सानन्द रामहिं माल पहिराई गले॥

प्रीतिरस दोऊयथा कमला रमेश्वरकी छटा ९० ॥
हर्षि सुर बरषे सुमन नभ देखि शोभा देवगण ।
मोदमयमिथिलापुरी सुखमासरोवरकी छटा ९१ ॥

सोरठा ॥

सजि बरातअवधेश, आय हर्षि मिथिलापुरी ।
जाय भेंटि मिथिलेश, सादरजनवासादियो९२॥

॥ दोहा ॥

भरत लषण रिपुदमन युत, तीनौं राम समान।
जनकभवनब्याहेसबै, श्रुतिकुलरीतिविधान९३॥
चारौ सुतनबिबाहि करि, अवध चले अवधेश ।
कहतपरस्पर योषिता, सियाचलीनिजदेश ९४ ॥

॥ छंद आल्हा ॥

लै बरात अवधेश रामयुत गवने अवधपुरी निज धाम ।
जनकपुरीते कछुक दूरिपर आये परशुराम बलधाम ॥ ९५ ॥
महाक्रोध करि भृगुनंदन जी बोले वचन राम ढिग आय ।
मारि ताड़कानारि राक्षसी बल बढ़िगयो बिपिनमेंजाय ॥९६॥
पै अतिकठिन धनुष को भंजन सो तुम तोड़ि दीन ततकाल ।
धनुष दूसरोहै हमरेढिग खैंचहु चापराम याहि काल ॥ ९७ ॥
तौ हम जानैं तुम्हरे बलको की तुम महा बुद्धि बलधाम ।
सुनिकै बातैं परशुरामकी करते धनुषलीन घनश्याम ॥ ९८॥
चाप चढ़ायो रघुनन्दन ने बोले चितै परशुकी ओर ।

कहिये भंग करूं लोकन को कहिये भंगकरूं गतितोर ॥६६॥
यह कहि अंश खींचि निज लीनो तुरतै परशु भये बलहीन ।
हरिअवतार प्रगट मनजान्यो बोले परशुरामह्वै दीन ॥ १०० ॥
हे जगस्वामी अंतर्यामी हमपर कृपा करहु मतिधीर ।
जाहुँ मंदराचल पर्वतको भूतलभार हरौ रघुबीर ॥ १०१ ॥
परशुराम निज ओर सिधारे पुनि रघुनाथ कीन प्रस्थान ।
पहुँचे नगर अयोध्याजी में घरघर होनलगे शुभगान १०२ ॥
बजी बधाई अवधपुरी में शोभा छाय रही बाजार ।
जबते ब्याहि रामघर आये घरघर होत मंगलाचार १०३ ॥
जो यह बालकांड की आल्हा निशि दिन पढ़ै सुनै मनलाय ।
शूरवीर ह्वै जग निशिवासर पाछे स्वर्गलोक चलिजाय १०४॥
राम लक्षिमन भरत शत्रुहन सीता हनूमान बलधाम ।
नारायणकी मनो कामना पूरण करौ आठहू याम ॥ १०५ ॥

इतिबालकांडसमाप्त ॥

॥ अथ अयोध्याकाण्डप्रारंभः ॥

❀ सुमिरण ❀

ब्रह्म सनातनको सुमिरौं मैं सुमिरौं मैं अनंत भगवान ।
जग उपजायो जिन ब्रह्माह्वै रक्षा करत बिष्णु ह्वै जान ॥ १ ॥
पुनि संहार करत शंकर ह्वै महिमा जासु वर्णि नहिं जाय ।
जब जब भीर परत भक्तनपै तब हरि कीनी आय सहाय २ ॥

दश अवतार प्रगट जगमाहीं तिनके नाम कहौं हर्षाय ।
प्रथम मत्स्य अवतार धारिकै शंखासुरहि कीन बध जाय॥३॥
रक्षा करी सकल वेदनकी दूजो कूर्मरूप भगवान ।
पीठि आपनीपर गिरि धारो मन्थन कियो समुद्र महान॥४॥
ह्वै बराह पृथ्वी धारण करि मारो हिरण्याक्ष बलधाम ।
यह अवतार तीसरो जानौ सुमिरत होयँ सिद्धि सब काम॥५॥
चौथो रूप धरो प्रभु जीने सो हम तुमहिं कहत समुझाय ।
बैर कियो हिरणाकुश प्रभुते अरु प्रहलाद दीन बँधवाय॥६॥
यही समैया जक्तनाथजी नरहरि रूप पहूँचे आय ।
उदर बिदारो हिरणाकुशको अरु प्रहलादहि लीन बचाय॥७॥
पंचम रूप धरो बामनको भिक्षुक भये इन्द्र के काज ।
तीन पैग पृथिवी नृप बलिसे मांगीजाय छोंड़िके लाज॥ ८ ॥
रूप बढ़ायो पुनि प्रभुजीने नापे सकल लोक मनलाय ।
सुमनवृष्टि भइ स्वर्गलोकते हर्षित भये देव समुदाय ॥ ९ ॥
छठो रूप श्री परशुराम को जिनको जानत सकल जहान ।
कहँलग बरणौं तिनके बलको मारा सहसबाहु बलवान ॥१०॥
पुनि जब भीर पड़ी सन्तन पै पूरण रूप आय करतार ।
सरयू निकट अयोध्या जीमें लीन्हों रामचन्द्र अवतार ॥ ११॥
बहुरि सतावन लगे असुरगण साधू सन्त भये भयमान ।
मथुरामाहिं रूपगुणसागर प्रगटे कृष्णचन्द्र भगवान ॥ १२ ॥
जिनकी लीला सब जग जाहिर जानत सबै वृद्ध अरु बाल ।
घट घट बासी अविनाशी हैं गोद्विजरक्षक दीनदयाल ॥ १३ ॥
मारि पूतना हति सकटासुर बक अरु तृणावर्त को मार ।
गर्व नशायो इन्द्रदेवको धरु अंगुरीपर धरो पहार ॥ १४ ॥

केशी व्योमासुर वृषभासुर मारे कंसआदि खलराज ।
रक्षा कीनी पांडवकुलकी सारथि बने भक्त के काज ॥ १५ ॥
पुनि ह्वै बौद्ध योगधारण करि राजत जगन्नाथ दरबार ।
दशम रूप कल्की जग ह्वैहै यह हम कहे दशौ अवतार १६॥
छूटि सुमिरनी गई अब ह्यांते आगे सुनौ अवध को हाल ।
नारायण मुकुन्दकी बाणी चितदै सुनौ वृद्ध अरु बाल १७ ॥

॥ दोहा ॥

अतिपावन रघुबीरयश विदित सकल ब्रह्माण्ड ॥
बालकाण्डकृतगायकछु,कहतअयोध्याकाण्ड १८

॥ छंद आल्हा ॥

नगर अयोध्याके नर नारी सबके राम प्राणआधार ।
दिनदिन शोभा अधिक अवधकीराजादशरथकेदरबार ॥१९॥
राम लषण अरु भरत शत्रुहन नितप्रति करत राजब्यवहार ।
शोभा महाराज दशरथकी कीरति विदित सकल संसार॥२०॥
अवध निवासी सबनर नारी निज निज मनमें करें बिचार ।
राम राज्य करि हैं केहि अवसर केहि दिन होयँरामसरदार॥२१॥
यह बिचारि सब नगरनिवासी पहुँचे गुरु बशिष्ठपहँ जाय ।
रामराज्यकी मनोकामना जाहिर करी तहां मनलाय ॥ २२ ॥
गुरु बशिष्ठ गमने नृप के ढिग बोले अतिसनेह युत बैन ।
रामचन्द्रको गद्दी दैके देखौ पुत्रकेर सुख नैन ॥ २३ ॥
सुनि कै बातैं गुरुबशिष्ठ की अति आनन्द भये महराज ।
पूँछि मुहूरत रामराज्य हित सादर सजनलगे सब साज॥२४॥

दोहा ॥

राजतिलक रघुनाथहित, सबसमाज नृपकीन्ह ।
सुरप्रेरितचेरी कुटिल, कुमति केकईदीन्ह॥२५॥
करि कुवेष केकयसुता, बैठि कोप गृह जाय।
सुनिअवधेशकलेशअति,विनयकरतशिरनाय २६

॥ रागिनी भैरवी तर्ज गज़ल ॥

रिसानी किसलिये प्यारी कहोकछु बातप्यारी।
सुनावोकोपसबकारनहृदयअकुलातप्यारी२७॥
अवज्ञा कौन ने कीन्हीं कहौ हम से सुनैनी।
कहाअपराधसेकीन्हो महाउत्पात प्यारी ॥२८॥
छुटी अलकैं न मस्तक बिन्दु पटधारे पुराने।
भरेश्रोणितउभयलोचनसुखदजलजातप्यारी२९
सुरासुर नाग नर गंधर्व किन्नर आदि जेते।
तुम्हारो शत्रु जोहोवै करौं रणघातप्यारी ॥३०॥
भवन पर्यंक अति सुंदर सुमणि भूषितबिसारे।
परीभूतल लपेटेधूरि क्यापाछितात प्यारी ॥३१॥
तिलकरघुनाथ देहौं कालिह प्रातहि पुष्यलागे।
करौश्रृंगारसबभूषण सजो निजगातप्यारी ॥३२॥
महामंगलभयो दिनआज सुखदायकबिलासी।
चहौसो लेहुअबबीतेकुशलसे रातप्यारी ॥३३॥

॥ दोहा ॥

पति शासनते मंदमति, बर मांग्यो दुखसार।
भरत राजपद रामबन, फिरैंबर्षदशचार ॥३४॥
सुनि रानी के वचन नृप, रोम रोम अकुलाय।
पवन वेग कदली यथा थिरा परो थहराय ॥३५॥

॥ राग कलँगड़ा तर्जे गज़ल ॥

जो लिखा तक़दीरका तदबीर से टलता नहीं।
साँपके आगेदिआहरगिज़कभीजलतानहीं ३६॥
ऐशकी उम्मैद में हररोज़ तकलीफैं सहीं।
उमर भरमकसूममाथीएकदमचलतानहीं ॥३७॥
रामके अभिषेक को अवधेश सब रचना रची।
विघ्नकृत रानीभई मन नेक कोमलतानहीं ३८॥
भरतनृप रघुबीर कानन यह खबर पुरजन सुनी।
कौनसा ऐसा बशर हाथोंको जो मलता नहीं ३९॥
बहुप्रकार नरेश विनती केकई मानी नहीं।
दूध से सींचै मगर सूखा शज़र फलता नहीं ४०॥

॥ दोहा ॥

राम विपिन सुनि मैथिली लग्यो बज़्रसम बैन।
अतिअधीरपतिपादगहिकहतनीरभरिनैन ॥४१॥

॥ छन्द आल्हा ॥

हे सुखधाम दीन दुखमोचन तुम बिन शून्य मोहिंसब धाम ।
तेहिते चलिहौं साथ तुम्हारे तुम्हेरबिनाधाम केहिकाम ॥४२॥
अति समुझायो रघुनयक ने सियके मनहिं न एकौ बात ॥
नाथ साथ जो नहिं लै जैहै तो मैं करौं आपनो घात ॥४३॥
कहँलग बरणौं दुखको अवसर मैं संक्षेप कह्यौं याहि ठाम ।
रामचन्द्र बनबास सिधारे ब्याकुल सकल नगर नरबाम ४४ ॥
सीता माता लषणलाल जी सोऊ चले राम के साथ ।
संग सुमंत चले पहुंचावन सुमिरत राम राम रघुनाथ ॥४५ ॥
तमसातीर प्रथमद्दिन पहुँचे पर दिन शृंगबेर पुरराम ।
सुरसरि ढिग उतरे रघुनायक हर्षित चित्त कीन परनाम ४६ ॥
पुनि निषाद भेंटे रघुनन्दन दीन्ही भक्ति भाव उरलाय ।
सीतालषण समेत राम पुनि पहुँचे प्रागराज में आय ॥४७।
तहँ प्रभु भरद्वाज पहँ आये मुनि कहँ कीन्हयो दंड प्रणाम ।
ब्रह्मानन्दराशि जनुपाई मुनि मन अति अनन्द सब ठाम४८॥
राम कीन्ह बिश्राम तहां निशि प्रातःकाल प्रयाग नहाय ।
पुनि सप्रेम गवने रघुनंदन पहुँचे चित्रकूटमें जाय ॥ ४६॥
तहँपर दर्शनीय गिरि कानन पावन अतिविचित्र शुभ ठाम ।
सुरसरिधार नाम मन्दाकिनि दर्शन किये देतिसुभधाम ॥५०॥
सुर सब कोलकिरात वेष धरि आये कुटी बनावन हेत ।
अतिलघु एक विशाल एक तहँ विरच्योपर्णकुटि प्रभुहेत॥५१॥

॥ दोहा ॥

राम सिया सौमित्रयुत, कीन्ह धराधरबास ।

उतसुमंतलौटयौअवध, दुखितमहीपतिपास ५२ ॥
रामचरित्र सुमंत सब, कहिसि सदुख धरि धीर ।
सुनिमहीप शिर धुनि कही, हा सीता रघुबीर ५३ ॥

॥ रागसोहनी ॥

हा तनय रघुबंशभूषण त्यागि मोहिं कितमोंगये ।
किसतरहभूलैंतुम्हारे चरितदिनदिनमोंनये ५४ ॥
सहज शील स्वभाव कोमल ज्ञानगुणगणमेंभरे ।
धर्म शुचिआचार अंगजबिश्वमें सुखदा भये ५५ ॥
कोश चित्रबिचित्रमंदिर बाजिरथ शिविका करी ।
सर्ब मोह बिमुंचिके मम बैन धरि शिरपै लये ५६ ॥
अंधशाप चरित्र भूपति बोलि कौशल्याहि कह्यो ।
सो समय आयो हमैं अब बीज जो आगे बयो ५७ ॥
रामनामस्वरूप पुनिपुनि सुमिरिनृप त्याग्योतनू ।
सुखबिलाससुकीर्त जीवतअन्तदिवबासालये ५८ ॥
बिकलताप बिलाप रानिन छूटि शिर केशावली ।
खेददेखि बशिष्ठआये ज्ञान धीरजको दिये ५९ ॥
बहुरि भेजे चारि चर केकैनगर ततकाल हैं ।
भरत रिपुसूदन अवधपुर आयदुख देखेनये ६० ॥

॥ दोहा ॥

भूप मरण रघुनाथ बन, मातु बचन सुनि कान ।

बिकल हृदय बोले भरत, सुनहु मातु अज्ञान ६१॥

॥ छन्द आल्हा ॥

बोले भरतलाल माता ढिग सुनिले जननि महामतिहीन ।
बंश नाशिबे को लागी है जो रघुनाथ पठै बनदीन ॥ ६२ ॥
बुद्धि तुम्हारी पर पत्थर परि तेरे जीबे को धिरकार ।
पतिको मारि रांड़ ह्वै बैठी क्या अब अधिककहौं यहिबार६३ ॥
बर मांगत मन भई न शंका जरी न जीभ तोरि मतिहीन ।
मरणकालबिधिमतिहरिलीन्हीं जोतुमवचनमानिपितुलीन६४॥
टरि जा माता मेरे आगे ते सुनतै गिरी केकई भूमि ।
गवने दोनों पुनि बशिष्ठ ढिग लीन्हों उर लगाय मुखचूमि६५॥
बिबिध प्रकार प्रबोधि भरतको पितु गतिहेत आज्ञा दीन ।
आयसु पाय मानि मुनिबाणी पितुको दाह बेदबिधि कीन ६६॥
पुनि अभिषेक हेत भारतसे गुरु ने भाष्यो बिबिध प्रकार ।
मन नहिं मानी भरतलालके रघुबरबिरह सोचनहिं पार ६७ ॥
भरतलाल गुरुदेव संग लै अरु पुनि सेना लई सजाय ।
करी तयारी राम मिलनहित बनको चले भरत मनलाय ॥६८॥

॥ दोहा ॥

चित्रकूट आये सबै, गुरु बशिष्ठ दलसाथ ।
प्रथमधायसानुजभरत, चरणगहेरघुनाथ ॥६९॥
चरणपरत दोउबन्धु लखि, रामलियो उरलाय ।
भरतनयनजलधरभये, बिनयकरतशिरनाय७०॥

॥ रागसिंधुतजंगज़ल ॥

दीनपै निशिदिन रघुबीर कृपा करना चाहिये।
शीश मेरे पै प्रभू कर कंज धरना चाहिये॥७१॥
नाथ मैं लाजन मरूं मनकी व्यथा कैसे कहूँ।
शोकपारावारसेकेहिभांति तरनाचाहिये॥७२॥
बिबिध दुख बनमें दयानिधि सबसहे मेरेलिये।
गातमृदुरघुनाथक्याअटवीबिचरनाचाहिये ७३॥
कर्म तो कोई करै जग भोग करता औ कोई।
गतिबिरंचिकरालसे हरवक्तडरनाचाहिये॥७४॥
दीजिये मुझको बिपिन हेनाथ राम दयानिधे।
आपको जाकरअवधमें राजकरनाचाहिये॥७५

॥ दोहा ॥

परम मनोहर अमृतसम, सुनत भरतके बैन।
अतिलजाय संकोचमन, बोले करुणाऐन॥७६॥

॥ छंद आल्हा ॥

अति सप्रेम बोले रघुनंदन तुम सुनि लेउ भरत मनलाय।
मातु केकईने बर मांग्यो सो वर दीन्हा अति सकुचाय॥७७॥
हमको दियो राज बन बनको तुम्हरे हेत दीन युवराज।
सोपितु वचन शीशधारणकरि पालनकरौ छोंड़िसबकाज७८॥
बहु प्रकार समुझाय भरतको पुनि निज पाद पादुका दीन।

लैगे भरतअवध विषादयुत हिय में राम चरण धरि लीन ७६॥

॥ दोहा ॥

करि प्रणाम सियरामपद, चले भरतसब साथ ।
आयअवधतप अतिकरैं,मिलनहेतरघुनाथ॥८०॥

अयोध्याकाण्डसमाप्तः ॥

॥ अथ आरण्यकाण्डप्रारम्भः ॥

॥ दोहा ॥

अवधकाण्ड सबगायपुनि, अबबरणतआरन्य ।
नारायणरघुबीर यश, कहतसुनततेधन्य ॥ १ ॥

॥ सुमिरण ॥

॥ छन्द आल्हा ॥

नंदयशोमतिको सुमिरौं मैं सुमिरौं कृष्णचन्द्र भगवान ।
पुनि मैं सुमिरौं सकल गोपिकाजिनकेमध्यकीनहरिगान ॥२॥
बजी बांसुरी कृष्णचन्द्र की श्रीवृंदाबन के बन माहिं ।
जीव चराचर मोहित होइगये पूरित भयो शब्द ब्रजमाहिं॥३॥
बंशीकी ध्वनि सुनत गोपिका छांड़े सकल वृद्ध अरु बाल ।
सुधि नहिं रही गेह अरु तनकी मनमें बसे आय गोपाल ४ ॥
उलटे भूषण बस्त्र धारिके कोइ आनि मिलीं पति त्यागि ।
कोइ पय प्यावत तजे बालका कहँलगकहौं प्रीति असलागि ५॥

नंदलालहित सकल गोपिका बनमें धाय पहूँचीं जाय।
देखि सकल ब्रज लोग लुगाई हँसिके कह्यो कृष्णब्रजराय ६॥
लोकलाज कलकानि त्यागिके आईं कौन हेत बनमाहिं।
धर्म पतिब्रत को नाहीं है तेहिते लौटि जाउ घरमाहिं॥ ७॥
ह्वै अनमनी गोप सुकुमारीं बोलीं सबै सुनो ब्रजनाथ।
प्रथम बुलायो बंशीध्वनिसों अब अठिलात हमारे साथ॥ ८॥
कहँलगि बरणौं रस बिलासको कीन्हों रास कृष्ण भगवान।
जितनी ब्रजकी गोप कुमारी उतनेइ रूप धरे भगवान॥ ९॥
एक एकके मध्य विराजत शोभा कछू कही नहिं जाय।
भई अभिमान युक्त गोपीगण हमरे बश्यभये ब्रजराय॥ १०॥
घट घट बासी अन्तर्यामी मन को भेद जानि गोपाल।
संग राधिका जी को लैके अन्तर्धान भये ततकाल॥ ११॥
सहसा कृष्णचन्द्र नहिं देखे ब्याकुल भई सकल ब्रजनारि।
नाथ नाथ करि करि सब टेरीं ढूंढ़त चलीं आप मन मारि १२॥

॥ कवित्त घनाक्षरी ॥

हरे हरे कदम्बकी हरी हरी छड़ी लिये हरी हरी पुकारतीं हरी हरी लतान में। जहां प्रवीण श्यामजू सम्हारि साजि बांसुरी बजी बसंत रागमें परी सुतान कान में॥ रही न शुद्धि देह की रही न बुद्धि गेहकी छकीं छबीलि नेहकी फिरैं महागुमान में। सो बस्त्र ना सम्हारतीं सुनयन नीर ढारतीं हरी हरी पुकारतीं हरी हरी लतान में॥ १३॥

॥ छन्द आल्हा ॥

मान बढ़ायो पुनि राधाने तुरतै त्यागि दीन नँदलाल।

बिकल भई तनकी सुधि नाहीं सुमिरत बार बार गोपाल १३॥
ढूँढ़त ढूँढ़तही ब्रजबाला आईं सकल राधिका पास ।
पुनि हिलिमिलि सब प्रेमभक्तिसेलीला करैंदर्शकीआस १५ ॥

सवैया ॥

व्याकुल ह्वैहरि आवन की बन बैठि बिलोकति मारगप्यारी ।
फैलि रही तेहि औसर में अति सुंदरि की मुखचंद्र उजारी ॥
हाय कहां घनश्याम गये यह शोच करै वृषभानुदुलारी ।
बेणुबजावत आय गये तबहीं मनमोहन कुंजबिहारी ॥१६ ॥

॥ छन्द आल्हा ॥

दीन दयालु प्रणत हितकारी चाहत भक्ति भाव महराज ।
कोटि काम शोभा गुणआगर प्रगटे आयमध्यब्रजराज ॥ १७॥
छूटि सुमिरणी गइ अब ह्यांते आगे कहौं कांड आरन्य ।
नारायण चरित्र रघुबरके चित दै पढ़ैं सुनैं ते धन्य ॥ १८ ॥
राजत चित्रकूट रघुनंदन सीता सहित लोक शिरताज ।
लक्ष्मण सेवा करत दोऊकी दोनौं हाथ बांधि सबकाज ॥१९॥
नाम जयंत धारि बपु बायस देखन हेत रामबल थाह ।
सीता चरणचोंच हति भाग्यो मारयो बाण ताहि नरनाह २०॥
रुधिर धार निसरी तेहि मुख से आयो शरण रामढिग काग ।
शरणागत कृपालु रघुनंदन दीन्हो एक नयन करित्याग।२१॥
पुरनर भीर देखि रघुनायक त्याग्यो चित्रकूट शुभ ठाम ।
सीता लषणसहित गवने प्रभु पहुँचे अत्रि मुनीके धाम ॥२२ ।
अत्रि भेंटि देखत बनशोभा आगे चले राम रघुराय ।

भेंटि अगस्त्य चले रघुनन्दन पहुँचे पंचवटी में जाय ॥ २३ ॥
तहँपर एक दशानन भगिनी निश्चरि सूर्पणखा जेहि नाम।
रामरूप लखि मोहित ह्वैके बोली देहु मोहिं रति काम ॥२४॥
आयसु राम शीश धरिलक्ष्मण निश्चरि नाककान बिनुकीन।
चली कोप करि खरदूषण पै तिनसे समाचार कहिदीन२५ ॥
सुनि के बाणी निज भगिनी की बोलो हृदय महाअकुलात।
साजौ सेना मेरेदलमें तपसिन करौं आज मैं घात ॥२६॥
चौदा सहस सुभट संग लीन्हे जिन में बड़े बड़े बलवान।
धायेनिश्चर निकर भयंकरमानहु कज्जल शैलसमान ॥ २७।
बहु बिस्तार जानि नहिं बरणौं अति संक्षेप कहौं तेहि ऐन।
युद्ध भयो अति खरदूषण से मारी राम राक्षसी सैन॥ २८ ॥
तहँ ते सुर्पणखा पुनि धाई पहुँची लंकपुरी में जाय।
रावण सभा जायरोदनकरि बरणत सकल हालबिलखाय॥२९॥
हे दशकंध अंध मति तोरी तोरे रहत मोर अस हाल।
राम लषण बन में नित विचरत मारे खरदूषणततकाल॥ ३०॥
सुनिकै बातैं सबनिश्चरिकी रावण मनहिं अनंद महान।
मोंसम बली अहै खरदूषण मारै कौन बिना भगवान ॥ ३१॥
जगमें भूमिभार भंजन हित जो जगदीश लीन्ह अवतार।
तौ मैं जाय बैर हठि करिहौं तरिहौं जगत सिंधुमँझधार ॥३२॥
चला अकेल यान चढ़ि भोरहिं पहुँचाजाय जहां मारीच।
सीताहरण केरि युक्ती पुनि भाषत भयो ताहिठिगनीच ॥३३॥
कहि मारीच सुनहुँ दशकंधर हैं प्रभु राम चराचर ईश।
तिनसों बैर भाव नहिं कीजे तुमरे काज होयँ सब खीस॥३४॥
बोला बचन कोपि दशकन्धर सुनिले महानीच मारिच।

संमति मेरी जो नहिं मनिहै काटौं शीश तोर यहि बीच ३५॥
तब मारीच कनक मृग ह्वैकै आयो जहां सिया रघुबीर।
देखि मनोहर रूप हिरणको बोली सीय जाव प्रभु तीर ३६॥
त्वचा मनोहर है यहि मृगकी सो प्रभु लाय देउ ततकाल।
लै धनु बाण कोपि रघुनायक मृगबधहेत चले जनु काल ३७॥
प्रगटत छिपत जात मृग बनमें प्रभुने हने तीक्ष्ण बहुबाण।
मरणकाल बोल्यो हा लक्ष्मण सुरपुर गयो सुमिरि भगवान३८॥
लक्ष्मण नाम सुनत बैदेही मनमें गई सनाका खाय।
जाहु बेगि लक्ष्मण भ्राताढिग प्रभुकी खबरि सुनावौ आय३९॥
गवने लखन मानि सिय आयसु अवसर पाय आय खलराज।
भेष यती को धारण करिकै सीताहरण कीन निजकाज ४०॥
रथ बैठारि सीय दशकन्धर हर्षित चल्यो लंककी ओर।
अति बिलाप बिलखत रथअंतर सीता करत आर्त रव घोर४१॥
गृध्रराज सुनि आरत बाणी रघुकुलतिलक नारि पहिंचानि।
धावा क्रोधवंत खगराई कीन्हो महायुद्ध मन मानि॥ ४२॥
पुनि मन मानि ग्लानि दशकंधर काढ़िसि परम कराल कृपान।
काटेसि पंख परा धरणी खग सुमिरत रामराम भगवान॥ ४३॥
पुनि लै चल्यो मातु सीताको राखिसि बन अशोक में जाय।
सीता महात्रास वश बैठी उरमें चरण रामके ध्याय॥ ४४॥

॥ दोहा ॥

माघबिमलतिथिचतुर्दशि, सियाहीन थलदेखि।
रामलषणखोजतफिरत,बनबनआधिविशेखि ४५

राग धनाश्री ॥

हे सिया अरबिंदनयनी कौन से बनमें गई।
क्याबनाअपराधजोमोहिंत्यागिनिठुराई लई ४६॥
क्या कहौं अपनी दशा अबकल्पसमबीतै घरी।
तोहिंबिन राकेश बदनी आधियेप्रगटीनई ॥४७॥
हंस मानि पीयूष बैनी धीर मन कैसे धरै।
मणि बिना जैसे फणी तैसेबिथामोकोभई ॥४८॥
राज धन आराम मंदिरछोड़िसबआयेबिपिन।
बाम ताहू पै गई बिपदान मों विपदा दई ४९॥
बेगिमिलमिथिलेशनन्दिनिजगतजीवनजानकी।
आयधायहुलासकरु दरशायमुखशोभामई ५०॥

॥ दोहा ॥

खोजत बन लखि गीधपति, कीन्हदाहसन्मान।
पुनिकवंधबधिबंधुदोउ, आगेकियोपयान ॥५१॥

॥ रागसिंधु ॥

ए हो सुकंठबैनी मिथिलेश की किशोरी।
आरण्य कौनभूली जीवनअधार मोरी ॥ ५२ ॥
ममहेत गेह त्यागो वश नेह संग लागी।
अतिप्रीतिरीति कीन्ही जिमिचंद्रसेचकोरी ५३॥

मातंग भालु दीपी धौं घात तोहिं कीन्ही ।
धौंयातुधानबनमें तोहिंआय कीन्हचोरी ५४ ॥
हे चंपबिंब दाड़िम सहकार बिल्व रंभा ।
कितमों सियाबतावौ बिनती करौं निहोरी॥५५॥

॥ दोहा ॥

रामलषण आगम सुनि, शवरीअति हर्षाय ।
आगेजायप्रणाम करि, अतिहर्षीगृहलाय ॥५६॥
शवरी दर्शन दै प्रभू, पंपा शर तट आय ।
बनउपबनकाशारगण,अनुजदिखावतजायँ ५७॥

इति आरण्यकाण्डसमाप्तः ॥

॥ अथ किष्किन्धाकाण्डप्रारम्भः ॥

॥ दोहा ॥

शुभदकाण्ड आरण्यकहि, नारायणचितलाय ।
किष्किन्धावर्णन करौं, आल्हाछंदबनाय ॥ १ ॥

सुमिरण–छंदआल्हा ॥

सुमिरि भवानी श्रीजगरानी दुर्गा महाकालिका माय ।
दानव मारे मधुकैटभसे अरु महिषासुर दीन गिराय ॥ २ ॥

चण्ड मुण्ड को भक्षण कीन्हा कीन्हा रक्तबीज को नाश।
शुंभनिशुंभ बिदारे माता निशि दिन करौं तुम्हारीआश ॥ ३ ॥
हाथ जोरि कै माता मांगौ राखौ अंब नाम की लाज।
सदासे दानी नाम तुम्हारो प्रति दिन करौ संतके काज ॥ ४॥
रूप अनेक धरे जगदम्बे अरु भक्तनकी करी सहाय।
तैसे दृष्टि दया की करिकै मेरे कण्ठ बिराजौ आय ॥ ५ ॥

॥ सवैया ॥

शुम्भनिशुंभ बिनाशिनि बिंध्य निवासिनि श्रीगिरिराज कुमारी।
देबि बिपत्ति परी जबहीं तबहीं तुम ताहि तहां निर्वारी ॥
त्यों लखिके हमरो दुख संकट बेगि हरौ गिरिनाथ पियारी।
केवल है अवलम्ब तुही जगदंब बिलम्ब कहा ममबारी ॥ ६॥

॥ छन्द आल्हा ॥

पुनि मैं सुमिरौं श्री काशीजी जहँ है विश्वनाथ दरबार।
उमानाथ शंकर निशि बासर नरकहँ मुक्ति देत सुखसार ॥ ७॥
अन्नपूर्णा के दर्शन जहँ भैरवनाथ केर जहँ धाम।
लोल तरंगा तटगंगा का सुमिरे करत सिद्धि सब काम ॥ ८॥
लसत मंदिरन की शोभा जहँ लोभा रहत चित्त लखि हाट।
बाट मनोहर सो बिलसत वर मणिकार्णिका आदि जहँघाट ९॥
करैं भवानी नित रक्षा जहँ निशिदिन फिरैं बरद असवार।
पाप दुरावत जनतनमन के दर्शन किये एकही बार ॥१०॥
छूटि सुमिरनी गइ अब ह्यांते आगे कहौं राम को हाल।
नारायण मुकुन्दकी बाणी चितदै सुनो वृद्ध अरुबाल ॥ ११॥

आगे चले राम अरु लक्ष्मण पर्वत ऋष्यमूक नियरान।
तहँ सुग्रीव रहत मंत्रिनयुत आवत देखि अतुल बलवान१२॥
अति भय मानि कह्यो हनुमतसन यह दोउ पुरुष रूपबलधाम।
धरि बटु रूप जाहु तिनके ढिग पूँछहु जाय कौन बनकाम१३॥
बिप्ररूप धरि गये हनू तहँ पूँछयो माथ नाय धरि धीर।
को तुम श्यामल गौर देह प्रभु क्षत्रीरूप फिरहु बनबीर॥ १४॥
कठिन भूमि कोमल पद स्वामिन बिचरहु कौनहेतु महराज।
हो तुम तीनि देवमहँ कोऊ कै तुम लोकनाथ शिरताज॥१५॥
सुनि अति मृदुल बचन हनुमत के बोले बिमल बैनरघुनाथ।
पिता हमारे श्रीदशरथ हैं जो श्रीअवधपुरी नरनाथ॥ १६॥
लिखा बिधाता का को मेटै हैं दोउ काल कर्म बलवान।
सोपितुबचन मानि हम दोनौं आये बिपिन जन्म कुलभान१७॥
नाम राम लक्ष्मण दोउ भाई अति सुकुमारि नारि हमसाथ।
जनककुमारी जौन जानकी कहँ लग कहौं तासु गुणगाथ१८॥
सो प्रियनारि हरी बन निश्चर खोजत फिरहिं बिप्र हम ताहि।
प्रभु पहिँचानि परेउगहि पदतब हनुमतप्रेम बर्णि नहिंजाहि१९
हाथ जोरिकै हनुमत बोले सुनिये कृपानाथ भगवान।
कपि सुग्रीव एक गिरिराजत प्रभु तव दास भ्रातभयमान २०॥
तेहिसन नाथ मिताई कीजै सीताखोज लगाइहि सोइ।
यह कहि पीठि चढ़ाइ दोउजन पहुँचे ढिग सुकंठके जोइ२१॥

॥ दोहा ॥

आवत लखि रघुबंशमणि, परो चरण सुग्रीव।
दीनजानिकीन्ह्योसखा, करुणाकरिसुखसीव२२

॥ राग भैरवी ॥

अति कीर्त्ति वेद गावैं रघुबीर नीतकी।
सुग्रीव शोक हरवे प्रभुजाय प्रीतकी ॥ २३ ॥
शिरनाय जोरि अंजुलि कपि खेद निज कह्यो।
गिरिबासहेत गाथा भ्राता अनीतकी ॥ २४ ॥
बाली निपातिबे को प्रण कीन्ह श्रीपते।
अतिशय कथा कलेशित सुनि मीतभीतकी २५
संधान चाप शायक तरु ताल बध किये।
हर्ष्यो सुकंठ प्रभुकी बाणी प्रतीतकी ॥ २६ ॥

दोहा ॥

रघुपति प्रेरित भानुसुत, भिरो बालिते जाय।
द्वंदयुद्ध देखत खरे, बृक्षओट दोउ भाय ॥ २७ ॥

॥ राग सिन्धु---तर्ज ग़ज़ल ॥

संग्राम राम देखैं तरु ओट में खरे।
मंडल जटा बनाये शर चापको धरे ॥ २८ ॥
सुग्रीव बीर बाली दोऊ गदा गहे।
महि द्वंदयुद्ध छल बल बहु भांतिसे करे २९ ॥
लीन्हों प्रभू शरासन जान्यो बिकल सखा।
शर एक मारि बालीके प्राणको हरे ॥ ३० ॥
युग पाणिजोरि कीन्ही सुग्रीव बहु बिनय।

महराजकी कृपासे दुखसिंधुते तरे ॥ ३१ ॥
युवराज कीन्ह अंगद कपिपति सुकंठको ।
प्रभु रामचन्द्र लक्ष्मण आनन्दमेंभरे ॥३२ ॥

दोहा ॥

वर्षागतलखिसीयपति, बिनसियअधिकअधीर ।
कहतअनुजसनखेदअतिसखानआयोतीर॥३३॥

राग भैरवी ॥

सखा सुग्रीवने खूबी निबाही प्रीत हमसे ।
खबरि सीता मँगावनकीकरीपरतीतहमसे॥३४॥
विगत वर्षा भई अब शर्द ऋतुआईसियाबिन ।
नआयापासभीकैसीकरीकपिनीतिहमसे ॥३५॥
मिला उनको सबी पुरराज औ धन धामदारा ।
परेअबऐश में बातैं गईं सबबीत हमसे ॥ ३६ ॥
प्रभू दुख देखि दृग नाराच धनुसौमित्र लीन्हो ।
गयेहरि तीर बोले कोपतू निर्भीतहमसे ॥ ३७ ॥
कहे कपिराज कर जोरे विनय सुनिये हमारी ।
करौकरुणाप्रभूनिजजानिअनुचररीतहमसे ३८॥

दोहा ॥

रीछकीश बहु बाहिनी, लषण लई निजसाथ ।
आयनायशिररामपद,विनयकरतकपिनाथ ३९॥

॥ छंद आल्हा ॥

पुनि सुग्रीव आय रघुबर ढिग विनती करन लाग शिरनाय।
अतिशयप्रबलनाथ तवमाया कहँलग बरणिसकैकविराय ४०॥
तब माया वश सुर मुनि नाचैं नहिं कोउ तुम समान रघुनाथ।
मैंकपि अतिकामी पशु पामर तातेक्षमहु चूकमुदसाथ।४१॥
तब सप्रेम बोले रघुनंदन तुम म्वाहिं प्रिय समान लघुभाय।
सोईयत्नकरहुकपिनायकजेहि विधिमिलहिजानकीआय४२॥
सुनि सुग्रीव बुलाय सेनसब नाना वर्ण भालु कपि यूथ।
अंगद हनुमदादि योधागण जहँतहँ धायेकीश बरूथ ॥ ४३॥
करिके अवधि मास यक केरी हर्षित चले नाय प्रभु माथ।
खोजतफिरत नगरगिरिसरितापहुँचे सिंधु तीरमुदसाथ॥ ४४॥
तहँ फिरि गुफा एक अति सुन्दर जहँ रह गृध्रराज संपात।
सुधि नहिं मिली मातु सीताकी बानर सबै हृदय अकुलात ४५॥
सकल बिचार करहिं तेहि अवसर बीती अवधिकाज कछुनाय।
बिन सुधि लिये जाब हम कैसे मारे सकल यूथ कपिराय४६॥
जामवंत तब बोलन लागे तुम सब सुनहु भालु कपि सैन।
तात रामकहँ नरनहिं जानहु तिनको भजनकरौ दिनरैन४७॥
आशा तुमरी पूरण ह्वै है सो मन माहिं करौ बिश्वास।
पूरण ब्रह्म राम अविनाशी सो प्रभु अवशि मेटिहैं त्रास ४८ ॥
यहि विधि सकल परस्पर बाणी पर्वत मध्य सुनै संपात।
सुनिकै निकस्यो गिरि कन्दर से बोल्यो सबन देखि हर्षात ४९॥
आजु अहार मोहिं विधि दीन्ह्यो करिहौं सबन केर आहार।
सुनितेहि बचन सकल कपिडरपे अंगद बोलि उठे तेहिबार५०॥

धन्य जटायु सरिस कोउ नाहीं जेहिं प्रभु काजहेत तनु त्यागि।
रघुबर चरण धारि उर अन्तर सुरपुर गयो परमबड़ भागि ५१॥
सुनि खग हर्ष शोक युत बाणी आवा कपिन निकट संपात।
करिकै अभय भालु कपि सेना बोल्यो हृदय हर्ष सकुचात५२॥
बात जटायू गृध्रराजकी सो सब मोहिं कहौ समुझाय।
सुनि सब कपिन ताहि समुझाई सुनतै गिरयो मूर्छा खाय५३॥
पुनि उठिजाय तिलांजलिदीन्ही बोल्यो चितै कपिनकी ओर।
गिरि त्रिकूट ऊपर जो लंका रावण केर राज्य जहँ घोर ५४॥
तहँपर एक अशोक बाटिका जहँ सिय मात राम पिय जौन।
जावै जौन लांघि यह सागर लावै सियाकेर सुधितौन ५५॥
वृद्ध अवस्थावश बल थाकेउ करतेउँ कछुक सहाय तुम्हार।
अंगद कहा जाउं मैं पारा संशय मोहिं लौटती बार ५६॥
जामवंत बोले हनुमत सन चुप क्या साधिरह्यो बलवान।
हौतुमपवनतनयसबलायक नहिंकोउ तुमसमान हनुमान५७॥
कारज कौन कठिन जगमाहीं जो नहिं तात होहि तुमपाहिं।
तव अवतार राम कारजलगि सुनि हनुमान हर्ष मनमाहिं५८॥
भयो पर्वताकार रूप तब सुनिके रामचन्द्रकर काज।
कनकवरण तनुतेज विराजै मानहुंअपर गिरिन्ह शिरताज५९॥
सिंहनाद करि बोलन लाग्यो लीलहिं लाँघौं सिंधुअपार।
आनौं इहां त्रिकूट भंजिकर सेनासहित रावणहिं मारि॥ ६०॥
जामवंत पूँछौं मैं तोहीं दीजै उचित सिखावन मोहिं।
बोले जामवंत सुनु हनुमत सीतहिंदेखिकहौसुधिसोहिं॥६१॥
काज तुमारो इतनोई है सीताकेर आओ सुधिलाय।
पुनि प्रभुसंग सेन कपि लैकेनिश्चरसकलसँहरिहैंजाय॥६२॥

सीता लैहैं रामचन्द्रजी होवै विदित कीर्ति संसार।
सकल सृष्टिके नर भवसागर प्रभु यश गाय होइहैं पार ॥६३॥
औषध रूप कीर्त्ति रघुबर की प्रतिदिन पढ़ैं सुनैं नर नारि।
जगमें तिनके सकल मनोरथ तुरतै सिद्धि करैं त्रिपुरारि ६४ ॥

इतिकिष्किन्धाकाण्डसमाप्तः ॥

॥ अथसुन्दरकाण्डप्रारम्भः ॥

॥ दोहा ॥

बरणौंसुन्दरकाण्ड अब, आल्हा छन्द बनाय।
नारायणरघुनाथके, चरणकमल शिरनाय ॥१॥

॥ सुमिरण ॥

॥ छन्द आल्हा ॥

सुमिरि भवानी श्रीजगरानी सुमिरण किये देति निजधाम।
बिन्ध्यबासिनी को सुमिरौं मैं उर पदपद्म धारि अभिराम २ ॥
कान्यकुब्ज के मंडलमाहीं राजत नैमिषार बनराज।
शौनकादि ऋषि जहँ श्रोतागण बांचतकथा सूत शिरताज३॥
गिरो विष्णु को चक्र मनोवै पृथिवी मध्य जानि अस्थान।
जितने तीरथ हैं जगमाहीं तिन सब तहां कीन अस्थान ॥४॥
अपनो अपनो नाम उचारत डारो नीर चक्र के माहिं।
तबते चक्रतीर्थ सब गावत राजत नैमिषार के माहिं ॥ ५ ॥
एक प्रयाग राज नहिं आये तासों पंचप्राग विख्यात।
देवि लालता जहां बिराजैं तीरै बही गोमती मात ॥ ६ ॥

बुड़की लेवै चक्रतीर्थ में ताके सकल पाप नशि जाय ।
दक्षिण चौकी है भैरवकी ऊपर धर्मध्वजा फहराय ॥ ७ ॥
नैमिषार ते उत्तर मिश्रिष पश्चिम योजन सात प्रमान ।
नाथ गोकरण शिव प्रसिद्ध जग मन अनुकूल देत बरदान८॥
पुनि मैं सुमिरौं हनूमान पद सागर रूप बुद्धि बलधाम ।
अंजनि पुत्र संतसुखदायक लायक सुभट शूर संग्राम ॥ ९ ॥
रामदुलारे सीताप्यारे लक्ष्मण प्राणदान गुणखान ।
आशा मेरी पूरण करियो हे बलवंत बीर हनुमान १० ॥
तुमरे अखारेमें गावत हौं बेड़ा खेइ लगैऔ पार ।
जो जो अक्षर हनुमत भूलौं सो सब लिखिऔ जीभ हमार ११॥
छोंड़ि सुमिरनी पुनि मैं बरणौं सुंदरकाण्ड केर सब हाल ।
नारायणमुकुन्दकी बाणी चितदै सुनहु वृद्ध अरु बाल १२ ॥
जामवंत के बचन सुधासम सुनि हनुमान चित्त हर्षान ।
सबकहँ माथ नाय पुनि गवनो हर्षित हृदय ध्याय भगवान१३ ॥
सिंधुतीर यक सुन्दर भूधर तापर कूदि चढ़यो करि खेल ।
रघुबरचरण धारि उरअन्तर तरकेउ पवनतनय धरि पेल १४ ॥
रघुपतिकेर बाण जिमि धावै ताही भांति चला हनुमान ।
पुनि मैनाक प्रबोधि बायुसुत आगे चल्यो राम धरि ध्यान १५॥
सुरसहिं पठयो सब देवन मिलि जानन हेतु हनू बलज्ञान ।
बोली सुरसा हनूमान लखि भक्षण दीन आजु भगवान ॥१६॥
बोले हनुमत अहिमाता से माता सुनौ बात मनलाय ।
सीतहिं देखि लौटि मैं आवौं पुनि तव बदन पैठिहौं आय१७॥
बदन पसारो तेहि योजनभरि कपि तनु कीन्ह द्विगुण विस्तार ।
सोरह योजन मुख तेहिं ठयऊ बत्तिस भयउ पवनसुकुमार १८ ॥

पुनि तेहि सौ योजन मुख कीन्हों अतिलघु रूपधारि हनुमान।
बदन पैठि आयो पुनि बाहर मांगी बिदा जोरि युगपान॥१९॥
जेहि लगि पठवा मोहिं देवनने जाना सकल बुद्धि बल तोर।
रामकाज करिहौतुमलायक मानहुँ बचन सत्य यहमोर॥२०॥
चलिभइ सुरसा आशिष देकै आगे हर्षि चले हनुमान।
नामसिंहिका हतिसागरमहँ बारिधि पारगयो मतिमान॥२१॥
लंका जाय लखी बनशोभा गुंजत चंचरीक मधु लोभ।
नानातरुफल फूलयुक्तलखि खगमृग वृन्ददेखिमनक्षोभ॥२२॥
शैल विशाल देखि यक आगे तापर कूदि चढ़्यो भयत्यागि।
तहँते देखि लंककीशोभा हनुमत हृदयहर्ष अतिलागि॥२३॥
सर्ब सुवर्ण केरि लंका पुरि सुंदर रत्न जटित जहँ धाम।
नानाभवन विविधरँगरचना मानहुँ इन्द्रकेर सबठाम॥ २४ ॥
चौंसठि बुर्ज चारि नवखण्डी जिन पै बैठि स्वर्ग दिखलाय।
चारिहु ओरहाटअतिसोहै लखिमन मोहि मोहि रहिजाय॥२५॥
कंचन कलश धरे कँगुरनपै रबिकी किरणि प्रकाशी आनि।
दुइदुइ लालजड़े तिनऊपररबिशशिझिपनलगे द्युतिमानि२६॥
को यश वरणि सकै धरणी में मानहु इंद्रलोक दिखलाय।
पवनरूप जहँमन्मथ लहिरै चूमैकलश अप्सरा आय॥ २७ ॥
न्यारे राज भवन शतखंडा न्यारी न्याय निवारण शाल।
सबपै कलशधरे सुबरण के लोरैं माथमाथ में लाल॥२८॥
अथल अगम खाईके निरखत डूबो जात लज्जि पाताल।
खाई क्या गढ़की रखवारी लहिरैं बदनपसारे ब्याल॥ २९ ॥
जो कोई जन तट पै लचि निरखै सूझन लगै स्वर्ग पाताल।
चकितधरणि आकाशनिहारै रसगति समुझिपरैभवजाल॥३०॥

दशद्वारे गढ़के अति सोहैं तिन पै बज्र लगे हैं डाटि।
रक्षा हेतु द्वारबीरन ने धरि दये द्वार शिखर गिरि काटि ॥३१॥
शैल समानविशाल मल्लगण हिलि मिलि लरैं पांतिकीपांति।
वापी कूपतड़ाग बाटिका सोहैं जहां तहां बहु भांति ॥ ३२ ॥
पुर रखवारे जहँ तहँ टहलैं लीन्हें अस्त्र शस्त्र बहु भांति।
यहिविधि लंकपुरीकी शोभावर्णनकरत चित्तसकुचाति ॥३३॥
अगणित नगर केर रखवारे लखि कपि मनमें कीन बिचार।
अति लघुरूपधारि पुनि निशिमें रावणनगरकरौं पैसार ॥३४॥
मशक समान रूप कपि धरिकै लंकाचल्यो सुमिरि भगवान।
नामलंकिनी एकनिश्चरी बोली जाय निकट हनुमान॥३५ ॥
जानसि नाहिं मर्म शठ मोरा जहँ लगि चोर मोर आहार।
सुनि कपि एक मुष्टिका मारी मुखतेहि बहीरक्तकीधार ॥ ३६॥
उठी सँभारि बहुरि सो निश्चरि बोली हाथ जोरि कपिपास।
जान्यो सब प्रताप रघुबरको निश्चर सकल होइहैं नास ॥३७॥
लंका जाय करौ प्रभुकारज सुनि तेहि बचन चले हनुमान।
लसत मंदिरनकी शोभाजहँमानहुँउदयचन्द्रअरुभान ॥ ३८॥
गयो दशाननके मंदिरमें जहँपर अति बिचित्र शुभ धाम।
सोवत तहँ देखा दशकंधर देखि न परी सीय प्रभुवाम ॥३९॥
भवन एक देखा अति सुन्दर देखत अति प्रसन्न हनुमान।
रामनामअंकित गृह सुन्दर बर्णि न जायदेखिमनमान ॥४०॥
मनमहँ तर्क करन कपि लाग्यो असुरनमध्य कौन प्रभुदास।
ताही समय विभीषण जाग्योसुमिरतरामरामसुखरास ॥ ४१ ॥
यहिसन हठ करि करौं मिताई यह हनुमान कीन अनुमान।
विप्ररूप धरिकै पहुँचे तब तेहि ढिग सुमिरि रामभगवान॥४२॥

देखि विप्रवर रूप विभीषण उठि तेहिं तुरत कीन परणाम।
करि प्रणाम पूंछी कुशलाई द्विजवर कहौ आपनो ठाम ॥४३॥
कै तुम हरिदासन महँ कोई मोरे हृदय प्रीति अस लागि।
कीतुमदीनबन्धु अनुरागी आयहुमोहिं करनबड़भागि ॥ ४४॥
तब हनुमन्त विभीषण के प्रति बरणी रामकथा निज नाम।
सुनतकहत दोनोंहर्षितमनपुलकित मग्नसुमिरिगुणग्राम ४५॥
सुनहु पवन सुत रहनि हमारी जैसे दशन माहिं रह जीभ।
अबमोहिं भयो भरोस चित्तमें करिहैंकृपाराम सुखसीव॥४६॥
पुनि सब समाचार सीता के वर्णन किये विभीषण बात।
तबहनुमंत कह्यो सुनुभ्राता देखाचहौं जानकी मात ॥ ४७ ॥
युक्ति विभीषण सकल सुनाई हर्षित चल्यो वेगि हनुमान।
बनअशोक बैठी जहँसीता पहुँच्यो जाय तहांगुणवान ॥ ४८॥
मनमें कीन्ह प्रणाम देखि सिय बैठे बीति गई निशि याम।
कृशतनु शीश जटा इकबेणी हिरदै जपति रामगुणग्राम॥४९॥
कीन्हप्रणाममनहिं मनकपि तब लखिसियदीनचित्तअकुलान।
रह्योलुकाय वृक्षपल्लव महँ मनमें तर्ककरै हनुमान ॥ ५० ॥
ताही समय आय रावण तहँ सीतहिं भय दिखाय तेहि पास।
राखिराक्षसी गयोधामनिज सोसबबहुत दिखावैं त्रास ॥ ५१ ॥
त्रिजटा नाम राक्षसी यक तहँ जोसिय राम चरण अनुरागि।
निश्चर सकल नाश करिबेहितऐहैं रामचंद्र तोहिंलागि ॥ ५२॥

॥ दोहा ॥

त्रिजटा निजमन बोधकरि,सब निश्चरी बुलाय।
स्वप्नसुनावत धीरधरि, राम चरण मनलाय५३॥

॥ छन्द राग विभास ॥

इक स्वप्न मैं भयानक देखो प्रभात है ।
कपि लंकदाहकीन्ही निश्वर निपात है ५४ ॥
सब शीश मुण्ड रावण बीसौ भुजा कटी ।
तनु तेलको लगाये बिकराल गात है ॥ ५५ ॥
गर्दभ चढ़ो दशानन दक्षिण गमन कियो ।
मंदोदरी बिलापै कायाकुलात है ॥ ५६ ॥
राजा भये बिभीषण शिर छत्रहू धरे ।
रघुनाथ नारि पाई सुखमा सुहात है ॥ ५७ ॥
त्रिजटाकुस्वप्न सुनिकै सब निश्चरी डरीं ।
करिकै प्रबोध सीता सेवैं सुभांति हैं ॥ ५८ ॥

॥ छन्दआल्हा ॥

अतिशय बिकल देखि सीताढिग हनुमत दीन मुद्रिका डार ।
चकित चितै ताहि पहिंचानी सीता मन विषाद कुविचार ५९ ॥
विविधप्रकार सोच लखि मारुत बोला बचन शोक भय त्याग ।
रामचन्द्रगुण बर्णन लाग्यो सुनतहि सिया सबै दुख भाग ६० ॥
पुनि हनुमान जाय सीताढिग बोला बचन नायकर माथ ।
रामदूत मैं हौं सुनु माता मानहुँ शपथ सत्य रघुनाथ ६१ ॥
कहँलग बरणौं मैं यहि अवसर सीतापवनपुत्र सम्बाद ।
अति संक्षेप ताहि भाषौं मैं सीतारामचन्द्र दुखबाद ॥ ६२ ॥

॥ दोहा ॥

रामचन्द्र जन जानिकै,जनकसुता धरि धीर ।
सजलनयनपूँछतकुशल,सुखसानुजरघुबीर६३॥

॥ रागभैरवी ॥

कहौ हनुमत कुशल सानुज खरारी ।
कहा अपराध सुनि सीता बिसारी ॥ ६४ ॥
बिपति दारुण बिदारण होय कैसे ।
खबर लीन्हीं नहीं कौशल बिहारी ॥ ६५ ॥
महारणधीर पति रघुबीर जाके ।
निशाचरनाथ वशमें तासु नारी ॥ ६६ ॥
घरी पल कल्प युग सम नित्य बीतै ।
दरश दुर्लभ भये प्रभु रावणारी ॥ ६७ ॥
कहें श्रुति भक्त वत्सल रावणारी ।
सुरतिनहिंलीन्हकिहिऔगुणहमारी ॥६८॥

॥ राग खम्माच ॥

रामकी सुनु गाथ माता जानकी ।
शोकमें तेरे गई थी ज्ञानकी ॥ ६९ ॥
वृक्ष इक इकसे दोऊ पूँछत फिरे ।
आज कहुँ देखी पियारी प्राणकी ॥ ७० ॥

नार सर सरिता अधो जल खोजहीं।
खेद पद पदपै महाभा हानिकी॥ ७१॥
हेम गिरि कानन बढ़ी चिंता प्रभू।
शैलसुग्रीवहिं सखा कर आनकी॥७२॥
कीशपति चहुँ दिशि पठायो कीशदल।
मोहिं इत भेज्यो कृपा भगवानकी॥७३॥
धीर धरु जननी सदल ऐहैं दोऊ।
नाशनिश्चर तमउदयकरभानकी॥७४॥

॥ छन्द आल्हा॥

सीता बोली पुनि हनुमतसे तुम सुनि लेउ तात धरि ध्यान।
तुमहिंसमान राम सेना महँ निश्चर सुभट शूरबलवान॥७५॥
तब हनुमान देह निज प्रगटी तुरतै भयो भूधराकार।
समर भयंकर अति रणधीरातेहिलखिसीयाचित्तसुखसार॥७६॥
सीतामन भरोस तब भयऊ पुनि लघुरूप धारि हनुमान।
हाथ जोरि सीताढिगबोल्योमातासुनौविनयधरिध्यान॥७७॥
अतिशय भूँख लागि मोहिं माता सुन्दरदेखिकंदफलमूल।
सुनहु पुत्र बहु भट रखवारे पैतुम खाहुकंद फलफूल॥७८॥
आज्ञा पाय तुरत पगुधारो पहुँचो कीश बागमें जाय।
खाय २ फल वृक्ष तोरिकै फेंके जहां तहां मनलाय॥ ७९॥
आये तहां बहुत रखवारे मारे तुरत बातकी बात।
भागे कछुक जायपहुँचे सो रावण सभाचित्तअकुलात॥८०॥
पठयो रावण तबअपनो सुत जाको नाम अक्ष सुकुमार।

बहुत सेन लेके सो धावा आयोजहां पवन सुकुमार ॥८१॥
तेहि लखि किलकिलाय अतिगर्ज्यो ह्वैके गिरिसमानहनुमान।
कहँ लग बरणौं युद्धक्यार गतिं मारा अक्षपुत्रबलवान॥८२॥
सुनि लंकेश पुत्रवध तड़प्यो पठवा मेघनाद बलधाम।
तेहि लखि हनुमान उठिधावा मनमेंसुमिरिरामकोनाम॥८३॥
सिंहसमान गर्जि तरु लैके मेघै विरथ कीन हनुमान।
ताकेसंग महाभट निश्चर मारे सकल गर्जि हनुमान॥८४॥
सब भट मारि मेघ सम गर्ज्यो अभिरो मेघनादसन जाय।
दोऊ भिरे मनहुँ गजराजा मुष्टिक मारि चढ़ा तरु जाय॥८५॥
मुर्छा आई तब मेघाको पुनि उठि ब्रह्म पाशु लै हाथ।
हनुमत सोच्यो अपने मन में मानहुँ ब्रह्मफांसधरिमाथ॥८६॥
ब्रह्मफांस तेहि कपि कहँ डारयो बांध्यो तुरत बीर हनुमान।
मेघनाद लैकै हनुमतको हर्षितचल्यो महाअभिमान॥८७॥
कपि बंधन सुनि निश्चर धाये कौतुक करत सभा लै आय।
कहिनजायकछु अतिप्रभुताई रावणसभादीखकपिजाय॥८८॥
कपिहिं बिलोक्यो तबरावणने सुत बध सुरतकीन बिलखाय।
बहुदुर्वाद कह्यो हनुमत को अरुपुनिकहनलागखलराय ८९॥
केहिके बल घालेसि बन उपबन मारे असुर कौन अपराध।
देखौंअतिअशंक शठ तोहीं नहिंखल तोहिंप्राणकीबाध॥९०॥
सुनि के रावण की बाणी तब बोलन लाग बीर हनुमान।
जोप्रभुसकल विश्वकेस्वामीजोप्रभु कृपासिंधुभगवान॥९१॥
जाके बल विरंचि हरि शंकर पालत सृजत हरत सब काल।
जाबलशीशधरे सहसानन यहब्रह्माण्ड जासुभवजाल॥९२॥
खरदूषण विराध अरु बाली जेहिं प्रभु बधे एकही बान।

तासुदूत मैं हौं दशकंधर सुनले महामूढ़ अज्ञान ॥ ९३ ॥
सहस बाहुसन परी लराई जानौं मैं तुम्हारि प्रभुताइ ।
समरबालिसनकरि यशपायो बलिसेसमरकीनतुमजाय ॥९४॥
लागी भूख मोहिं फल खाये कपि स्वभाव तोरे तरु जाय ।
मारयोमोहिं जौनअसुरननें मारेतौन असुर हमआय ॥ ९५ ॥
बहुत विवाद भयो रावण से सो अब कहँ लग करौं बखान ।
पूँछहीन करिके बंदरको भेजो अंग भंग हनुमान ॥ ९६ ॥
रावण वचन मानि सब निश्चर लाये तुरत वस्त्र घृत तेल ।
रहा न नगर वस्त्रघृत रोगनबाढ़ी पूँछ कीन कपि खेल ॥९७॥
देखन कहँ आये पुरवासी मारहिं चरण करहिं बहु हास ।
बाजहिं ढोलदेहिं सबतारी फेरादियो नगर चहुंपास ॥ ९८ ॥
आगि लगाई पूँछमाहिं जब लहरन लगीं पवन उनचास ।
हनूमान अतिगर्जनलाग्यो बाढ़ी पूँछ लागिआकाश ॥ ९९॥
मन्दिर मन्दिर कूदि कूदि कपि चढ़िचढ़ि सकल जराईलंक ।
एकविभीषणको घरतजिकेजलनिधि कूदिपरोनिःशंक ॥१००॥
पूंछ बुझाय खोय श्रम अपनो धरि लघु रूपआय सियपास ।
हाथजोरि विनतीकरिके पुनिबोल्यो सुनहुंजानकीमाय॥१०१॥
दीजे मोहिं चिह्न कछु माता जैसे दीन्ह मोहिं रघुनाथ ।
चूड़ामणि उतारि सियदीन्ही तुरतैलीन्ह चिह्नमुदसाथ ॥१०२॥
बहु समुझाय बुझाय मातु सिय हर्षितचल्यो नाय पदमाथ ।
लांघिसिन्धु आयो निज सेनासुमिरत राम राम रघुनाथ १०३ ॥
हर्षे सब बिलोकि हनुमंतै नूतन जन्म आपनो जानि ।
मुख प्रसन्न तनु तेज विराजै कारजरामचन्द्रकर मानि १०४ ॥
हर्षित चली सकल कपि सेना कपिपति रामचन्द्रके पास ।

मधुवन पहुँचि खाय फल सुन्दर पंपापुरहिं आय सुखरास १०५॥
पुनि सुग्रीव पासकपि आये भाषे समाचार सब आय।
सुनि सुकंठ हर्ष्यो अति आतुर सेनासहित रामढिग आय १०६॥
समाचार सब प्रभुहिं सुनायो बोले जामवंत करजोरि।
सुनहुं नाथ हनुमतकीकरणी बर्णि न जाय एकमुख मोर १०७॥
लङ्क जराय मातु सीताकी लाये खबरि बीर हनुमान।
सुनिकै बातैं जामवंतकी हर्षित कृपासिन्धु भगवान॥ १०८॥
अद्भुत सुभट जानि रघुबरने लीन्हों उरलगाय हनुमान।
करी बड़ाई पवनपुत्रकी अरु पुनि कहन लाग भगवान १०९॥
कैसे लांघि गये तुम सागर हनुमत मोहिं देउ बतलाय।
कैसे पहुंचे गढ़ लंकामें तहँको हाल कहौ समुझाय॥ ११०॥
हाथ जोरिकै हनुमत बोल्यो सुनिये दीनबन्धु भगवान।
तुमरी कृपा कठिन कछु नाहीं मैं हौं अति गँवार अज्ञान १११॥
चरण तुम्हार धारि उर अन्तर सागर कूदि लङ्क में जाय।
घर घर ढूँढ़ी मैं सब लङ्का पै नहिं मिलीजानकी माय ११२॥
मंदिर एक दीख अति सुंदर मैं तहँ तुरत गयो समियाय।
ताही समय बिभीषण जाग्यो सुमिरत राम राम रघुराय ११३॥
भेद बतायो तेहिं सीताको पहुँच्यों मैं अशोक में जाय।
वही समैया में दशकन्धर निश्चर तहां पहूँचो आय ११४॥
त्रास दिखायो तेहि सीताको कहि दुर्वाद खड्ग दिखलाय।
बहुतभांति समुझावनलाग्यो पुनिगृह गयो चित्तबिलखाय ११५
देखि अकेली मैं माताको आगे डारि मुद्रिका दीन।
तेहिलखिसीता चकितह्वैगइ अपनेमनहिं शोचअतिकीन ११६॥
तब मैं गयों निकट माता के अरु सब कह्यों हाल समुझाय।

धीरज राखौ माता मनमें ऐहैं सेनसहित रघुराय ॥ ११७ ॥
पुनि मैं बाग उजारि खायफल मारो अक्षकुँवर बलधाम ।
खबरि पाय भेज्यो दशकंधर आयो मेघनाद जेहि नाम ११८॥
बहुतै युद्ध भयो तेहिके सँग लीन्हिसि ब्रह्मअस्त्र खिसियाय ।
छोड़ि फाँस बांध्यो तेहि हमको रावणसभा पहूँचो जाय ११९॥
बहुत बिबाद भयो हमरे सँग रावण हुक्म दियो फरमाय ।
अंग भंग करि भेजो बंदर कपिकी पूँछ देहु बँधवाय १२० ॥
फेरी करिके गढ़ लंकाकी पूँछ में अग्नि देउ लगवाय ।
सुनिकै बातैंसब निश्चरगण लागे करन खेलहर्षाय ॥ १२१ ॥
बस्त्र लपेट्यो तेल लगायो फेरी नगर केरि करवाय ।
आगलगाई पुनि पूँछीमें दहकन लगी अग्निसखपाय १२२॥
लंक जराई कूदि कूदि मैं पुनि मैं गयो सिंधु में धाय ।
पूँछबुझाय खोयश्रमअपनो पहुँच्यों पासजानकीआय १२३॥
चूड़ामणी चिह्न माता से लैके चल्यो मातु शिरनाय ।
कौनसीगिनती में हमस्वामी केवलतुव प्रतापरघुराय ॥ १२४॥
यही हाल है गढ़ लंकाको सो मैं कह्यों नाथ समुझाय ।
सुनिकै बातैंहनूमान की रघुबरलीन कंठ लिपटाय ॥ १२५ ॥

॥ दोहा ॥

पुनिहनुमत गद्गदगिरा, प्रभुसमीपसकुचाय ।
सीताकोसंदेशतब, कहतसदुखसमुझाय॥१२६॥

॥ रागसिंधु ॥

सीता सँदेश बिनती सुनिये कछू खरारी ।

पदकंज शीशनायो हाहा प्रभू पुकारी ॥ १२७॥
करुणानिधान कोमल उर भक्तभाव बत्सल।
हौंजन्मजन्म दासी केहि हेत ते बिसारी॥१२८॥
दशकंध भौन चिंता दिन रैनि मोहिं ब्यापी।
दारुणबिपतिबिदारणसुधिलेहु रावणारी॥१२९॥
शर एक शक्रसुत को मम हेत दर्प नाश्यो।
सोबाणकितहिराने जन शोक दोषहारी॥१३०॥
जलबाह से बिलोचन जल बाह रैन बासर।
प्रभुरामचंद्र लीजै चूड़ामणी पियारी ॥१३१॥

॥ छन्द आल्हा ॥

चूड़ामणि दीनी हनुमत ने लीन्ही रामचंद्र सुखपाय।
हृदय लगाय लीन्हरघुनायक सेनातुर्त लीन्हबुलवाय ॥१३२॥
श्रीजगदम्बा को सुमिरन करि सेना कूच दीन करवाय।
तीनि दिनाको धावा करिकै सागरतीर पहूँचेजाय ॥ १३३ ॥

॥ दोहा ॥

रघुपति आये सिन्धुतट, मंदोदरि सुनिकान।
नायचरणपतिकहतदुख,हृदयपरमअकुलान १३४

॥ राग ललित ॥

बिनती कछू हमारी सुनि लेहु प्राणप्यारे।
मेरोसुहाग स्वामी अब हाथ है तुमारे ॥१३५॥

दल भालुकीश भारी रघुनाथ साथ आये ।
निर्भय निवास कीन्हो बारीशके किनारे १३६॥
कपि एक पूर्व आयो लंका अशंक जारी ।
करिक्षय अक्षयकुमारा निश्चरसमूह मारे १३७॥
मद कोह द्रोह तजिकै रघुबीरपाद गहिये ।
सब दोषको निवारैं अवधेशके दुलारे ॥ १३८॥
निजबंशक्षेम चाहौ तौ यह उपाय कीजै ।
प्रभु रामचन्द्र सीता दीजै कहे हमारे १३९ ॥

॥ दोहा ॥

रामागमन सुरारि सुनि, पूँछत सभा लगाय ।
कहतबिभीषण जोरिकर,धर्मनीत समुझाय १४०

॥ राग भैरवी ॥

सुनौ महराज इक बिनती हमारी ।
सबै अभिमान तज मिलिये खरारी॥१४१॥
स्वयं भगवान जो बैकुण्ठबासी ।
सोई अवधेशके कौशलबिहारी ॥ १४२ ॥
सुयशआतंक तौ चौदह भुवनमें ।
महा अनुचित हरी पर जाय नारी १४३ ॥
शरण प्रतिपाल कहि हरि वेद गावैं ।
चरण गहि देहु तेहिं मिथिलादुलारी १४४॥

स्वयंभू शंभु निशि दिन जाहि ध्यावैं।
सोई प्रभु हरिबिलासी देह धारी ॥ १४५ ॥

॥ दोहा ॥

बंधु निरादर पाय दुख, कियो बिभीषणत्याग ।
करत मनोरथ पंथमो, रामचन्द्र अनुराग १४६॥

॥ छंद आल्हा ॥

चल्यो बिभीषण तब लङ्का ते करिकै रामचन्द्र को ध्यान ।
देखिहौं जाय रूपगुणसागर करुणासिन्धु राम भगवान१४७॥
जे पद परसि तरी ऋषिनारी जे पद जनकसुता उर माहिं ।
जिन पद सलिलसुरसरी सोहै तारणतरण सकल जगमाहिं१४८
जिन चरणनकी सुभगपादुका प्यारे भरत रहे मनलाय ।
ते पद कमल प्रेम पूरित है भरि भरि नयन देखिहौं जाय१४९॥
यहि विधि करत अनेक मनोरथ आयो सपदि सिन्धुके पार ।
कपिन्ह बिभीषण आवादेख्यो मनमें करनलाग कुविचार१५०॥
सादर तेहि आगे करि बानर पहुँचे रामचन्द्रके पास ।
देखि बिभीषण चक्रित ह्वैगा मनमें अति प्रमोद परकास१५१॥
रामलषण छबि देखि देखि कै अस्तुति करन लाग तेहिकाल ।
नाम बिभीषण मेरो स्वामीहौंअतिदीनभ्रातदशभाल ॥१५२॥
हे प्रभु दिवानाथ कुलभूषण करुणासिंधु बिश्वभरतार ।
हेप्रभु दीनदयालु निरंतर ब्रह्मा आदि न पावैं पार ॥ १५३॥
भक्त बिभीषणकी बाणी सुनि रघुबर लियो कंठ लिपटाय ।
पुनि प्रबोधि के राज्यतिलक दै लंकाधीशकीनरघुराय॥१५४॥

जामवंतसे पूंछन लागे करुणासिंधु राम करतार ।
पुनि बुलाय सुग्रीवहिं पूछ्यो केहिविधिहोयँसिंधुकेपार॥१५५॥
सुनत बाक्य बोले सब मंत्री मानौ रघुपति वचन हमार ।
विनय कीजिये महसागरकी देवै राहहोयँ सबपार ॥ १५६॥
तीन दिना सागरपर ह्वैगये सागर अधिक अधिकलहराय ।
कठिन बाण लीन्हो रघुनंदन जलके जंतुरहेविकलाय ॥१५७॥
खलबल परिगो तब सागर में सागर बिकलचित्त सकुचाय ।
अस्तुतिकरनलागरघुबरकीअतिशयभक्तिभावउरलाय ॥१५८॥
जय रघुनन्दन दुष्टनिकन्दन वंदन जगत हरण महिभार ।
जय सुरपालक असुरनघालक लायक सुभटशूरसरदार १५९॥
जय जगस्वामी अंतर्यामी सुंदर सुखद रूप अभिराम ।
मंगलमूरति पाप बिदूरति जय प्रभु शरण सुखद सुखधाम१६०॥
अहो भाग्य मेरे यहि अवसर जो प्रभु सीख दीन मोहिं आय ।
अब कृतकृत्य भयों रघुनंदन जो प्रभु दर्शदीनरघुराय ॥१६१॥
सुनिकै बोले रघुनंदनजी सागर सुनौ बात मनलाय ।
जेहि बिधि पारहोयकपिसेनासोशुभयुक्तिदेउबतलाय ॥ १६२॥
हाथजोरिकै सागर बोल्यो सुनिये दीनबंधु भगवान ।
हैं बरदानी प्रभुसेनामें नल अरु नील बुद्धि बलवान ॥ १६३॥
सो सब हाल कहौं प्रभु तुमसे तुरतै सेतु लेउ बँधवाय ।
हैं बरदानी यह दोनौं कपि इनके हाथ शिलाउतराय ॥१६४॥
नल अरु नील बालपन खेलैं बिचरैं नित समुद्रके तीर ।
शालग्रामकेरि पूजा जहँ नित प्रतिकरैं प्रातमुनिधीर ॥१६५॥
नयन मूँदि ध्यावैं जेहि अवसर नल अरुनीलआयतेहिठाम ।
जलमें फेंक देयँ सो मूरतिअरुपुनिचलेजायँनिजधाम ॥१६६॥

देखि अनर्थ सकल मुनियनने दीन्हों शाप तिनहिं ततकाल ।
नल अरु नीलकेर हाथनसे तैरें शिला सिंधुसबकाल ॥ १६७ ॥
यह बर रूप शाप मुनियनको सो मैं कह्यों सकल रघुनाथ ।
सुनिकै बिदाकीन रघुनायक सागरगयोनायपदमाथ ॥ १६८ ॥
जो जन पढ़ै काण्ड यह सुंदर सो जगसुखीरहै सबकाल ।
बढ़ै भक्ति रघुनंदनजीकी पावै अंत मुक्ति ततकाल ॥ १६९ ॥

॥ इतिसुन्दरकाण्डसमाप्तः ॥

॥ अथ लङ्काकाण्ड प्रारम्भः ॥

॥ दोहा ॥

सुन्दर काण्ड सुनायके, नारायण चितलाय ।
युद्धकाण्डबर्णन करत, आल्हाछन्द बनाय ॥

❋ सुमिरण ❋

॥ छन्दआल्हा ॥

सुरन मध्य ध्यावौं गणनायक देबिन मध्य शारदा मात ।
तीर्थन ध्यावौं श्रीगंगाजी कलिमल हरण धार फहरात ॥ १ ॥
धाम सुध्यावौं जगन्नाथ जी क्षेत्रन कुरुक्षेत्र हरद्वार ।
पुरिनमध्य ध्यावौं काशीजी जहँपर विश्वनाथ दरबार ॥ २ ॥
नटन मध्य ध्यावौं नँदनंदन ऋषियन कपिल देव भगवान ।

वैद्यनध्यावौं धन्वन्तरिको कीशनमध्य बीर हनुमान ॥ ३ ॥
पुनि मैं ध्यान करौं बाली को कांख में चापि दशानन लीन ।
सन्मुख हारा नहिं काहूके आइसों मारि राम तेहिं दीन ॥४ ॥
योगिन ध्यावौं शिवशंकर को दानिन हरिश्चन्द्र महराज ।
दूसरदानी बलिराजा भे तीसर भये करण शिरताज ॥ ५ ॥
भक्तन ध्यावौं अम्बरीष को औ प्रहलाद जगत विख्यात ।
भक्तशिरोमणि भये विभीषण जिनतजि दियोबंधुकोनात ॥६॥
ज्ञानिन ध्यावौं सनक सनंदन बीरन भीष्मपितामहध्याय ।
कवियन ध्यावौं बाल्मीकको जिनरामायण दीनबनाय ॥ ७ ॥
सत्य सराहौं श्रीदशरथ को जिन जग तज्यो पुत्र धन देह ।
कलिमेंसुमिरौं तुलसिदासको जिनने कियों रामसोंनेह ॥ ८ ॥
चक्र सराहौं श्रीविष्णू को जासों अभय भक्तको कीन ।
वज्रसराहौं सुरनायक को वृत्रासुरै पराजय दीन ॥ ६ ॥
धन्य कमंडलु है ब्रह्मा को जामें राखि सुरसरी लीन ।
शूलसराहौं शिवशंकरको जासों काटि जलंधर दीन ॥ १० ॥
शूरन सुमिरौं दशकंधर को जिसने युद्ध राम सों लीन ।
मुखनहिं मोरयो समरभूमिते अरह्वै गयो बंशते हीन ॥ ११ ॥
बन्धु शिरोमणि महा मान्यवर हैं श्री भरतलाल महराज ।
रामलषण सीता वियोग में पाई त्यागि दीन जिनराज ॥१२ ॥
नारि शिरोमणि सीताजी को सुमिरौं बार बार धरि माथ ।
धर्म पतिव्रतको पालन करि बनको गई रामके साथ ॥१३॥
छोंड़ि सुमिरनी अब आगे मैं वर्णन करौं युद्ध को हाल ।
नारायणप्रसादको आल्हा चितदै सुनहु वृद्धअरु बाल ॥ १४॥

॥ सवैया ॥

कैटभ से नरकासुर से अरु भीषम द्रोण महा यश लेवा।
बालि बली बलि बाण दधीचि ययाति दिलीपहु से नल सेवा॥
रावण और युधिष्ठिर भारत भीम महा बलवान सुदेवा।
अन्तसमय उबरे न कोऊ क्षणमाहिं भये सब कालकलेवा १५॥
जगकोऊ बनावत ऊंचेअटा घन घोर घटा लगे तम्बूकनातैं।
पुनि तात तियासुत मीत के ख्याल फँसे जनजाल घनेबहुघातैं॥
अपने मनके तब धाम रचे पुनि अन्तसमय नहिं एकहु जातैं।
यक रामके नाम बिना सुमिरे जगमें धिरकार सबै यहबातैं१६॥

॥ छन्द आल्हा ॥

॥ सेतुबन्ध तथा शिवस्थापन ॥

सम्मति सुनिकै महसागरकी बोले रामचन्द्र महराज।
जामवंत हनुमत नल अंगद द्विविद मयंद नील कपिराज१॥
अब बिलम्ब केहि कारण कीनो जल्दी सेतु करौ तैयार।
गर्व नशावौं मैं रावणको हतिके हरौं भूमिको भार॥ २॥
इतनी सुनिके रामचन्द्र से बोले जामवंत करजोर।
नाथ नाम तव है शुभ सेतू नर चढ़ि पार होयं भवघोर॥ ३॥
कौनसी गिनती में यह सागर याको लांघि जाय कपि सैन॥
सुनिकै बिनती जामवंतकी बोले हनूमान मृदु बैन॥ ४॥
देर लगावनकी बिरिया नहिं बाँधौ सेतु इष्ट धरिध्यान।
बात करन को नहिं अवसर है करियो बात युद्ध मैदान॥ ५॥
सुनिकै तुरतै जामवंत ने नल अरु नीलहिं लियो बुलाय।

समाचार कहिकै पुनि बोले जल्दी सेतु देहु बँधवाय ॥ ६ ॥
पुनि बुलवाय लीन कपिसेना अपनो हुक्म दीन फरमाय।
शिला वृक्ष लावो सब योधा बांधैं सेतु नील नल आय ॥ ७ ॥
धाये योधा शिला लेनहित मनमें जपत राम हर्षाय।
वृक्ष और पर्वत लै आवैं नीलहिं नलहिं देहिं मनलाय ८ ॥
बड़े बड़े पर्वत तरु लैके सो कंदुक इव लेहिं उठाय।
बांधन लगे सेतु दोऊ मिलि मनमें सुमिरि राम रघुराय ॥ ९॥
अति रमणीय सेतु जिन बांध्यो शोभा जासु बरणि नहिंजाय।
चित्र विचित्रित शिला मनोहर तिनमें बेलैं रचीं बनाय १० ॥
मूंगा मोतीकी झालरि लै तिनके बीच बीच मणिजाल।
रजत सोवरण से भूषित करि मानहुं रंगभूमि भूपाल ११ ॥
देखि सेतुरचना अतिसुन्दर बोले बिहँसि राम रघुराय।
परमरम्य सुन्दर यह धरणी महिमा अमित बरणि नहिंजाय१२॥
मो रे हृदय प्रेम अति छायो थापैं यहां शंभु मुदसाथ।
सकल कामना पूरण करिहैंहरिहैं सकल ताप ममनाथ॥ १३॥
सुनि कपीश बहु दूत पठाये मुनिवरवृन्द बोलिबे काज।
बहुत मुनीश्वर पुत्रशिष्ययुत आये वेगि रामके काज ॥१४॥
पुनि रघुनाथ वेद रीती से थापन कीन शंभु त्रिपुरार।
विधि विधानसे पूजन कीनी बिनती कीन रामकरतार ॥१५॥
सेतुबंधरामेश्वर कहिकै अस्तुति करन लाग तेहि बार।
पुनि रघुनंदन बोलन लागे पूजै शंभु होय भव पार ॥१६॥
शिवद्रोही मम दास कहावै भावै स्वप्न माहिं नहिं मोहिं।
ममद्रोही शिवभक्तमूढ़ कहँ रौरव नर्क कल्पभरि सोहिं ॥१७॥
जे करि हैं रामेश्वरदर्शन तिन के पाप होयँ जरि छार।

गंगाजल चढ़ाय सुखसंयुत अंतिम सहजहोयँ भवपार ॥१८॥
थापन करिकै शिवशंकर को मुनियन बिदा कीन रघुनाथ ।
सेतुबंध शिव सुमिरण करिकै हर्षित भये नायपदमाथ ॥ १९॥
सुमिरन करिकै जगदम्बा को अरु गणपति के चरण मनाय ।
सागरपार होयसब सेना रघुबर हुक्म दीन फरमाय ॥ २० ॥
सजि गइ सेना रामचंद्र की अरु सागर पर पहुँची जाइ ।
जीवजंतु जलकेतेहि अवसर दर्शन हेतराम के आइ ॥ २१ ॥
शोभा देखैं रामलषण की हर्षित हृदय सकल जल जंतु ।
तिनकीओट भयो जलसागर जानै कौन रामकोतंतु ॥ २२ ॥
बहुत भीरके कारण कपिजन बहुतक स्वर्ग पंथ से जायँ ।
बहुजलजंतु केरऊपर चढ़ि आगेपहुँचि गये समुहाय ॥ २३ ॥
आठपहर केरे अर्सा में पहुँचे सब समुद्र के पार ।
डेरापरिगै तहँ समुद्रतट आयसुदीन राम करतार ॥२४ ॥
बाग बाटिका बन उपबन में सुन्दर कंद मूल फल देख ।
भक्षणकरहु जाय निर्भय ह्वै मनमें धारि ब्रह्मअवरेख ॥ २५ ॥
सुनिकै आज्ञा रघुनायक की चलि भे भालु रीक्ष मनलाय ।
खायखाय फल वृक्षउखारैं डारैं लंकओर खिसिआय ॥२६ ॥
कोई निश्चर को जो पकरैं डारैं नाक कान में डोर ।
मारैंलात केश शिर नोचैं फेरा देयँ बाग चहुँ ओर ॥ २७ ॥
छूटि के भागै जो निश्चर खल सो रावण तर पहुँचै जाय ।
सेतुबांधि आयेरघुनंदन सबको काल रहो नगिचाय ॥२८॥
सुनि सुनि बातैं रखवारेन की रावण हृदय भयो अति त्रास ।
कांतिमलीन भई मुखकी सन्ध्यासमयगयोरनिवास ॥ २९॥
मंदोदरि समुझावन लागी स्वामी सुनौ बात धरि ध्यान ।

सेतु बांधि आये रघुनन्दन ह्वैहै असुरबंशकी हान ॥३०॥
आगे करिकै श्रीसीताको स्वामी मिलौ जाय रघुनाथ ॥
करिहैं क्षमा जानि शरणागत मानो कही मोर दशमाथ ३१॥
क्यों घबड़ावै अपने मनमें मैं हौं शूर एक जगमाहिं।
कौन बात को तैं डरपति है मारौं खेदि एक पलमाहिं ३२॥
बरुण कुबेर इन्द्र आदिक सुर जीते सकल शूर सरदार।
सकल देवता हमने जीते जीते जगत चराचर झार ३३॥
इतनी कहिकै मन्दोदरि से अपनी सभा पहूँचो आय।
सब मंत्रिनसों पूँछन लाग्यो सम्मति उचित देउ बतलाय३४॥
सागर उतरि आय तपसी दोउ बानर ऋक्ष संगमें लाय।
केहिविधि युद्ध करैं शत्रुनसों सो सब हाल कहौ समुझाय३५॥
सुनिकै मंत्री बोलन लागे दोनो हाथबांधि शिरनाय।
कौन बात को स्वामी डरपौ तुमहौ एक शूर रणराय ३६॥
सकल देव तुमने जीते हैं जीते सकल लोक सरदार।
पूँछत कहा आजु हौ स्वामी रघुबर सेन मोर आहार ३७॥
पुनि प्रहस्त बेटा रावणको बोल्यो हाथ जोरि समुझाय।
जलधि लांघि आयो कपि लङ्का क्षणमें दीन्हीं लङ्क जराय३८॥
तब नहिं जोर केहू को बाढ़यो क्यों नहिं कियो ताहि आहार।
तेहि ते तुमको समुझावत हौं इतनो मानहु बचन हमार ३९॥
सीता देहु राम घर जावैं काहे व्यर्थ बढ़ावहु रार।
कही हमारी जो नहिं मनिहौ ह्वैहै नाश तोर परिवार ४०॥
सुनि बोला दशकंठ क्रोधकरि कौने दई सीख तोहिं आय।
हमरे बंशमाहिं तू पामर बोलत बचन कालबश पाय ४१॥
सुनि पितुबचन खेद मन ह्वैके निजगृह गयो वचन कहिघोर।

हितमत तोहिं न भावतहै पितु आयो काल निकटहै तोर ४२॥
सन्ध्यासमय जानि दशकन्धर आयो नाच रंग गृहमाहिं।
लगी कचहरी लङ्कापतिकी जिसको रामकेर भयनाहिं ४३॥
सजे बिछौना रेशमवारे अरु मसनदैं लगीं दरबार।
नचैं अप्सरा अति हर्षित है देखैं बड़े बड़े सरदार ४४॥
बाजै ताल पखावज बीणा गण गन्धर्व करैं गुणगान।
प्रबल भयंकर निश्चर बैठे बैठे बड़े बड़े बलवान ॥४५॥
इहां सुबेल शैल रघुनन्दन उतरे सेनसहित अतिभीर।
शैल शृंग इक सुंदर देख्यो डेरा तहां कीन रघुबीर ॥४६॥
सजी कचहरी रघुनन्दनकी सुंदर लागिरह्यो दरबार।
बैठ कुशासन रामचन्द्र अरु बांये लषण शेषअवतार ४७॥
जटा मुकुट मस्तकपर सोहैं करमें लिये शरासन बान।
वीरासन बैठे रघुनन्दन बैठे बड़े बड़े बलवान ॥४८॥
जामवंत सुग्रीव सुअंगद बैठो वीर बली हनुमान।
द्विविद मयंद नील नल बैठे लीन्हे अस्त्रशस्त्रमनमान ॥४९॥
बोले रामचंद्र मंत्रिनसे तुमसुनि लेउ सकल बलधाम।
करौ तयारी अब लरिबेकी जासों होयँ पूर्ण सबकाम ॥५०॥
सुनिकै बोले जामवंतजी सुनिये कृपासिंधु रघुनाथ।
बिना युद्धकेजो कारज हो तौ नहिं लड़ौशत्रुकेसाथ ॥५१॥
रावण केर सिखावनकारण धावन भेजि देउ ततकाल।
सीता भेजि देय यहि अवसर बैठो राज करै दशभाल ॥५२॥
यह मन भाय गई रघुबरके अरु अंगद को लियो बुलाय।
लंकाजाहु तातरावण ढिगकहिऔ जाय नीतिसमुझाय॥५३॥
आयसु पाय शीश धरि अंगद हर्षित रामचरण शिर नाय।

घरी एकको धावा करिकै पहुँचो लंकपुरी में जाय ॥ ५४ ॥
जाय केहरी ज्यों गजदल में जैसे गरुड़ अहिन में जाय।
त्योंकपिधावा निश्चर दलमें रावणसभा गयोसमिआय ॥५५॥
भयो कोलाहल अति लंकामें लंका जारि कियो जेहिंछार।
सोई बानर फिरि आयो है अबधौं कहा करै करतार ५६॥
रावण सभा गयो अंगद तब मनमें जपै राम रघुवीर॥
सिंहकी बैठक अंगद बैठयो इत उत चितै बीर रणधीर ॥५७॥

॥ रावणांगद संवाद तथा अंगद पैज ॥

देखी सूरति जब अङ्गद की रावण बोलि उठो तेहि काल।
कौन ग्रामके तुम बासी हौ आये कौनहेत यहि काल १॥
सुनिकै अङ्गद बोलन लाग्यो तुम सुनि लेहु राजा दशभाल।
पंपापुरके हम बासी हैं अङ्गद नाम बालिको लाल २॥
मम जनकहि तोहिं रही मिताई हमहूँ सुनी रही सबकाल।
ताते आयों मैं तुमरेहित मानो बात बेगि दशभाल ॥ ३ ॥
उत्तम कुल पुलस्त्यके नाती तुमहौ सकल बेद विज्ञान।
हौ बरदानी शिवशंकर के जग में एक शूरबलवान ॥ ४ ॥
नृप अभिमान मोहबश ह्वैके लाये सिया चोरि तुमजाय।
जिनकी नारी तुम हरिलाये तिनको हाल सुनोमनलाय ॥५॥
जिनकी महिमा बेदनबरणी जो हैं सकल लोक करतार।
सोई नगर अयोध्याजीमें उपजे रामचन्द्र अवतार ॥ ६ ॥
नीक न कीन्हयो तुमदशकन्धर जो हरिलाये पराईनारि।
जो रणकोपैं श्रीरघुनन्दन दीहैं तोरबंश संहारि ॥ ७ ॥
तेहि ते तुमको समुझावत हौं सीता माता देहु पठाय।

सुनिकै बातै यह अंगदकी रावण बोलि उठो रिसियाय ॥८॥
अब कहु कुशल बालि बानर कहँ सोतौ प्रथमदेहु बतलाय।
दिन दश गये बालि पहँ जैहै पूँछेहुकुशलकंठलिपटाय ॥९॥
राम बिरोध कुशल जैसी जग सो सब तुहिं सुनाइहि सोइ।
बीसहु काननसे सुनिलीजो कहिहै सकल हालसबरोइ ॥१०॥
फिरि कै रावण बोलन लाग्यो सुनरे अंगद महा कपूत।
बापको बैरी जो तपसी है ताके बने जाय तुम दूत ॥ ११ ॥
तनिक लाज नहिं इन नयन में क्यों नहि बांझभई तबमात।
धर्मविरोध दूत नहिं मारौं ताते कठिन सहौं तबबात ॥ १२ ॥
बोले अंगद पुनि रावण से सुन ले बीसनयन से अंध।
बूड़िमरौ ना किमि सागरमें हौ तुममहामूढ़ दशकंध ॥ १३ ॥
नारि पराई तुम हरि लाये सूने माहिं साधु के भेस।
बहिनि तुम्हारी की सब बातैं जानैलोक सुनहु लंकेस ॥ १४॥
बोल्यो रावण तब अंगद से मैं हौं सकल जगत यक बीर।
तुम्हरेकटक माहिं सुनु अंगद मोसन भिरहिकौनरणधीर १५॥
नारि वियोग राम दुर्बल हैं लक्ष्मण तासु दुःख अति दीन।
जामवंत मंत्री अति बूढ़ा है सुग्रीव बुद्धि बल हीन ॥ १६ ॥
बंधु विभीषण है अति कादर जानत शिल्पकर्म नल नील।
लंकाजारी जेहि बानर है सो क्या करै एक बलशील ॥ १७॥
सुनि कै उत्तर दीन अंगद ने तुम सुनि लेउ निशाचर राय।
फौज़हमारी में नहिं कोऊ तुम से लरे कीर्ति जोपाय ॥ १८॥
प्रीति विरोध योग्य समता में शोभा लहै जक्त यश होय।
सिंहसँहारे जो गीदड़को तौ नहिं सिंह सराहै कोय ॥ १९ ॥
सुनि कै रावण बोलन लागो अंगद सुनो हमारी बात।

स्वामिभक्ततुम्हरीसबजातीप्रभुगुण कसनकहहुयहिभांति २०॥
धन्य कीश जो प्रभु कारज हित नाचै जहांतहां तजिलाज ।
नाचिकूदि कै जगत रिझावैं लीलाकरैं पेटके काज ॥ २१ ॥
तुम्हरे बंश केरि प्रभुताई जानत अहौ सदा कपिराज ।
ताहीते आयोहमरे ढिग अपने स्वामि रामके काज ॥ २२ ॥
मैं गुण ग्राहक परम सुज्ञ हौं तव कटु वचन करौं नहिकान ।
सुनिअंगद बोले हनुमतने तुम्हरे गुणको कियो बखान २३॥
बन उजारि सुत बधि पुर जारयो तुम्हरो मान मथो हनुमान ।
बदली लीनो नाहिं हनुमतसे तुम्हरी नीति धन्यखलभान २४॥
क्रोधित ह्वै के रावण बोल्यो सुनरे महामन्द अज्ञान ।
दूत कहावत है तपसिनको मारो पिता तोर शर तान २५ ॥
कछु नाहिं मनमें तू शरमावै तेरे जीतब को धिरकार ।
नाम हमारो सकल सृष्टि में रावण एक सकल संसार २६ ॥
गणनायक को सुमिरन करिकै लैकै रामचन्द्र को नाम ।
बोले अङ्गद तब रावण से अपनी लेहु जीभ तुम थाम २७ ॥
बहुतक रावण हम सुनि डारे तिनमें कौन कहौ दश भाल ।
रावण एक महा अभिमानी बलिजीतनहित गयो पताल २८॥
तहँ लरिकन ने पकरि गिरायो बांध्यो अश्वशाल में जाय ।
सुनिकै दया लगी बलि जीको तुरतै ताहि दीन छुड़वाय २९॥
दूजो रावण महाभिमानी पहुँचो सहसबाहुपै जाय ।
बांधिकै राजा सहसबाहु ने कारागार दीन पहुँचाय ३० ॥
दशौ शिरनपै दीपक राखै अरु बहु खेल खिलावै आय ।
दया आय गइ मुनि पुलस्त्य को तुरतै आयदीन छुड़वाय ३१॥
तीसर रावण कहत सकुच मोहिं बहु दिन रहा बालिकी कांख ।

कौनसे रावण हौ इतने में सो तुम सत्य कहौ तजि मांख ३२॥
सुनिकै बोल्यो तब दशकन्धर अङ्गद सुनौ बात मन लाय ।
कौतुक करि कैलास उठायो जीते बड़े २ सुरराय ३३ ॥
जीते सकल लोक यक क्षण में सब सुर हाथ बांधि रहिजायँ ।
कालहु डरपत है जेहि डरसे जिसकी गर्ज धरणि थर्राय ३४ ॥
जब जब पूजन करहुं शंभु को तब तब अपने शीश चढ़ाय ।
सो मैं रावण हौं जग जाहिर तूभी जानत करत ढिठाय ३५ ॥
जिनको जगत कोउ नहिं जाने अरु दशरथ ने दियो निकारि।
तेहिदुखदुखितफिरतबनबनमें निशिदिनरहितदुखीतेहिनारि ३६
करी सहाय भालु कपियनने बांधा सेतु सिन्धु मँझधार ।
करत बड़ाई रे मानुषकी लज्जा करत नाहिं यहि बार ३७ ॥
बंधु हमारे कुम्भकरणसे जासों तीनि लोक थर्रायँ ।
मेघनाद से हमरे बेटा जाकी गर्ज गर्भ गिरि जायँ ३८ ॥
सुनिकै बातै दशकन्धरकी अंगद बोलि उठे रिसिआय ।
अपने मुख से करत बड़ाई हौ निर्लज्जमूढ़ खलराय ३९ ॥
मति बौरायगई है तेरी बल अरु बुद्धि कछू है नाय ।
जो रणठानो है रघुबर से आवा काल तोर नगिचाय ४० ॥
श्री रघुनाथ समर में कोपैं छोड़ैं अग्निबाण बिकराल ।
शीश तुम्हारे सब कटिगिरिहैं अरु धड़ पड़ै भूमि बेहाल ४१ ॥
बानर भालू शीश तुम्हारे लैलै खेलैं गेंद समान ।
तुम्हरी सेना में जे निश्चर रणते भागि जायँ लै प्रान ४२ ॥
आयसु म्वहिं न दीन रघुनायक नहिं मैं कटतेउँशीशतुम्हार ।
लंका सकल बोरि सागर में मरतेउँ तुरतनिशाचरझार ॥४३॥
सीता माता अरु मंदोदरि लैके जाउँ रामके पास ।

है पछितावा यहिअवसरमें आयसुम्बहिंनदीनसुखरास ॥४४॥
इतनी सुनिकै रावण जरिगा नयनन रही लालरी छाय।
बाली बानरको बेटा है हमसे कहत बचन बौराय ॥४५॥
छोटे मुखसे बड़ि बड़ि बातैं आयो तोर काल यहि बार।
करत बड़ाई बार बार खल ऐसे नर अनेक संसार ॥४६॥
निमक तपस्विनको खायोहै सो तेरे हिय गयो समाय।
क्यों नहिं झूँठ कहै निशि बासर तेरे बंशकेरिप्रभुताय ॥४७॥
कहिऔ जाय रामलक्ष्मण सन अब तुम तजौ प्राणकी आश।
हमरे भोजन नर बानरहैं उड़ि उड़ि करैं निशाचरनाश ॥४८॥
सुनिकै निंदा रामचन्द्र की अंगद क्रोधवन्त घबराय।
सिंहसमान गर्जि चिंघरिकै नयनन रही लालरी छाय ४९॥
जैसे बिजली गिरै गिरिन पै बादल गर्जि गर्जि रहिजाय।
तैसे गर्जि गर्जि अंगद महि दोनौं पाथ पटकि रहिजाय॥५०॥
डोली धरणि सभा सद भागे रावण भूमि गिरो थर्राय।
शिरके मुकुटगिरे धरणीपै रावण तुर्त गयो घबराय ॥ ५१ ॥
चारि मुकुट अंगद ने फेंके आवत मुकुट कपिन भय मान।
बालितनय अंगद के प्रेरे बीचहि लीन हाथ हनुमान ॥५२॥
बोले रामचंद्र तेहि अवसर तुम सुनि लेउ भालु कपि बीर।
यह हैं मुकुट लंकपतिकेरे भेजे बालितनय रणधीर ॥ ५३ ॥
सम्हरि कै बैठो पुनि दशकंधर बोल्यो बचन नयन तर्राय।
मारौ मारौ यहि बानरको यह शठ कीशभागि नहिंजाय ५४॥

॥ अंगदवचन—सवैया ॥

गाल बजावत आवत लाज न रे खलराज वृथा बक ठानै।

जाय के सागर डूबि मरै किन सन्मुख बात करै मन आनै ॥
नाशन हार निशाचर वृन्द महा मतिमन्द तुही जग जानै ।
होय विभीषण लंकपती सुनु रावण राज करै मनमानै॥ ५५ ॥

॥ रावणवचन–सवैया ॥

कंचनकी गढ़ लंक बनी म्वहिं दीन दिगम्बर है को लेवैया।
जीति लियो सुरराजहु को तब और कहा शठमोर जितैया ॥
काह सुकंठ करे हनुमान कहा करिहैं तपसी दोउ भैया ।
एक हँसी म्वहि आवतहै दलसाजे हैं बन्दर बेर खवैया ॥ ५६ ॥

॥ अंगदपैज ॥

कहँ लग बरणौं मैं विवादको अंगद पैज करी तेहि ठावँ ।
सुमिरण करिकै रामचन्द्रको रावण सभा अड़ायो पावँ ॥ १ ॥
अंगद बोल्यो दशकंधर से तुम सुनि लेउ निशाचरराय ।
है कोउ योधा तुम्हरे दल में हमरो पांव देहु हटवाय ॥ २ ॥
सियाहार प्रभु घर फिरि जैहैं जो मेरो पग देइ हटाय ।
बोला रावण मेघनाद से सब योधन को लेउ बुलाय ॥ ३ ॥
पैर हटावैः यहि बानरको पटकौ भूमि गिरै भहराय ।
मारि पछारौ यहि लङ्कामें देखौ भालु भागि नहिं जाय ४ ॥
इतनी सुनिकै मेघनाद अरु आये बड़े बड़े बलवान ।
पैर हटावैं रे अंगदको करि करि इष्टदेव को ध्यान ॥ ५ ॥
बड़ बड़ योधा रावण दलके जिनकी गर्ज गर्भ गिरिजायँ ।
पैर हटा नाहिं तिन अंगदको योधा हारि मानि हटिजायँ ६ ॥
देखि हकीकति सब योधन की रावण उठो शंभु धरि ध्यान ।

पैर छुवतही अंगद बोल्यो तुम सुनिलेहु निशाचर भान ७॥
हमरे पैर छुये तें तुम्हरो हुइहै पाप पुण्य कछु नाहिं।
चरण पखारौ रघुनन्दन के जासों सुयश होय जगमाहिं ८॥
सुनिकै बातैं तब अंगदकी रावण बैठिगयो सकुचाय।
सिंहासन बैठ्यो शिरनैके मानहुँ संपति सकल गँवाय॥ ९॥
फिरिकै अंगद बोलन लाग्यो तुम सुनिलेउ लंकपति बात।
अबहूं मानौं कहो हमारो सीता भेजि देउ कुशलात॥१०॥
शरण जाहु जो रघुनायककी तुमको तुरत लेहिं अपनाय।
शरणागत पालक जगस्वामी देवैं सकल दोष बिसराय ११॥
सिया न देहौं मैं तपसिनको चाहै प्राण रहै की जायँ।
होय पराक्रम भुजदंडनमें हमसों लेयँ समर के मायँ॥ १२॥
सुनिकै अंगद बोलन लागे तुम्हरो रहो काल नियराय।
अबहीं मुख क्या करौं बड़ाई हतिहौं तोहिं खिलाय खिलाय१३॥
इतनी कहिकै अंगद चलिभे रामादल में पहुँचे आय।
सकल बात कहि लंकागढ़की सो सब कही रामढिग जाय१४॥
दशरथनन्दन सब जगबन्दन हे प्रभु दीनबन्धु रघुराय।
जिमि प्रण राख्यो श्रीअंगदको तैसेइ मोपर होउ सहाय१५॥
नारायण सुमिरत निशि बासर आरत बचन सुनाय सुनाय।
सेवक जानि देहु बर बाणी जामें काम सिद्धि हो जायँ १६॥
देखि पराक्रम श्री अंगदको रावणचित्त भयो अति त्रास।
संध्यासमय जानि दशकंधर उठिकै गयो बेगि रनिवास॥१७॥
हाथ जोरि मंदोदरि बोली तुम सुनि लेउ हमारे कंत।
समर न कीजै रघुनन्दनसे जिनकोआदिमध्य नहिं अंत॥१८॥
सोचौ हनूमानकी करणी अरु पुनि अंगदकी प्रभुताय।

ऐसे धावन हैं जिन केरे सो प्रभु नाहिं मनुज रघुराय ॥१९॥
जब जब भीर परत भक्तन पै तब प्रभु आय लेत अवतार ।
सबदुष्टनको मारि गिरावत टारत सकल भूमि को भार ॥ २० ॥
राजा जनक यज्ञ रचवायो आये बड़े बड़े महराज ।
दनुज देव आदिक सब आये आये शूर वीर शिरताज ॥२१॥
धनुष न टूटो केहु योधा से तुमहूँ हारि रहे मन मार ।
धनुष उठाय खंडयो रघुनन्दन व्याही सियाराम करतार २२॥
खरदूषण त्रिशिरा से योधा सोऊ मारि दीन रघुनाथ ।
एकबाणसे बाण गिरायो ताको मनुज कहत दशमाथ २३ ॥
लहँ लग वरणों मैं यहि अवसर रावण मंदोदरि संबाद ।
श्रीरघुनंदनको सुमिरण करि आगे कहौं युद्धको बाद २४॥

॥ छन्दगीतक ॥

जनकात्मजापति अवधभूपति रामचंद्रभुवार ।
सर्बोपरे श्रीनाम रूप सुधाम लीला चार ॥
ब्रह्मादि अन्त लहे नहीं नहिं बेद बाणी पार ।
नहिंआदिअन्तअनादिअक्षरश्रीरकारमकार २५

॥ अथ युद्धारम्भः ॥

॥ सुमिरण ॥

॥ छन्द आल्हा ॥

मैं पद सुमिरौं तेहि योगी के वीणा सदा रहै जेहि हाथ।
लोक लोकमें जो बिरचतहैं गावत सदा रामगुणगाथ॥ १॥
नाश करावतहैं असुरनको पुरवत सदा सुरनके काज।
ऐसे योगी श्रीनारदजी हमरे माननीय शिरताज॥ २॥
पुनि मैं सुमिरौं मुनिनायक को जो हैं सत्यज्ञान गुणखान।
सत्यवती पाराशरनन्दन मुनिवर व्यासदेव भगवान॥ ३॥
अष्टादश पुराण जिन भाषे तिनके नाम कहौं हर्षाय।
ब्रह्मपुराण पद्म अरु बिष्णू बावन नारदीय सुखदाय॥ ४॥
मत्स्य ब्रह्मवैवर्त भागवत अरु शिव अग्नि भविष्य महान।
लिंगपुराण कूर्मपुनि गारुड़ बावन अरु ब्रह्माण्ड पुरान॥ ५॥
मार्कण्डेय स्कंद जे गावत पावत सकल जगत कल्यान।
पुनिसो सुखी रहत निशिबासर अंतिमलहतमोक्षनिर्वान॥ ६॥
छोंड़ि सुमिरनी अब मैं बरणौं आगे युद्धकाण्ड को हाल।
नारायण मुकुंदको आल्हा चितदै सुनहु वृद्ध अरु बाल॥७॥
उदय दिवाकर भे पूरबमें किरणन कीन जगत उजियार।
सजी कचहरी रामचन्द्रकी भारी लागिरहा दरबार॥ ८॥
जामवंत सुग्रीव बिभिषण अंगद हनूमान बलधाम।
द्विविद मयंद नील नल आदिक बैठे बड़ेबड़े सरनाम॥९॥

बैठे आसन श्रीरघुनन्दन सब मंत्रिनसे कही सुनाय।
करौ तयारी अब लरिबे की लंका कूच देउकरवाय ॥१०॥
इतनी सुनिकै जामवंतने सिगरी सेना लई सजाइ।
सजिगै योधा सब सेनाके लश्कर कूच दीन करवाय ॥११॥
बानर जूहा करि करि हूहा धावत चले पूँछ तन्नाय।
कोऊ मटकै कोऊ चटकै डपटत चलैं परस्पर धाय ॥ १२ ॥
जय जय बोलत रामचंद्रकी जय सुग्रीव बीर हनुमान।
जामवंत अंगद जय बोलत हर्षित चले सकल बलवान॥१३॥
डंका बाजो रामादलमें नभमें शब्द गयो सो छाय।
डेढ़ घरीकेरे अरसामें लंका घेरि लई तिनजाय ॥ १४ ॥
यक हरिकारा दौरत आवै सो रावण से कही सुनाय।
सेना आई रामचंद्रकी अपनी फौज लेहु सजवाय ॥ १५ ॥
इतनी सुनिकै दशकंधर ने सेनापतिको लियो बुलाय।
सेन सजाय जाहु बानरदल मारौ खेदि चित्त हुलसाय ॥ १६॥
पहिले डंका के बाजत खन निश्चर सभी भये हुशियार।
दुसरे डंकाके बाजत खन योधन हाथ गहे हथियार ॥ १७ ॥
गर्जत धाये सब निश्चरगण लीन्हे बड़े बड़े हथियार।
भिंदिपाल तोमर मुग्दर अरु परिघ प्रचण्ड शूल तलवार १८॥
फरसा पर्वत खण्ड सांगिवर खांडा लिये दुधारा हाथ।
लिये कमानी एक हाथमें शोभित तीर कैवरी साथ॥ १९ ॥
बड़ि बड़ि बरछी तिरछी सोहैं तिन में धरी चीरवां धार।
हाथी चढ़ैया हाथिन चढ़िगये बांके घोड़न के असवार ॥ २०॥
मेघकी गरजनि निश्चर गरजैं डौंरू ढोल चंग करताल।
बजैं नगारा औ सहनैया बाजैं हाउ हाउ करनाल ॥ २१ ॥

उतते आई रावण सेना इतते सेन बानरन क्यार ।
जय जय बोलैं रामचंद्रकी जय जय लषण शेष अवतार २२॥
ढोल पखावज बाजन लागे शंखकी होनलाग धुधकार ।
बजे नगारा ऊँटन ऊपर जिनका होवै शब्द अपार ॥ २३ ॥
ढाढ़ी करखा बोलन लागे तिनको शब्द रह्यो नभछाय ।
धूरि उड़ानी आसमानलौं तासों सूरज गये छिपाय ॥ २४ ॥
जैसे गिरिसों टीड़ी निकसै तैसे चली सेन समुदाय ।
छायअँधिरियागइ दशहूँदिशि आपनपरैनहाथादिखाय ॥२५॥
डगमग डगमग पृथिवी डोलै थर थर रहे शेष थर्राय ।
दोऊ सेना दल बादल सों पहुँची समरभूमि में जाय ॥२६ ॥
दोनों सेना एक मिल है के बीरन रहे बीर ललकार ।
अस्त्रशस्त्र सब मारन लागे जिन के मारु मारुउ च्चार ॥२७ ॥
गदा कि चोटैं कोउ कोउ मारैं कोउ कोउ देयँ परिघ केघाय ।
कोउकोउ हनिकै मुष्टिकमारैं कोउकोउ देवैंशूल चलाय ॥ २८॥
हनि हनि मुद्गर बानर मारैं निश्चर गिरैं मूर्छा खाय ।
कोऊ बाणसों शिरको काटैं कोऊ देवैं भुजा गिराय ॥ २९ ॥
कोउ ललकारैं कोऊ पछारैं कोऊ मारैं चक्र उठाय ।
सेना बिचलि गई रावण की निश्चर भागे प्राण बचाय ॥३० ॥
हाहाकार भयो लंका में रोवत सकल जार बेजार ।
सबमिलि देहिं रावणहिं गारी लीनी दुष्टमृत्यु हंकार ॥ ३१ ॥
सुनी खबर यह जब रावण ने हमरी फौज गई बिर्राय ।
सकलनिश्चरनकोडपटचो तेहिं सबसे बोलिउठोरिसियाय ॥३२॥
पांव पिछारी जो भट धरि हैं मरिहौं ताहि कराल कृपान ।
उग्र बचन सुनि सकल डेराने फिरिकैलरन लगेबलवान ॥३३॥

कठिन मारु तब मारन लागे मारैं शस्त्र प्रचार प्रचार।
भयआतुर कपि भागन लागेमनमेंहारि मानिमनमार ॥ ३४॥
कोउ पुकारै हनूमान को कोऊ जामवंत सुग्रीव।
कोऊ पुकारै अंगदजी को कोऊ लषन राम बलसीव ॥३५॥
सुनि दल विचलत अंजनिनन्दन तुरतै तहां पहूँचो आय।
कूदिके आयो मेघनाद पै अरु ललकार दीन चिल्लाय ॥३६॥
मुद्गर मारा यक रथ ऊपर रथ के टूक टूक हो जायँ।
दुसरे गदाकेर लागत खन सारथि गिरा धरणिमें आय ॥ ३७॥
पुनि एक मेघा की छाती में मारी लात धाय हनुमान।
लातके लागतही धरणी में मूर्छित गिरो मेघ बलावन ३८ ॥
अंगद सुन्यो गयो हनुमत है निश्चर सेन अकेला धाय।
धाये अंगद तब हनुमत पै सुमिरत राम २ रघुराय ॥ ३९ ॥
लंका जाय भिरे दोऊ भट मंदिर बहुत ढहाये जाय।
नारिबृन्द कर पीटहिं छाती वेई कपि आये फिरिधाय ॥ ४० ।
काहू लात मारि धर पटकैं फेंकैं जहां राम सुखधाम ॥
तिनके नाम विभीषण भाखैं सुनतै राम देहिं निजधाम ॥४१॥
ऐसे हैं कृपालु रघुनन्दन असुरन देत परम शुभ धाम।
ते मतिमंद न भजहिं रामकहँ करुणासिंधु रामसुखठाम ॥ ४२ ॥
संध्या समय जानि अंजनिसुत अंगद चले राम के पास ।
पहुँचे जाय रामढिगद्वौकपि हर्षितहृदय दर्शकी आश ॥ ४३॥
हनूमान अंगद गवनत खन निश्चर भिरे जाय कपि सैन।
बहुतक युद्ध करैं माया करि जान्यो मर्म रामसुख दैन ॥४४॥
बोलि लिये अंगद अंजनिसुत भेजे सेनमाहि रघुवीर।
सुनत कोपि धाये दोऊ कपि पहुँचे जाय सेन रणधीर ॥ ४५॥

पुनि रघुनन्दन चाप चढ़ायो मार्यो बाण एक बिकराल ।
भयो प्रकाश नाशसब माया धाये कोपि कोपि सब भाल॥४६॥
हनूमान अंगद रण गाजैं भागैं सकल असुर भयमान ।
संध्या समय जानि निश्चर हति आयेसबैजहां भगवान॥४७॥
राम कृपा करि चितवा जबहीं तुरतै भये विगत श्रम भाल ।
उह्यांदशानन अतिविस्मययुतआधी सेनभई बशकाल ॥४८॥
कहँ लग बरणौं मैं रामायण रामायण शतकोटि अपार ।
रामचरित्र संतमनभावन पावन जगत पुण्य आगार॥ ४६ ॥

॥ इतियुद्धारंभसमाप्तः॥

॥ मेघनादकी पहिली लड़ाई ॥

❁ सुमिरण ❁

॥ छंद आल्हा ॥

चैत उजेरी तिथि नवमी में तीनौं लोकनाथ करतार।
सरयू निकटअयोध्याजी में लीन्हों रामचन्द्र अवतार॥ १ ॥
तिन रघुनन्दन के पद बन्दौ बन्दौ बहुरि जानकी माय।
लक्ष्मण यतीकेर पद बन्दौं बन्दौं भरत शत्रुहन भाय ॥ २ ॥
गुरु वशिष्ठजी के पद सुमिरौं सुमिरौं भरद्वाज महराज ।
विश्वामित्रकेर पद सुमिरौं सुमिरौं नारदादि मुनिराज ॥ ३ ॥
पुनि सुग्रीव दास अंगद पद सुमिरौं बीर बली हनुमान ।

जामवंतनल नीलहिं सुमिरौंद्विविद मयंद आदिबलवान ॥४॥
छोड़ि सुमिरनी अब आगे मैं बरणौं मेघनाद संग्राम।
नारायण मुकुंदको आल्हाचितदै सुनहु छोड़ि सबकाम ॥५॥

॥ सवैया ॥

श्रीसूर्यप्रकाश भयो जबहीं तब चन्द्र प्रकाशलखाय परैना।
जब शब्द सुनाय परै रणको तब मत्त गयन्द दिखाय परैना ॥
पुनि शूर सिंगार करैं रणको तब नारि सिंगारपै ध्यान धरैना।
है बात यही समरत्थकेरी की भाखी टरै पर बात टरै ना ॥६॥

॥ छन्द आल्ह ॥

बहुतक शूर बीर मंत्रीगण लीन्हे साथ शूर सरदार।
अपनी सभा आय करि बैठ्यो रावण लंकपती तेहिबार ॥७॥
रावण बोल्यो तब बिस्मययुत तुम सुनि लेउ मंत्रिगण बात।
आधा कटक कपिन संहारयोकेहिविधिकरौंशत्रुकीघात ॥८॥
मालवंत मंत्री अति बूढ़ा बोल्यो हाथ जोरि शिरनाय।
अशकुन होत नित्य लंकामें जबते हरी जानकी माय ॥९॥
जिनकी महिमा बेदन बरणी पूरण ब्रह्म राम करतार।
जब जब भीर परत भक्तनपै तब तब आय लेतअवतार ॥१०॥
हिरण्याक्ष हिरणाकुश मारो मारो मधुकैटभ बलवान।
सोई नगर अयोध्याजीमें उपजे कृपासिंधु भगवान ॥११॥
जेहिपद भजैं शम्भु कमलासन तासों कौन बैर तकरार।
परिहरि बैर देहु बैदेही सेवहु दीनबन्धु करतार ॥ १२ ॥
सुनिकै बातैं मालवन्तकी रावण लगीं बाणसम जाय।

रिसहा ह्वैके बोलन लाग्यो नयनन रही लालरी छाय ॥ १३॥
बूढ़ भयसि नतु मरतेउँ तोहीं अब क्यों बदन देखावत मोंहिं ।
रिसहा हुइके मंत्री चलिभा मरि हैं रामचंद्र शठ तोहिं ॥ १४ ॥
मेघनाद पुनि बोलन लाग्यो काहे शोच करत महराज ।
मुहरा मारौं मैं तपसिनको मारौं सैन होय सबकाज ॥ १५ ॥
कौतुक प्रात देखियहु मोरा मैं नहिं करौं बात अभिमान ।
सुनि सुतबचन हर्षि दशकंधर दीनो बहुत भाँति सन्मान १६॥
प्रातहोत आई कपि सेना घेरे लंक चारिहूँ द्वार ।
भयो कोलाहल गढ़लंकामें पहुँची खबर मेघ दरबार ॥ १७ ॥
समाचार पुनि रावण पायो सेनापतिको लियो बुलाय ।
हुक्म लगाय दियो लश्करमें सिगरी सेना लेउसजाय ॥ १८॥
बजै नगारा निश्चर दलमें सिगरी सेन होय तैयार ।
निमक अदा करियोयहि अवसर जिसमें नाम होय संसार१६
बजो नगारा रावण दलमें सिगरी फौज भई तैयार ।
पहिले नगारामें जिनबन्दी दुसरे बांधिलिये हथियार ॥ २० ॥
तिसरे डंकाके बाजत खन लश्कर कूच दीन करवाय ।
बिविध अस्त्र गहि निश्चर धाये पहुँचे भालुसेनमें जाय २१ ॥
मेघनाद बहुगर्जन लाग्यो बोल्यो बचन कोपि तेहिबार ।
राम लखण सुग्रीव विभीषण कहँपर हनूमान सरदार ॥ २२ ॥
बेगि बतावौ यहि अवसर मोहिं मारौं एक एक शरतान ।
असकहिकोपिश्रवणलगतान्योमारतकठिनबाणसन्धान ॥२३॥
बानर निश्चर दोउ दल मिलिगे लरि हैं शस्त्रनग्न तलवारि ।
क्षमा क्षारहुइ गगनसिधिरीलहरनलगीबिपतकीब्यारि ॥२४॥
इत उत दौरे मेघनाद तब करमें धनुष बाण सन्धानि ।

सन्मुख निरखि सिंहवतगरजैधरणीहिलनलगीभौमानि ॥२५॥
कौन बीर लंका चढ़ि आयो उपजो कौन शूर बलवान।
दलसे निकसि सामने आवै कबलग दबकिबचावैप्रान ॥२६॥
जिसके प्राण हरण इत आये कुछतौ भेंटि लेय उरमान।
टुकतौ दोउ शीशपै धरिदेइतो बिनदया हरहि धन प्रान॥२७॥
यह कहि रथसों मेघनाद तब बरसन लाग बाणझरि लाय।
सरसर शायक धावन लागे रणमां मन्न मन्न गा छाय॥२८॥
खट खट बोलैं ते हाड़न मां गप गप पेट पार ह्वै जायँ।
शायक मारे दशहूँ दिशि में दिनमें गई अँधेरियाछाय॥२९॥
भागन लागे भालू बानर काहू धरा धीर नहिं जाय।
बड़े लड़ैया रणमें रहिगे कायर चलिभे युद्ध पराय॥३०॥
भागत सेना हनुमत देखी धावा क्रोधवन्त जनु काल।
पर्बत एक लीन्ह मेघापै हनिकै डारि दीन ततकाल॥३१॥
पर्बत देखि गयो नभ सोई पुनि सो गयो रामढिग नीच।
कहि दुर्वाद शस्त्र बहु डारे काटे तौन रामने बीच॥३२॥
बहु प्रकार माया करि खेलै जैसे सर्प गरुड़ को खेल।
देखि सेन व्याकुल रघुनंदन मारो बाण हरी सब जेल॥३३॥
व्याकुल देखि भालु सेनातब लक्ष्मण अंगदादि कपिसाथ।
आयसु मांगि रामसे गवने लीन्हे बाण शरासन हाथ॥३४॥
लक्ष्मण पहुँचे निजसेनामें निश्चर धीरज गये उड़ाय।
बड़े क्रोध सों श्री लक्ष्मणजी छोड़न लगे बाण झरलाय ३५
बिषधर बाण छोड़ि रावण दल लाखन दीन्हे शूर गिराय।
मघा के बूँदन शायक बरसै रणमें गई अँधिरिया छाय॥३६॥
कहँ लग बरणों मैं यहि अवसर व्याकुल देखि देखिनिजसेन।

मेघनाद आयो लक्ष्मण ढिग बोल्यो महाकोप करिबैन ॥३७॥
हमरी तुम्हरी अब बरणीहै दुइमें एकु आंकु रहिजाय।
यह कहिभिरे दोउ तेहि अवसर लक्ष्मण लन्हि बाण रिसियाय३८
एक बाणसों हनो सारथी पुनि रथ चूर चूर ह्वै जाय।
एक बाण मेघाउर लाग्यो तुरतै गिरो धरणिमें आय ॥३६॥
लक्ष्मण शायक तकि तकि मारैं मेघा धरणिबीच गिरिजाय।
पुनि उठि युद्ध करै लक्ष्मण से काहू भांति मात नहिं खाय४०॥

॥ इति ॥

❋लक्ष्मणजीके शक्तिलगना❋

॥ छन्द आल्हा ॥

मेघनाद मन सोचन लाग्यो अब यह अवशि हरै मम प्रान।
सुमिरन करिकै जगदम्बा को अपनो धनुष लीन्ह संधान ॥१॥
वीरघातिनी शक्ती लैकै मारी खैंचि सांगि रिसियाय।
शक्ति बाण लाग्योछातीमें लक्ष्मण गिरे मूर्छाखाय ॥ २॥
सुधि नहिं रही देह अरु मनकी शोणित अंग रह्यो लिपटाय।
धनुष बाण हाथनसेछूट्यो यह लखि मेघनाद ढिग आय ॥३॥
मेघनादसम कोटिन योधा श्रीलक्ष्मणको रहे उठाय।
जगदाधार अनन्त शेषजी सो नहिं उठे चलाखिसियाय ॥४॥
उठे न लक्ष्मण किसी युक्तिसे हारा मेघनाद बलवान।
उही समैयाके अबसरमै पहुँचो आय बीर हनुमान ॥५॥

लैके तुरतै श्रीलक्ष्मण को पहुँचे रामचन्द्र ढिग जाय।
देखिहकीकति निज भैयाकी रघुबरसोचि सोचिरहिजायँ ॥६॥
बहुत बिलाप कीन रघुनन्दन सो मैं कहँलग करौं बखान।
जामवंतबोले तेहि अवसर तुम सुनि लेउ वीर हनुमान ॥७॥
वैद्य सुखेन बसै लंकामें तिन को जल्दी लाउ लिवाय।
धरि लघु रूप अंजनीनन्दन तुरतै तहां पहूँचो जाय ॥ ८ ॥
वैद्य सुखेन नींद में सोवै हनुमत चित्त करै अनुमान।
जानि बिलँब तासु मन्दिरयुत लायो तुरत वीर हनुमान ॥६॥
वैद्य जगायो तब हनुमत ने अरु सब हाल कह्यो समुझाय।
नाड़ी तुरत देखि लक्ष्मणकी वैदा कहन लग्योमनलाय ॥१०॥
उत्तर दिशा हिमालय पर्वत तहँ पर मूरि सजीवन नाम।
दीपक जलै तासु तरु नीचे लावौ तुरत होयँ सब काम ॥११॥
नहिंतौ निशि बीते जब लक्ष्मण होवैं प्रात होत बिन प्रान।
सुनि कै बातैं वैद्यराजकी औषध लेन चल्यो हनुमान ॥ १२॥
उहां दूत पहुँचो यक लंका अरु रावण से कही बुझाय।
गयोसंजीवनहितअंजनिसुत रावणकालनेमि गृहजाय ॥ १३॥
रावण बोल्यो कालनेमि से अब गाढ़े में आवौ काम।
मारा लक्ष्मण मेघनादने हनुमत गयो औषधी धाम ॥ १४ ॥
जाय गैल रोंकौ हनुमत की नाहिं कौने दिन ऐहौ काम।
कालनेमि सुनि बोलन लाग्यो पूरण ब्रह्मरामसुखधाम ॥१५॥
तिनसे बैर करे नहिं उबरो ताते बैर देहु विसराय।
बहुतक समुझायो निश्चरने मनमें तासु एकनहिंआय ॥१६॥
गुस्सा हुइकै रावण बोल्यो तेरो काल रह्यो नियराय।
बात बनावतहै हमरे ढिग मारों तोहिं शीश उड़िजाय ॥१७॥

कालनेमि मन सोचन लाग्यो दोउ विधि आयो काल हमार ।
गैल रोकिहौं मैं हनुमतकी सोभी हनै मोहिं यहि बार ॥१८॥
जो हनुमतकर मारो जैहौं तो मैं रहौं स्वर्ग में जाय ।
यहमन समुझि आयमारगमें पहुँचाकालनेमि तहँआय॥१९॥
पहुँचि अगाड़ी जादूबलसे दीनों कपट जाल फैलाय ।
बाग लगायो अति सुंदर तहँ पंछी बोलि रहे हर्षाय ॥ २० ॥
कहँलग बरणौं परम रम्यता मुनिमन देखि लोभि रहिजाय ।
वेष बनाये निश्चर बैठा हनुमत तहां पहूँचे जाय ॥ २१ ॥
बातन बहलाया है निश्चर पूँछी कुशल छेम तेहि काल ।
देखौं सकल युद्ध यहँ बैठे जितिहैं रामचन्द्र ततकाल ॥ २२॥
बात करनकी नहिं फुरसत है लेहौं मंत्र लौटती बार ।
माँगा जल तेहिंदीन कमंडलु लावौ नीर तात यहिबार॥२३॥
लैकै पात्र तालमें पैठ्यो मकरी दबी आय कपि पाँव ।
सुन्दर नारी का तनु धरिकै बोली हाथ जोरि तेहि ठाँव ॥२४॥
शापसे छूटीहौं मुनिजीके हम पर दया करी भगवान ।
धोखे न रहियो तुम साधू के यह है कपटरूप बलवान ॥२५॥
इस को भेजा है रावणने तुम्हरे हननहेत हनुमान ।
यह कहि स्वर्गलोकपगुधारी मुनिढिगचल्यो बीरबलवान२६ ॥
जायके पहुँचो कपटमुनींपै हनुमत बचन कह्यो रिसिआय ।
पहिले लेलो गुरुदाक्षिणा पीछे लिहौं मंत्र मैं आय ॥ २७ ॥
इतनी कहिकै मुगदर मारा निश्चर स्वर्गलोक चलिजाय ।
हनुमत चले हिमालय पर्वत पहुँचे सुमिरि राम रघुराय ॥२८॥
दीपक देखे वृक्ष वृक्षतर मनमें सोचि रह्यो हनुमान ।
तुर्तउखाड़ लियो पर्वतको लैकै चल्यो सुमिरि भगवान ॥२९॥

रस्ता लीनी लंका गढ़की है अति होनहार बलवान।
जबहिं अयोध्या ऊपर आयो मारा भरतलाल तकिबान॥३०॥
बाणके लागत हनुमत गिरिगा सुमिरत राम राम रघुराय।
जानिकै सेवक रामचन्द्रका पहुँचे भरतलाल ढिगआय॥३१॥
होश भयो जब हनूमान को तुरतै उठो अंजनी लाल।
कंठ लगायो भरतलाल ने हनुमत सभी सुनायो हाल॥३२॥
करि पछितावा भरतलालने बोले हनूमान ढिग बैन।
जल्दी पहुँचौ गढ़ लंकामें जीवैं लखण होय सुख चैन॥३३॥
बैठो गिरिसमेत शरऊपर तुमको बेगि देउँ पहुँचाय।
इतनी सुनिकै हनुमत बोले हमको हुक्म देउ फर्माय॥३४॥
नाथ तुम्हारी कृपादृष्टिसे सबविधि भला करैंगे राम।
इतना कहिकै हनुमत चलिभे अरु चरणौमें कियाप्रणाम॥३५॥
उहाँ देखि लक्ष्मणहिं राम तब बोले बचन मनुज अनुहार।
अर्ध रात्रि गइ कपि नहिं आयो कैसी करूँदैवयहिबार॥३६॥
मम हितु लागि तजेउ पितु माता बनमें बिपतिसहेउममसाथ।
उठहु बिलोकि मोरि बिकलाईमेटहुअयशताततनिजहाथ॥३७॥
जो जनत्यों बन बंधुबिछोहू नाहिं पितुबचन मानतेउँ सोइ।
सौंप दिया माताने तुमको सो मैं उतर देहुँकिमिजोइ॥३८॥
नगर अयोध्याके नर नारी करि हैं प्रगट मोर उपहास।
की निजनारीके कारणसे कीना सगे भ्रातका नास॥३९॥
हा लक्ष्मण मम प्राण पियारे हा प्रिय बंधु देखि मम ओर।
हा ममजीवनउठहु वेगितुम अबनहिं देहु दुःखमोहिंघोर॥४०॥
यहि विधि बहु बिलपत रघुनन्दन तबलग आयगये हनुमान।
औषधि लीन सुखेन वैद्य ने मनमेंसुमिरि रामभगवान॥४१॥

मूरि सजीवन बूटी लैकै सो लक्ष्मण को दई सुँघाय ।
औषधि सूँघतही लक्ष्मणजी तुरतै उठे सुमिरि रघुराय ॥ ४२ ॥
क्षुधित मनुष्य अन्न जिमि पावै जैसे मिले बच्छ से गाय ।
तैसेइ भेंटे श्रीरघुनन्दन अनुजउठाय लीन उरलाय ॥ ४३ ॥
हर्षित सकल भालु कपि सेना पुनि कपि दीन वैद्य पहुँचाय ।
नारायणउर मनोकामना पूरण करौ राम रघुराय ॥ ४४ ॥

॥ इति ॥

॥ अथ कुम्भकर्णकी लड़ाई ॥

॥ सुमिरण ॥

॥ छन्द आल्हा ॥

सुमिरि भावनी श्रीजगरानी दुर्गा महाकालिका माय ।
दानव मारे मधुकैटभ से अरु महिषासुर दीन गिराय ॥ १ ॥
चण्ड मुण्डको भक्षण कीना कीना रक्त बीजका नाश ।
शुंभ निशुंभ बिदारे माता निशि दिनकरौं तुम्हारी आश ॥२॥
हाथ जोरिकै माता मांगौं राखौ अंब नाम की लाज ।
सदासे दानी नाम तुम्हारो प्रतिदिन करौ संतके काज ॥ ३ ॥
रूप अनेक धरे जगदम्बे अरु भक्तन की करी सहाय ।
तैसे दृष्टि दया की करिकै मेरे कण्ठ बिराजौ आय ॥ ४ ॥
छोंड़िसुमिरनी आगे बरणौं रघुबर कुम्भकरण मैदान ।
नारायणप्रसादको आल्हाचितदै सुनहुसुमिरि भगवान ॥ ५ ॥

॥ छन्द ॥

श्रीमतीभवानीचरणशरणमेंआयादासतुम्हारीजी
श्रीजगरानीसंतनबरदानीटारो बिपतिहमारीजी ॥
महिमानितगावैं वेदबिमलयशगावैं ब्रह्मपुरारीजी ।
दुखदूरिकरौनारायणकोजगदम्बभरोसाभारीजी६

॥ छन्द आल्हा ॥

खबरि पहूँचीदशकंधर पै लक्ष्मण बचे औषधी खाय ।
अति विषादयुत भयो लंकापति मनमें बहुत २ बिलखाय ॥७॥
ब्याकुल कुम्भकरणपहँ गवनो करि बहु यत्न जगावत भ्रात ।
जागि उठोनिश्चरतेहिअवसरमानहुँतासुकालसम गात ॥ ८ ॥
कुम्भकरण पूँछयो रावणसे काहे बदन गयो कुम्हिलाय ।
सकलकथा भाखीदशकंधरजेहि बिधि हरीनारि रघुराय ॥ ९ ॥
जेहि बिधि कटी नाकभगनीकी औखरदूषणादि बध कीन ।
सीताहरी लंककपिजारीसोसबहालबिलखिकहि दीन ॥ १० ॥
सुने बचन जब दशकंधरके अतिशय कुम्भकरण बिलखान ।
सीताजगदम्बा हरिआन्यो पुनि क्यों चहतआपकल्यान ११॥
नीक न कीन्हो तुम लंकापति अबम्बहिं आयजगायहुभाय।
अजहुँतात त्यागहुअभिमाना सेवहु रामचरण सुखदाय॥ १२॥
अहह बंधु तैं कीन खुटाई प्रथम न मोहिं जगायहु आय ।
जिनकेपायक हनूमान हैं हैं नहिं मनुज राम रघुराय ॥ १३॥
अब भरि अंक भेंटु म्वहिं भाई लोचन सफल करौं मैं जाय ।

श्यामगात सरसीरुहलोचन देखि हौं रामलषण मनलाय १४॥
फौज तुम्हारी हमैं न चहिये इकलो जाय लडूँ मैदान ।
पैरहटाऊँ नहिं पीछेको मारौं सकल सेन भगवान ॥ १५ ॥
भोजन लावौ सो मैं पाऊँ जाऊँ बेगि जंग मैदान ।
तुरतमँगाया भोजन रावण खाया कुंभकरण बलवान ॥ १६ ॥
मनमें सुमिरि राम रघुनन्दन चलिभा कुंभकर्ण बलधाम ।
आगेआय बिभीषण भेंटेउ तेहिंपदवंदि कहेउनिजनाम॥१७॥
अनुज उठाय हृदय महँ लायो बोल्यो सुनहु बिभीषण भ्रात ।
निश्चरवंशमाहिं शुभ भूषण धनि धनि रामभक्ततुमतात॥१८॥
बंधु वंश तैं कीन्ह उजागर सेवहु जाय राम रघुबीर ।
करिहौं समर जाय सेनामें मैं अब भयों काल वशवीर ॥१९॥
बंधुबचन सुनि फिरा बिभीषण आयउ रामचन्द्रके पास ।
नाथ पर्वताकार देह जेहि आवत कुंभकरण रणआश ॥२०॥
सुनत भालु धाये तेहि अवसर पहुँचे कुंभकरण ढिग जाय ।
अंगद हनुमदादि धाये तब धाये जामवंत कपिराय ॥२१॥
खर भर परिगा दोनौं दलमें योधन मारु मारु रट लागि ।
कुंभकरणबल पाय असुरगण मारैं अस्त्र शस्त्रभयत्यागि ॥२२॥
कुंभकरण ढिगगयो पवनसुत मारी एक मुष्टिका धाय ।
गिरयो धरणिलागतमुष्टिकके शिरधुनिकुंभ गयोमुरझाय ॥२३॥
पुनि उठि लरन लाग हनुमत से मारी मुष्टि एक उरमाहिं ।
चक्कर आयगिरोअंजनि सुत कछुसुधिरहीदेहकी नाहिं॥२४॥
गिरै न मुरै टरै नहिं टारे काहू भांति जीत नहिं जाय ।
जामवन्त अंगदसे योधा भुईंमें पटकि दिये रिसियाय ॥ २५॥
पुनि नल नीलहिं आनिपछोरेसि जहँ तहँ दियेपटकि बहुभालु ।

यहिविधिसकलसेन व्याकुलकरिगर्जतबारबारजनुकाल ॥२६॥
लैलै बहुत भालु निज मुखमें झोंकै बारबार खल राय ।
नाक कानसेनिकसिं निकसि पुनिमारैं असुरसेन समुदाय २७॥
दियो बढ़ावा कुंभकरण ने धाई सेन निश्चरन क्यार ।
मुहरा मारो सब बनरनको बानर बिकल भये तेहिबार ॥२८॥
बानर सकल पुकारन लागे सुनिये कृपासिंधु भगवान ।
देर करनकी नहिं बिरियाहै मारौ कुंभकरण बलवान ॥२९॥
दीन बचन सुनिकै रघुनंदन बोले सुनहु बिभीषण बैन ।
मैं अब जाहुँ कुंभकरण लक्ष्मणसहित सँभारहु सैन ॥३०॥
सिंहचालि गवने रघुनन्दन करमें लियेधनुष अरु बान ।
धनुटंकोर कीन्ह पहले प्रभु रिपुदल बधिर भयोसुनिकान॥३१॥
कुंभकरण देख्यो रघुबरको हर्षित मन में कीन्ह प्रणाम ।
सुमिरि हृदय नारदकी बाणी निरखत रामचन्द्रछबिधाम ॥३२॥
कोपे रामचन्द्र निश्चरदल छोड़न लगे बाण बिकराल ।
रघुपति बाण मर्मकिमिबरणौंमानहुँ चले कालसमव्याल ॥३३॥
विषधर शायक रामचन्द्र के सर सर चले धनुषसे धाय ।
ते सब काटैं निश्चर दलको निश्चर भागे प्राण बचाय ॥३४॥
जैसे सावन मेघा बरसै तैसे दीन बाण झरिलाय ।
बड़ बड़ शूर वीर शर लागत रण में गिरैं मूर्च्छा खाय ॥ ३५ ॥
भागी सेना कुम्भकरण की काहू धीर धरा नहिं जाय ।
तड़प्योकुम्भकरण तेहि अवसर रघुपतिपासगयो समुहाय॥३६॥
क्रोधित हुइकै कुँम्भकरण ने करमें पर्वत लिया उठाय ।
बाण जो मारचो रामचन्द्रनेपर्बत सहितहाथ कटिजाय ॥ ३७॥
वही समैया कुम्भकरण ने पर्वत लिया दूसरे हाथ॥

बाण अगिनियाजोड़िधनुषमेंसोऊकाटिदिया रघुनाथ ॥ ३८ ॥
कुम्भकरण सोहै तहँ कैसे जैसे पक्षहीन गिरि सोय।
सिंह कि गर्जनि कुम्भा गरज्यो हाहाकार कालसम होय ३९॥
रिसहा हुइकै रघुनन्दन ने मारा बाण एक बिकराल।
धरते भिन्नशीश तेहि हुइकै सोशिर परा जहां दशभाल॥४० ॥
देखि शीश रावण अति बिलप्यो हाहाकार परो रनिवास।
बहु बिलाप दशकंधर करई उपजोहृदयमाहिंअतित्रास ॥४१॥
यहि विधि रामचन्द्रने मारयो रणमें कुंभकरण खलराय।
जय जय बोलैं सकल देवता नभसे फूल रहे बरसाय ॥४२॥
हर्षित हुइकै सकल भालुगण बोलैं रामचन्द्र जयकार।
नारायण प्रभुके गुण गावत सोई भक्त धन्य संसार ॥४३॥

॥ इति ॥

मेघनादकी दूसरी लड़ाई ॥

❀ सुमिरण ❀

॥ छन्द आल्हा ॥

मै पद बंदौं शिव शंकरके जेहि शिर गंग भंग आधार।
अंग अंग में भस्म रमाये नन्दी वृषभनाथ असवार ॥ १ ॥
भाल चन्द्रमा अति शोभित है धारे कण्ठ मुंडकी माल।
वृश्चिक सर्पआभरणतनमे अम्बुजसदृश नयन त्रयलाल ॥२॥

जटा जूट अर्धंग बिराजै आधे अंग अंबिका माय।
प्रेत पिशाच भूत सँग डोलैं बोलैं बचन बनाय बनाय ॥३॥
डमरू हाथ त्रिशूल बिराजै नयनन रही लालरी छाय।
हैं बरदानी सब देवनमें महिमा रटैं देव समुदाय ॥ ४ ॥
सुखराशी कैलासनिवासी हैं अविनाशी शंभु सुजान।
सेवक सुखदायक सबलायक पूरण करैं दास मनमान ॥५॥
छोंड़ि सुमिरनी अब आगे मैं बरणौं मेघनाद बधहाल।
नारायण मुकुन्द कृत आल्हा चितदै सुनौ वृद्ध अरु बाल ॥६॥

॥ सवैया ॥

सूर्य छिपै अदरी बदरी अरु चंद्र छिपै अम्मावश आये।
रैनि अँधेरी में चोर छिपैं अरु मोर छिपै बनकी लर पाये ॥
घूंघट ओट में नैन छिपैं अरु चंचल नारि छिपै न छिपाये।
भाषत राम मुकुंद सुनौ रणधीर छिपै नहिं हाथ उठाये ॥ ७ ॥

॥ छन्द आल्हा ॥

शीशधुनि देखो कुंभकरणको रावण बिलखिबिलखि रहिजाय।
बड़ाभरोसा मोहिं तुम्हरोथो सो तुमदगा खेलिगये भाय ॥८॥
किस के बलसे लडूँ शत्रुसे बिगड़े सभी काम मन मान।
हमरी सेना आधी रहि गइ भैया कौन रहा बलवान ॥ ९ ॥
उही समैया के अवसर में आया मेघनाद बल धाम।
हाथजोरिकै बोलनलाग्यो तुमपितुंसोचकरौ क्यहिकाम ॥१०॥
ममता छोड़ि देउ भ्राता की रोदन वृथा करौ नहिं ताइ।
देखहु कात्हिमोरि मनुसाई अबहिंबहुतक्याकरौं बड़ाइ ॥ ११॥

इष्टदेव सन जो बर पायउँ सो सब तुमहिं सुनायहुँ नाहिं ।
जोकछु मरजी शिवशंकरकी दूजी और होनकीनाहिं ॥ १२॥
प्रात होत जाऊँ कपिदल में मारौं खेदि खेदि सरदार ।
काटि लेउँ दोऊ तपसिन को तबतौ मेघा नाम हमार ॥ १३ ॥
धीरज राखौ अपने मनमें पूरण सभी होयगो काज ।
मारि भगाऊँ सब बानरदल बैठे राज करौ महराज ॥ १४॥
यहिविधि बात करत निशि बीती दिनकर उदयभयेनभआय ।
तुरत बुलायो सेनापतिको अरु यह हुक्म दीन फर्माय ॥१५॥
डंका बाजै मेरे दल में सिगरी सेन होय तैयार ।
पहलेनगारा के बाजत खन निश्चर सबै भये हुशियार ॥ १६ ॥
दुसरे नगारा के बाजत खन योधन बांधि लिये हथियार ।
तिसरे नगारा के बाजत खनलश्करकूचभयो तेहिबार ॥ १७॥
इतसे चली निशाचर सेना उतसे सजी ऋक्ष कपि सैन ।
हूहूकरिकै बानर दौड़े लीन्हे अस्त्र शस्त्र अति पैन ॥ १८ ॥

॥ सवैया ॥

युद्धको साज बनो दुहुँ ओरसे बीर बली रणधीर सयाने ।
बादल सो दल साजि चढ़े तेहि औसर की छबिकौन बखाने ॥
शूर महा बलवान सबै जिनको लखि कालहु हारि पराने ।
रामसुकुंद कहा बरणौंतेहि सैन्यको कायरदेखि डराने ॥१६॥

॥ कुंडलिया ॥

यारौ शायर दश भले कायर भल न पचास ।
शायर रणसन्मुख लड़ैं कायर प्राण किआश ॥

कायर प्राणकि आश भागि रणते वै जावैं ।
आपु हँसावैं लोग जगत में नाम धरावैं ॥
कहि गिरधर कबिराय बात चारौयुगजाहिर ।
शायर भले हैं पांच संग सौ भलेन कायर ॥ २० ॥

॥ छन्द आल्हा ॥

दबति अँधिरिया दलमे आवै हाहाकारी बीतति जाय ।
ढाढ़ी करखा बोलति आवै डंका होति गोलमे जाय ॥ २१ ॥
रणके बाजे बाजन लागे घूमन लागे लाल निशान ।
सिंहकी गर्जनि योधा गरजैं ऐंठत चलैंसुघरुआ ज्वान ॥ २२ ॥
मारु मारु सहनैया बाजैं बाजै हाउ हाउ करनाल ।
छम छम छम छम बजैपैंजनी दमकैअष्टधातु की नाल॥ २३ ॥
धूरि उड़ानी आसमान लौं सूरज रहे धुँधिमे छाय ।
दोनो सैना इकमिल हुइगइ काहू धीरधरा नहिं जाय ॥ २४ ॥
आवा मेघनाद निजदल में अरु यह सब सों कही सुनाय ।
मारौ मारौ दोउ तपसिन को कपिदलकटा देउकरवाय ॥ २५ ॥
इतनी कहिकै माया बिरची रथ चढ़ि गगन गयो रिसियाय ।
प्रलय कालसम गर्जन लाग्यो सुनतै भालुगये मुरझाय ॥ २६ ॥
बिविध अस्त्र कर गहि सो धावा मारन लाग निशाचरराय ।
दशहु दिशासे शायक छूटैमानहुँ मघा मेघ झरि लाय ॥ २७ ॥
धरु धरु मारु सुनै बानर गण देखि न परै कोउ तहँ बीर ।
गहिगहितरुअकाशकपिधावैंलखिनहिताहिचित्तनहिधीर ॥ २८ ॥
हनूमान अंगद नल नीलहिं कीन्हेसि बिकल सकल सरदार ।
लक्ष्मण अरु सुग्रीव बिभीषण जर्जर कीन देह शरमार ॥ २९ ॥

यहि विधि युद्ध करैमेघा तहँ अरु ललकार सुनावति जाय ।
मुर्चादेखा मेघनाद ने कोउ कोउ धरै पिछारी पायँ ॥ ३० ॥
तुर्त बढ़ाया रथ आगे को अरु योधन सों कही सुनाय ।
काहे पीछे पांव हटावो खायो निमक हमारो भाय ॥ ३१ ॥
पैर पिछारी को नहिं दीजौ यारो रखियो धर्म हमार ।
ऐसा समय नहीं मिलनेको आवै घड़ी न बारंबार ॥ ३२ ॥
इतनी सुनिकै निश्चर लौटे फिरिकै करन लगे तलवार ।
अपन पराया नहिं पहिंचानै जिनके मारु मारु उच्चार ॥ ३३ ॥
निश्चर दलमें जो मरजावैं सीधे स्वर्गलोक को जायँ ।
तीनि पहरकेरे अरसामें निश्चर पड़े भूमि में आय ॥ ३४ ॥
फौजैं कटि गईं मेघनाद की इकला खड़ा आप रहिजाय ।
तुर्त बढ़ाया रथ आगे को पहुँचा रामचंद्र पै जाय ॥ ३५ ॥
नागफांस में उनको बांधा अरु सब बीर लिये बँधवाय ।
खगपतिकेर धन्य प्रभुताई हर्षित मेघनाद खलराय ॥ ३६ ॥
व्याकुल कटक कीन्ह मेघाने हर्षित प्रगट कहत दुर्बाद ।
जामवन्त कहखल ठाढ़ोरहु सुनिकैबोलि उठयो घननाद॥३७॥
बूढ़ जानि शठ छांड़ेउँ तोहीं लागेसि अधम प्रचारन मोहिं ।
अस कहि ताहि त्रिशूलचलावा छीन्योजामवन्तलै सोइ॥३८॥
मारयो मेघनाद की छाती सो गिरिपरा धरणि मुरझाय ।
पुनि रिसाइपदगहिमहिपटक्योपटकैपुनिघुमाय रिसियाय॥३९॥
वर प्रसाद सो मराहि न मारे पदगहि फेंकि लंकपर दीन ।
इहां देवऋषि गरुड़ पठायेसो सब नागफांस गहिलीन ॥४०॥
सकल व्याल खाये एक क्षणमहँ माया बिगत भई तेहिबार ।
गहिगिरि वृक्षशस्त्र बिधि बिधिके धायेकीश लंकगढ़द्वार॥४१॥

जागी मेघनाद की मुर्छा पितहिं बिलोकि लाज अति लागि।
तुरतगयोउठिसो गिरिकन्दरहठकरिअजय यज्ञहितलागि॥४२॥
यह सुधि पाय बिभीषण बोल्यो सुनिये दीनबन्धु रघुनाथ।
मखहित गयोमेघगिरिकन्दरजोमखसिद्धिहोयतेहिहाथ॥४३॥
तौ काहू बिधि जीत न जाइहि अतिशयहोय काजकी हानि।
सुनिकै रामचन्द्र बुलवायो तुरतै अंगदादि हनुमान॥४४॥
लक्ष्मण संगजाहु सब मिलिकै मख को करौ बेगि बिध्वंश।
तुम लक्ष्मण मारेहु घननादै मारो खेदि निशाचरबंश॥४५॥
जामवन्त सुग्रीव बिभीषण सेना सहित रह्यो इकठाम।
आयसु पाय चली कपि सेना सुमिरत रामरामघनश्याम॥४६॥
जो तेहि बधे बिना मैं आवों तौ मैं नहीं दास रघुनाथ।
यहकहि लखणचले तेहिअवसर मारनहेत बेगि घननाथ॥४७॥
जाय कपिन देखा घननादै आहुति महिष रुधिर की देत।
यज्ञभंग कीन्ह्यो सब कीशन सो नहिं उठै सिद्धिकेहेतु॥४८॥
लातन मारैं सकल भालुगण तब लै शूल चला खल धाय।
सो आवा लक्ष्मणके सन्मुख गरजै मनहुँ मेघसमुदाय॥४९॥
यक त्रिशूल लक्ष्मणपर छोड़ा हनुमत गयो क्रोधमें छाय।
पैर पकरिकै चक्कर दीना अरु धरणी पर दियो गिराय॥५०॥
गुस्सा आयो मेघनाद को नयनन रही लालगी छाय।
बरछी मारी यक लक्ष्मण के सो लक्ष्मणने लई बचाय॥५१॥
बोले जामवन्त आगे बढ़ि मेघा तुम्है लाज नहिं आय।
अबकी ऐसा दैकै पटकूं हड्डी चूर चूर है जायँ॥५२॥
सुनिकै मेघनाद तब झपटा पकड़ा हनूमान को जाय।
तुरतै पटकिदियो पृथिवी पै अंगद पास गयो समिआय॥५३॥

पैर पकरिकै बालिपुत्रका अरु पृथिवीपर दिया गिराय।
झपटकै पटका जामवंतको योधा पड़े मूर्छा खाय ॥५४॥
झपटकै पुनि लक्ष्मणपै दौरयो लक्ष्मण गयो क्रोधमें छाय।
बाण अगिनियां छोड़न लागेअंतर्ध्यानभयोलखिताय ॥५५॥
बिविध बेष धरिकरै लराई कबहूं प्रगट कबहुं दुरिजाय।
शिखरएक लैसोखलधावालक्ष्मण काटि दीन गिरिआय ॥५६॥
मेघनादकी देखि लराई विह्वल भई सकल कपि सैन।
देखिबिकललक्ष्मणशर तान्योसुमिरनकीन रामसुखदैन ॥५७॥
बाण जो मारा मेघनादके धड़से शीश गिरो महि जाय।
भुजा काटि फेंकी तेहि मन्दिरसुरगणरहेफूलबरसाय ॥५८॥
मरती बार कपट तेहिं त्यागा लक्ष्मण रामचन्द्र धरिध्यान ॥
धन्य धन्य नहिंमेघनाद सम बोलतअंगदादि हनुमान॥५९॥
पुनि धड़ लै हनुमान सिधारे राखा जाय लंक के द्वार।
शिर लै आये रामचन्द्र ढिग आये सकल भालु सरदार॥६०॥
हृदय लगाय लीन लक्ष्मग को कीनी कृपा दृष्टि सब ओर।
विगत परिश्रम भये भालुगग ऐसी कृपा रामकी थोर॥६१॥

❋ सुलोचना सती ❋

तिसरो युद्ध भयो लंकामें यहि विधि मेघनादको काल।
नारायणरघुनाथ सुमिरि पुनिवरणौं सतीसुलोचनि हाल॥१॥
भुजा देखि कै अपने पतिकी रानी पड़ी मूर्छा खाय।
हाय हाय करि रोवन लागी बिपदा वर्णन करी न जाय॥२॥

बारह बर्ष तजै जो निद्रा भोजन अन्न हीन आहार ।
संग छोड़ि देय जो नारी को तेहिके हाथ मरै भरतार ॥ ३ ॥
इतना कहिकै खरी मँगाई दीनी तुरत भुजाहिं पकराय ।
दुचिता मेटौ मे रेसाई लिखिकै हाल देउ बतलाय ॥ ४ ॥
मेघनाद भुजने तेहि अवसर रणका हाल लिखा समुझाय ।
ब्रह्मा बिष्णु महेश देवता निशिदिन जाहि जपैं मनलाय॥ ५॥
अन्तर्य्यामी घट घट बासी जो अवधेश राम रघुराय ।
तिनके छोटे भैया लक्ष्मण हमको रणमें दीन गिराय ॥ ६ ॥
शीश हमारो रामचन्द्र पै अरु धड़ समर भूमि तड़पाय ।
पढ़ी हकीकति जबहिं सुलोचनि भुइमें गिरी मूर्छा खाय ॥७॥
बहुत बिलाप कीन रानीने सो मैं कहँलग करौं बखान ।
करत बिलाप गई नृप मन्दिर रानी जहां निशाचर भान ॥८॥
बहुतक समुझायो मन्दोदरि ताके मनहिं एकनहिं आन ।
शीश लेनहित चली सुलोचनि पहुँचीजहांरामभगवान ॥९॥
अस्तुति कीनी रामचंद्रकी मांगा शीश दीन्ह रघुनाथ ।
लाय चिता रचि सती हुइगई अरु सुरलोकगईपतिसाथ ॥१०॥
क्षेपक कथा जानि संक्षेपै बर्णन कीन बेगि यहिठाम ।
जो कोइ पढ़ै सुनै निशिबासरअंतिमचलाजायसुरधाम ॥११॥

इति सुलोचना सती ॥

॥ अहिरावणकी लड़ाई ॥

❋ सुमिरण ❋

॥ छन्द आल्हा ॥

सुमिरन करिकै रामचन्द्रको अरु लक्ष्मणपद शीश नवाय ।
भरत शत्रुहन अरु सीताके सुमिरौं चरण कमलशिरनाय ॥१॥
पुनिमैं सुमिरौं हनूमानपद सागररूप बुद्धिबलधाम ।
अंजनितनय संतसुखदायक लायक सुभट शूर संग्राम ॥२॥
रामदुलारे सीता प्यारे लक्ष्मण प्राणदान गुणखान ।
आशामेरी पूरण करिये हे बलवंत; बीर हनुमान ॥ ३ ॥
तुम्हरे अखाड़े मे गावत हौं बेड़ा खेइ लगैयो पार ।
जो जो अक्षर हनुमतभूलौं सो सबलिखिऔजीभहमार ॥ ४ ॥
मेघनाद सुतको सुमिरन करि रावण चित्त हाल बेहाल ।
सोचिसमुझि तुरतै पगुधारो मन्दिरजहांशंभु शशिभाल॥ ५ ॥
विविध भाँति सों पूजन कीनी धरिकै महादेव को ध्यान ।
मंत्राकर्षण जपने लाग्यो पुजवैं सकल काम मनमान ॥ ६ ॥
अहिरावण चित डुलो पताला आयो लंकपतीके पास ।
माथ नाय पूँछेउ रावणको काहे भयो चित तव त्रास ॥७॥
सुनिकै रावणने सब गाथा आदिहिते सब कही बखान ।
अहिरावण सुनिबोलनलाग्योनीकनकीननिशाचरभान ॥८॥
बहुतक समुझायो रावणको रावणमनहिं एक नहिं आय ।
फिरि आहिरावण बोलन लागा सुनलो तातबातमनलाय ॥ ९ ॥

यद्यपि योग्य मोहि ऐसी नहिं हरिहौं तदपि लखण रघुबीर।
जाय चढ़ैहौं मैं देवी में बैठे रहौ धरौ मन धीर॥ १० ॥
यह कहि गयो राम सेनामें निशिमें अंधकार रहछाय।
तहँ निश्चर मन सोचनलाग्योरक्षकहनूमान कपिराय॥ ११॥
बेष विभीषण को धारण करि अरु द्वारे ते पहुँचो आन।
हनुमत रोक्यों कहां जातहौतब अहिरावण लग्योबतान॥१२॥
संध्याकरन गये हम बैरी ताते भई देर मोहिं आज।
शीघ्र पहूँचूं मैं रघुबरपै नहिं तौ कोप करैं महराज॥ १३ ॥
आगे गयो देखि दोनौ को यारौ होनहार बलवान।
डारिमोहिनी सुमिरि भवानी कांधेधरयो लषणभगवान॥१४॥
कूदिके भागा तब अहिरावण अरु पाताल पहूँचो जाय।
होतप्रात देखे नाहिं रघुबर तब सब सेन गई बिकलाय॥ १५॥
जामवंत पूँछी हनुमत से हनुमत बहुत कह्यो समुझाय।
सुनतबिभीषण बोलनलाग्यो तुम सबसुनौ बात मनलाय १६ ॥
बेष हमारो धरि अहिरावण सो लै गयो लोक पाताल।
कौनसो योधाहै यहि दलमें जोपातालजाय यहिकाल॥ १७॥
जामवन्त बोले हनुमतसे हनुमत सुनलो कान लगाय।
जहँ जहँ बिपतिपरीहम सबपर तहँतहँ तुमहींकरी सहाय १८॥
सुनिकै हनुमत ठाढ़े हुइगे सब योधन को शीश नवाय।
सुरत धरी पाताललोककी पहुँचे एक क्षणक में जाय॥ १९ ॥
मकरध्वजहिं प्रबोधि द्वार पै पुनि तेहिं बांधि दीन समुझाय।
पुनि मकरध्वज बोलनलागा सांची जानि लेउ कपिराय॥२०॥
खबर जो पैहैं पिता हमारे जो हैं हनूमान कपिराज।
सेवक रामलखण के सो हैं सेवहिं बड़े बड़े महराज॥ २१ ॥

बोले हनुमत मकरध्वज से हौं मैं ब्रह्मचर्य्य व्रतधारि।
बात सुनाई तुम अचरज की कहँसे मोर पुत्र निरधारि॥२२॥
आग लगाके लंका कूदे आये जबहिं समुंदर धार।
पिया पसीना यक मछलीने ताते हुआ मोर अवतार ॥ २३ ॥
सुनिकै आगे बढ़े हनूमत धरि लघुरूप गये समुझाय।
पहुँचे मन्दिर अहिरावण के अरु फूलनमें रहे छिपाय ॥२४ ॥
कमलासन बैठो अहिरावण पूजन करै कालिका माय।
धूप दीप नैवद्य चढ़ाया अरु सब दीन्हे पुष्प चढ़ाय ॥ २५ ॥
जो नैवेद्य दियो देवीको सो हनुमान लीन सब खाय।
खुशी जानिकै जगदम्बाको मनमेंबहुत खुशीह्वैजाय ॥ २६ ॥
बड़े प्रेमसे पूजन करिकै भारी हवन कीन हर्षाय।
राम लखन को आगे करिकै बोला बचन गर्ब खलराय ॥२७॥
सुमिरन करलो इष्टदेव को जो अब तुमको लेय बचाय।
बोले रामचन्द्र निश्चर से तुम सुनि लेउ निशाचर राय ॥२८॥
यही भगवती मेरी रक्षक जाको नाम कालिकामाय।
तब अहिरावण मारन कारण दोनौ हाथमें खड्गउठाय ॥२९॥
हवन कुण्ड से हनुमत निकसे करि कै महाघोर चिक्कार।
छीनि खड्ग अहिरावण मारो दीनो हवनकुण्डमें डार ॥ ३०॥
मारी सकल सेन निश्चरकी औ मकरध्वज दीन छुड़ाय।
राज दिया पाताललोकका कांधे लिये लखण रघुराय ॥ ३१ ॥
सुरत लगाई कपि सेनाकी सेना माहिं पहुँचे आय।
सकल भालु कपि हर्षित हुइगेबोले जयति रामसुरराय ॥३२॥
क्षेपक गाथा अहिरावण की मैं संक्षेपहि करी बखान।
नारायणनितसुनै सुनावै निश्चय भक्तिबढ़ैभगवान॥३३॥ इति॥

॥ नारान्तक की लड़ाई ॥

॥ सुमिरण ॥

॥ छन्द आल्हा ॥

सुमिरौं श्रीगणेश गिरिजापति सुमिरौं पारबती जगदंब।
पुजवौ आश मोरि निशि बासर जातेहोयँ सिद्धिअवलंब॥१॥
निशि दिन ध्यावौं शिवशंकरको जेहि शिर गंगभंग आधार।
भस्म चढ़ाये अंग अंगमें नन्दी वृषभनाथ असवार॥ २ ॥
वृश्चिक सर्प आभरण तन में अम्बुज सदृशं नयन त्रयलाल।
भालचंद्रमा अति सोहत है धारे कराठ मुण्डकी माल ॥ ३ ॥
प्रेत पिशाच भूत सँग डोलै बोलैं बचन बनाय बनाय।
जटाजूट अर्धांग बिराजै आधे अंग अंबिका माय॥ ४ ॥
डमरू कर तिरशूल बिराजै नयनन रही लालरी छाय।
हैं बरदानी सब देवन में महिमा रटैं देव समुदाय॥ ५ ॥
सुखराशी कैलाश निवाशी हैं अबिनाशी शंभु सुजान।
सेवक सुखदायक सब लायक पूरण करैं दास मनमाम॥ ६ ॥
आगे नारान्तक की गाथा मैं संक्षेप कहौं यहि ठाम।
नारायण रघुनन्दनको यश बरणौं सुनहुँ छोंड़ि सबकाम॥७॥
समाचार अहिरावण के सुनि रावण हृदय महा अकुलान।
मन्दोदरी आय समुझायो अबहूँ देहु सिया भगवान॥ ८ ॥
कोइ नहिं योधा तुम्हरे दल में प्रीतम अजहूँ लेउ बिचार।
शरण गहौ तुम रघुनंदन की करिहैं क्षमा नाथ करतार॥ ९ ॥

सुनिकै रावण चल्यो सभामें अपनी सभा बिराजो आय ।
सम्मति लीनी मालवंत से मंत्री कही सुनौ मनलाय ॥ १० ॥
पुत्र तुम्हारो नारान्तक है अब गाढ़े में करै सहाय ।
मालवंत धावन बुलवाया नारान्तक पै दीन पठाय ॥ ११ ॥
कोटि बहत्तर वे योधा हैं एकहि रंग रूप बलवान ।
तिनको जल्दी तुम लै आवौ छिन में करैं शत्रु मैदान ॥ १२ ॥
लैकै पाती धावन चलिभा नारान्तकपुर पहुँचो जाय ।
शोभा देखी तासु नगरकी धावन मोहिमोहिरहिजाय ॥ १३ ॥
पूँछत पूँछत धावन चलिभा नारान्तक पै पहुँचा जाय ।
देखि सजावट राजसभाकी मनमें बहुत खुशी हुइजाय ॥ १४ ॥
कोटि बहत्तर थे सब योधा एकहि रंग रूप बलवान ॥
किसको पाती दूँ रावणकी सिगरे योधा एक समान ॥ १५ ॥
बूझि के राजा नारान्तक को नौकर पाती दई गहाय ।
राजा रावणने भेजा है बिपदा पड़ी ताहिपै आय ॥ १६ ॥
खोलिकै पाती पढ़ि नारान्तक नयनन आंसू रहा बहाय ।
पास बुलाया धूमकेतु को औ छाती में लियो लगाय ॥ १७ ॥
पुनि उठि कै गवनो रनिवासै अरु रानी से कही बुझाय ।
हमैं बुलायो है रावण ने जो हैं लंक कोटके राय ॥ १८ ॥
होत लड़ाई नित लंका में बिपदा परी पिता को आय ।
करौं लड़ाई में लंकामें रघुनन्दन को देहुँ भगाय ॥ १९ ॥
बिंदुमती रानी तब बोली प्रीतम सुनौ हमारे बैन ।
बैर न करियो रामचन्द्र से वे हैं पूर्ण ब्रह्म सुखदैन ॥ २० ॥
पिता आपने को समुझैयो सीता उन की देहिं पठाय ।
हाथ जोरिकै बिनती करियो परियो रामचरण में जाय ॥ २१ ॥

बोल्यो नारान्तक रानी से रानी सुनि लेउ बचन हमार।
जो हम पिताबचन नहिं मनिहैं हमरी हँसी होयसंसार ॥२२॥
जो कुछ मरजी परमेश्वर की तामें तर्क होन की नायँ।
समरभूमि में हम जावैंगे चाहे प्राण रहैं की जायँ ॥ २३ ॥
आय बिराजो सिंहान पै सेनापति को लिया बुलाय।
करौ तयारी लंकागढ़ की सिगरी फौज लेहु सजवाय ॥ २४ ॥
बांदी आई रंगमहल ते अरु महलों में गई लिवाय।
रानी बोली तब राजा से चलि हैं संग तुम्हारे राय ॥ २५ ॥
डोला संग चलो रानी को लंकागढ़ को कियो पयान।
तुरत नगर्ची को बुलवाया डंका होन लगो मैदान ॥ २६ ॥
पहले डंका के बाजत ही योधा सभी भये तैयार।
दुसरे डंकाके बाजतही शूरन गहे हाथ हथियार ॥ २७ ॥
तिसरे डंका के बाजत खन सेना चली नरान्तक क्यार।
डेढ़ दिनाकी मैजलि करिकै पहुँचो आय लंकदरबार ॥ २८ ॥
देखिके सेना नारान्तक की रावण बहुत खुशी हुइ जाय।
तुरत बुलायो नारांतकको औ हिरदेमें लियो लगाय ॥ २९ ॥
हाल बतायो सब लंकाको आदिहिते सब कहो हवाल।
हालतो कहते लज्जा आवै आधी सेन भई बशकाल ॥ ३० ॥
सुनिकै बोल्यो तब नारान्तक धीरज धरो पिता मनमाहिं।
नर बानर हमरे हैं भक्षण तिनको शूर कहैं हम नाहिं ॥ ३१ ॥
इतनी कहिकै निज सेना में आयो महाशूर खलराय।
तुरत नगर्चीको बुलवाया सोने कड़ा दिया डरवाय ॥ ३२ ॥
डंकाबाजो तब लश्करमें सेना कूच दीन करवाय।
दबति अँधेरिया दलमें आवै हाहाकारी बीतति जाय ॥ ३३ ॥

सेना देखी नारान्तक की बानर गये सनाका खाय।
धीरज धरिकै रामचन्द्रकी जय जय बोलिउठे चिल्लाय॥ ३४ ॥
आगे देखो हनूमान को तब नारान्तक पूंछन लाग।
कौनसे योधा आगेआवै बोलो धूमकेतु तेहिलाग ॥ ३५ ॥
यह गिरिसम योधा हनुमत है है यह पुत्र अंजनीक्यार।
बड़ बड़ योधा यहिनें मारे मारे बड़े बड़े सरदार ॥ ३६ ॥
कूदि समुंदर आयो लंका सिगरो उपबन दियो उजार।
अक्षमारि लंकागढ़ फूँक्यो है यह बड़ा शूर सरदार ॥ ३७ ॥
सुनतै नारान्तक बिस्मययुत मनमें गया सनाका खाय।
धनुष बाण लै सन्मुख दौड़ा हनुमत गयो क्रोधमेंछाय ॥३८॥
झपट के पकरा नारान्तक को औ धरती में दिया गिराय।
धूमकेतु दौड़ा हनुमतपै अपनी चोट चलाई जाय ॥ ३९ ॥
गदाके लागत हनुमत गिरिगा हनुमत गिरे मूर्छा खाय।
दौड़ा अंगद धूमकेतुपै औ धरती में दिया गिराय ॥ ४० ॥
पैर पकरिके चक्कर दीना अरु धूली में दिया गिराय।
मूर्छा जागी नारान्तककी औ अंगदपै पहुँचो जाय॥ ४१ ॥
जामवन्त बोला तेहि अवसर कायर भागिजा प्राण बचाय।
सुनिकै नारांतक तब दौड़ा औ अँगद पर पहुँचो जाय॥४२॥
मुगदर मारो एक अंगद पै अंगद लीनी चोट बचाय।
दुसरा मारा जामवन्त के सो गिरिपरे मूर्छा खाय ॥ ४३ ॥
दौड़के पकड़ा तब अंगदने बोला धूमकेतु बलवान।
अंगद खबरदार होजाना ताको झपटि गहा हनुमान ॥४४॥
मुगदर मारा धूमकेतु के सो गिरि परा भूमि मुरझाय।
मुगदर मारे दुइ छाती में धुम्मा स्वर्गलोक को जाय ॥ ४५ ॥

पायँ पकरि लंकामें फेंका संध्याकाल भई तब आय।
बंद लड़ाई भइ दोऊ दल डेरा चली सेन समुदाय॥४६॥
खेलत आवैं सब बानर मिलि डेरा माहिं पहूँचे आय।
दयादृष्टि देख्यो रघुनन्दन सिगरी श्रांति दूर होजाय॥४७॥
प्रातःकाल भयो जेहि अवसर सूरज उदय भये नभ आय।
जयजय कहिकै बानर दौड़े लंकाद्वार लिये घिरवाय॥४८॥
भई खबरि यह नारांतकको सेनापतिको लियो बुलाय।
देर करनकी नहिं बिरियाहै खाओभालुकपिनको जाय॥४९॥
आयो नारान्तक रण खेतन दौड़े जामवंत बलवान।
युद्ध होन लागा दोनौंमें छोंड़न लागअगिनियांबान॥५०॥
गुस्सा हुइकै तब अंगदने नारान्तक को पकड़ा जाय।
पैर पकरिकै चक्कर दीना औ लंकामें दिया गिराय॥५१॥
आगे पड़ा जाय रावणके तुरतै रावण लिया उठाय।
मूर्छा जागी नारान्तककी मनमें बहुत गयो शर्माय॥५२॥
पुनि उठि चढ़िगा आसमान पै बरसन लाग तहां से तीर।
अंगदादि ऊपर सब देखैं लागैं तीर होय सब पीर॥५३॥
देखि परा कोई नहिं ऊपर तब महलन पर पहुँचे जाय।
हाहा करिकै नारी रोवैं बानर गारी रहो सुनाय॥५४॥
आय तहां बोल्यो नारांतक बनरौ तुमहिं लाज नहिं आय।
घरकी नारिन को डरपावत हमसे करो बात यहँ आय॥५५॥
इतनी सुनि कै अंगद दौड़े नारान्तक को पकड़ा जाय।
परै पकरिकै चक्कर दीना रावण आगे दिया फेंकाय॥५६॥
रावण बेगि उठाय नरान्तक अपनी छाती लियो लगाय।
मूर्छा जागी नारान्तक की मनमें बहुत गयाशर्माय॥५७॥

तुरतै भागा।शिव मन्दिर को मन्दिर जहाँ कालिका क्यार।
बिनती कीनी महादेव की अरु चरणोंमें दिया लिलार ॥५८॥
नारद आये ब्रह्मलोक से रघुनंदन पै पहुँचे आय।
बिनती करिकै बोलन लागे सुनिये दीनबन्धु रघुराय ॥ ५६॥
दशकन्धर सुत नारान्तक को अबमत देर करो भगवान।
जलदी बुलवावौ दधिबलको जाके हाथ मरै बलवान॥ ६०॥
कीन तपस्या नारान्तक ने ब्रह्मा आय दीन बरदान।
मारे मरिहौ नहिं काहूसे दधिबल हाथ तोर कल्यान॥ ६१॥
नारद गवने ब्रह्मलोकको बोले हनूमान से राम।
बेगिजाहु धौलागिरि बेटा दधिबल बास करै जेहिठाम॥६२॥
रातिहि राति तिन्हैं लैआओ तौ सब काम सिद्धहो जाय।
हनुमत दौरे धौलागिरि पै दधिबलपास पहूँचे जाय॥ ६३॥
कही हकीकति सबदधिबलसे दधिबलकही सुनौ हनुमान।
हमैं उजर नहिं है काहूबिधि चाहैं सोइ करैं भगवान॥ ६४॥
इतनी कहिकै दोनो झपटे रामादलमें पहुँचेआय।
शीश नवायो सब शूरनको रघुबर छाती लियोलगाय॥६५॥
भोर होतखन बानर दौड़े अरु लंका गढ़ घेरा जाय।
उधरसे आई निश्चरसेना दोनौं सेन एक होजायँ॥ ६६॥
कहँलग बरणौं मैं तेहि अवसर भारी युद्ध भयो मैदान।
खरभर परिगो निश्चरदलमें जूझे बड़े बड़े बलवान॥६७॥
सूरति देखी नारान्तककी दधिबल छाती लियो लगाय।
कुशल छेम पूँछी राजासे दधिबल बहुत रहे समुझाय॥६८॥
तुम गुरुभाई हमरे लागौ ताते कहौं तुम्हैं समुझाय।
बैर करौ नहिं रघुनंदनते चाहौ कुशल छेम मनलाय॥६९॥

सेवन करौ चरण रघुबरके तुम्हरी चूक माफ हुइ जाय ।
रावण पितहिं जाय समुझावौ सो सीताको देय पठाय ॥७०॥
सुनिकै बोलि उठो नारांतक दधिबल सुनौ हमारी बात ।
हौ गुरुभाई तुम मेरे मैं ताते छाँड़ि दियो कुशलात ॥७१॥
सुनिकै दधिबल गुस्सा हुइकै नारांतक को पकड़ाजाय ।
हाथ पकरिके झटका दैकै अरु पृथ्वी परदिया गिराय ॥७२॥
पायँ पकरि कै दधिबल भागे पहुँचे आसमान में जाय ।
शीश तोड़ि फेंका रघुबरपै धड़ रावणपैदिया गिराय ॥ ७३ ॥
धड़ के देखत परलय हुइ गइ रावण गिरा मूर्छा खाय ।
सुनी हकीकत बिन्दुमतीने रानीतड़फि तड़फिरहिजाय ॥७४॥
बहु बिलाप कीना रानीने सो मैं कहँलग करूं बखान ।
शीशलेन हितचली बिन्दुमति पहुँचीजहांरामभगवान ॥७५॥
अस्तुति कीनी रामचंद्र की मांगा शीश दीन रघुनाथ ।
लायचिता रचिसत्ती हुइगइअरु सुरलोक गईपतिसाथ ॥ ७६॥
नारायण सँक्षेप बखानी क्षेपक कथा जानि यहि ठाम ।
जोकोइ पढ़ैसुनै निशिबासरअन्तिम चलाजाइसुरधाम ॥ ७७॥

॥ इति ॥

॥ अथ रावण की लड़ाई ॥

❀ सुमिरण ❀

॥ कवित्त ॥

भाल बिशाल त्रिपुंड बिराजत मस्तक एककला शशि सोहै ।
दीनदयाल कृपाल प्रभो दुख दोष दुशवत ताप बिमोहै ॥
पार न पावत वेद कभू महिमा तुम्हरी कहि पावत को है ।
मुण्डनमाल गले उर व्याल रटौं शिवशंकर पालत जोहै ॥१॥
काहे को भूल्यो फिरै भटको कहुँ अंत नहीं तुव काज सरैगो ।
रोज खुशामद लोगन की करु कोउन हीयकी पीर हरैगो ।
कैलाश के नायक दायक हैं तुमताहि भजोदुख दूरि बहैगो ।
औघट घाट लगावत है जहँ पारबतीपति पार करैगो ॥ २ ॥

॥ छन्द आल्हा ॥

करौं बंदना गणनायक की सुमिरौं पार्बती भरतार ।
ब्रह्मा बिष्णु आदि पद बंदौ बंदौं रामचन्द्र करतार ॥ ३ ॥
पुनि मैं सुमिरौं सब दुष्टन को युग युग एक एक बिख्यात ।
वेनहिं सुमिरौं मैं सतयुग में त्रेता दशकंधर उत्पात ॥ ४ ॥
द्वापर सुमिरौं मैं कंशासुर जेहिं बहु कीन बालकन घात ।
गइ मर्य्यादा सब कलियुगमें है जो सकल नरनको ज्ञात ॥५॥
शास्त्र पुराण केरि चर्चा उठि होवै आल्हखंड सब ठाम ।
एक पंथ द्वै काजहेत मैं बर्णन कीन रामसंग्राम ॥ ६ ॥

छोड़ि सुमिरनी आगे बरणौं रावण राम केर संग्राम।
नारायणप्रसाद कृत आल्हा चितदै सुनहु छोड़ि सबकाम॥७॥

॥ सवैया ॥

शीतल ह्वै निशि चंद्र उगै पै उष्ण ह्वै चंद्र उगै कबहूँना।
उष्णहै रश्मि दिवाकर की पर शीतल ह्वै कै तपै कबहूँना॥
सन्तन दुःख परै कितहू पै धर्मको त्याग करैं कतहूँना।
त्यों रणशूर चढ़ैं रणमें लड़िकै सो मरैं औ टरैं कतहूँना॥ ८॥

॥ छन्द आल्हा ॥

रावण सोचै अपने मनमें अब क्या करूं हाय करतार।
हाथ जोरि मन्दोदरि बोलीतुम सुनि लेउ बीर भरतार॥ ९॥
अबहूँ मानौ कही हमारी सीता जाय देहु रघुनाथ।
कौनसो योधा है तुम्हरे दलजो अब लड़ै रामके साथ॥ १०॥
सुनि कै रावण बोलन लाग्यो रानी सुनो हमारी बात।
रहा भरोसासब योधन का अब मैं शस्त्रगहौं निजहाथ॥ ११॥
प्रात लड़न को मैं जाऊँगो मारौं खेदि खेदि सरदार।
नदी बहाऊं मैं शोणित की जनियो रावण नाम हमार॥ १२॥
बात करत ही निशि सब बीती सूरज उदय भये नभ आय।
सेनापतिको तुरत बुलाया सोने कड़ा दियो डरवाय॥ १३॥
करौ तयारी अब लड़िबे की जल्दी फौज होय तैयार।
सुनिकै आज्ञा सेनापति ने तुरतै बोलि लिये सरदार॥ १४॥
डंका बाजै निश्चरदल में सिगरी फौज होय तैयार।
पहलेडंका के बाजत खन निश्चर सभी भये हुशियार॥ १५॥
दुसरे डंकाके बाजत खन योधन बांधि लिये हथियार।

तिसरे डंकाके बाजत खन लश्कर कूच भयो तेहिबार ॥ १६ ॥
गर्जत धाये सब निश्चरगण लीन्हे बड़े बड़े हथियार।
भिंदिपाल तोमर मुगदर अरु परिघ प्रचण्ड शूल तलवार॥१७॥
फरसा पर्बत खण्ड साँगिवर साँड़ालिये दुधारा हाथ।
लियं कमानी एक हाथमें शोभित तीर कैवरी साथ ॥ १८ ॥
बड़ि बड़ि बरछी तिरछी सोहैं जिनमें धरी बीरवाँधार।
हाथीचढ़ैया हाथी चढ़िगये बाँके घोड़नके असवार ॥ १६ ॥
मेघकि गर्जनि निश्चर गरजैं डौंरू ढोल चंग करनाल।
बजैं नगारा औ सहनैया बाजै हाउ हाउ करताल ॥ २० ॥
उतते आई रावण सेना इतते सेन बानरन क्यार।
जय जय बोलैं रामचंद्रकी जय जय लषणशेष अवतार॥२१॥
ढोल पखावज बाजन लागे शंखकी होन लाग धुधकार।
बजैं नगारा रामादल में जिनका होवै शब्द अपार ॥ २२ ॥
ढाढ़ी करखा बोलन लागे तिनको शब्द रहो नभ छाय।
धूरि उड़ानी आसमान लौं तासों सूरज गये छिपाय ॥ २३ ॥
जैसे गिरिसों टीड़ी निकसै तैसे चली सेन समुदाय।
छाय अँधिरिया गइदशहूँदिशि आपन परै नहाथदिखाय२४॥
डगमग डगमग पृथिवी डोलै थरथर रहे शेष थर्राय।
दोऊ सेना दलबादल सों पहुँची समरभूमि में जाय ॥२५॥
बानरजूहा करि करि हूहा धावत चले पूंछ तन्नाय।
कोऊ मटकै कोऊ चटकैं डपटत चलैं परस्पर धाय॥ २६ ॥
दोनों सेना यकमिल हुइके बीरन रहे बीर ललकार।
अस्त्र शस्त्र सब मारन लागे जिनके मारु मारु उच्चार॥ २७ ॥
गदा कि चोटैं कोउ कोउ मारैं कोउ कोउ देयँ परिघ केघाय।

कोउ कोउ मुष्टिक हनिकैमारैं कोउकोउ देवैंशूल चलाय २८॥
जोरी जोरी करिकै जुरिगये एकते एक भिरे तेहि काल ।
मुर्छा लीन्हा लंकापतिसों हनुमत और बालिको लाल ॥२६॥
होय लड़ाई दोनों दलमें सबसुर देखैं चढ़े बिमान ।
बिविधि भांति को समरभयंकर ठाढ़ेलखैं लखण भगवान ३०॥
काल समान भालु कपि धावैं मारैं धाय निश्चरन क्यार ।
मारैं काटैं लातन मींजैं फारहिं गाल उदर चिंघार ॥ ३१ ॥
पुनि कोउ हनिकै मुगदर मारैं निश्चर गिरैं मूर्छाखाय ।
कोउ बाणसों शिरको काटैं कोऊ देवैं भुजा गिराय ॥ ३२ ॥
कोउ ललकारैं कोउ पछारैं कोऊमारैं चक्र उठाय ।
सेना बिचलि गई रावणकी निश्चर भागे प्राण बचाय ॥३३॥
देखा जब यह दशकन्धरने हमरी सेन गई बिराय ।
सकलनिश्चरनकोडपटयोतेहिंअरुपुनिबोलिउठोरिसिआय३४॥
पाँव पिछारी जो भट धरिहै मरिहौं ताहि कराल कृपान ।
उग्र बचन सुनि सकल डेराने फिरिकैलड़नलगेबलवान ॥३५॥
कठिन मारु तब मारन लागे मारे शस्त्र प्रचार प्रचार ।
भयआतुर कपि भागन लागेमनमेंहारि मानिमन मार ॥३६॥
पुनि रिसियाय लंकपति धावा सन्मुख चले हूह करि भाल ।
लैकर अस्त्र शस्त्र तरु पर्बत डारहिं उपर भूप दशभाल ॥३७॥
पै नहिं हटा रहा रथ रोपी मर्दन लगा भालु कपि सैन ।
व्याकुल भयेभालुतेहिअवसरकपिदलकरोचित्तनहिंचैन ॥३८॥
कोउ पुकारै हनूमानको कोऊ जामवंत सुग्रीव ।
कोउ पुकारै अंगदजीको कोऊ लखण राम बलसींव ॥३६॥
सकल भालु कपि भागत देखे लीन्हे दशहु हाथ धनु बान ।

मेघसमान गर्जि दशकन्धर छोंड़न लाग बाणधनुतान ॥४०॥
सर सर धावैं बाण अगिनियाँ मानहु मघा मेघझरि लाय।
भयो कोलाहल रामादलमें आरत त्राहि त्राहि रघुराय ॥४१॥
बिचलत देखी जब कपि सेना लीन्हे कटि निषंग धनु हाथ।
लक्ष्मण चले क्रोधउर छायोपुनि पुनिनाय रामपदमाथ ॥४२॥
रावण सन्मुख लक्ष्मण पहुँचे बोले बचन कोपि तेहि काल।
रेखल क्या मारत कपि भालू मोहि बिलोकु तोरमैंकाल ॥४३॥
खोजत रहेउँ तोहिं सुरघाती मारौं आज तोहिं खलराज।
बाण चलाये पुनि रावणने काटे तुरत तानि धनुसाज ॥ ४४॥
कोटिन आयुध रावण डारे सो सब काटि दीन तेहि काल।
युक्तिअनेक करैदशकन्धर पै नहिंचली युक्तिदशभाल ॥४५॥
हमरी तुमरी अब बरणी है दुइ में एकु आंकु रहिजाय।
यह कहिभिरेदोउतेहिअवसरलक्ष्मणलीन्हबाणशिसियाय ॥४६॥
स्यंदन भंजि सारथी मारा पुनि रथ चूर चूर हुइजाय।
बाणअनेक हने रावणके सो गिरि परोभूमि मुरझाय ॥ ४७॥
जगी मूर्छा पुनि रावणकी नैना अग्निज्वाल हुइजायँ।
शक्ती दीनी जो ब्रह्मानेसो लक्ष्मणपर दई चलाय। ४८॥
लागी शक्ती जब लक्ष्मण के धरणी गिरे मूर्छा खाय।
रामबनावैं सो बनि जावे बिगड़ी बनतबनत बनिजाय ॥ ४९॥
रावण जाय उठावन लागा जानहि मूढ़ न तासु प्रभाव।
एक शीश पै जिनके धरणी आवा हनोमान तेहिठांव ॥ ५०॥
मुष्टिक मारा यक रावणके रावण जानुटेकि रहिजाय।
पुनि यक मुष्टिकहनि कपि मारारावणगिरामूर्छा खाय ॥५१॥
मूर्छा गई बहुरि सो जागा। कपिदल बिपुल सराहन लाग।

बोले हनूमान धिक्‌मोहीं जोतैं जियत रहाबड़ भाग ॥५२॥
लाये हनूमान लक्ष्मणको पहुँचे रामचन्द्र पै जाय।
देखि दशानन विस्मय मान्यो बोले रामचन्द्र सुनु भाय ॥५३॥
तुम कृतांतभक्षक सुररक्षक तुमको ब्रह्मशक्ति भय कौन।
सुनत बचन लक्ष्मण उठिबैठे सक्ती गई ब्रह्मपुर तौन ॥ ५४ ॥
लक्ष्मण धनुष बाण संधान्यो तुरतै लंकपती ढिगजाय।
मारे बाण तासु रथ तोरेव ब्याकुल कीन सारथी धाय ॥५५॥
बाण तानि मारा रावणके सो गिरि परा मूर्छा खाय।
पुनि शत बाण मारि उर ताके बेधा हृदय शत्रु खलराय ५६॥
अपर सारथी रथलै आवा लैकै गया लंकदरबार।
जागी मूर्छा जब रावणकी करने लग्यो यज्ञ तेहिबार ॥ ५७ ॥
लक्ष्मण आये रामचंद्रपै बैठे रामचरण शिरनाय।
खबरि बिभीषणने जब पाई की अब यज्ञकरै खलराय ॥ ५८॥
खबरि सुनाई रघुनंदन को पठवहु बेगिनाथ कपिसेन।
यज्ञ सिद्ध जो यह हुइ जैहै हुइ है हानि सुनौ सुखदैन ॥ ५९॥
प्रात होत प्रभु सुभट पठाये धाये अंगदादि हनुमान।
कौतुक कूदि चढ़े कपिलंका पहुँचे सब अशंक बलवान ॥६०॥
रणते निलज भागि गृह आवा यहँ पर आयकरत बड़ध्यान।
कहि कहि बहुतबचनलज्जाकेमारहिलातबालिसुततान ॥६१॥
लातन मारैं दांतन काटैं छूटो नहीं तासुको ध्यान।
तब रनिवास जाय रानिनके नोचैं केश बीर बलवान ॥६२॥
केश तानि बाहर लै आवैं रोवैं नारि जार बेजार।
कालसमान उठा तब रावण मारन लाग भालुकपिझार॥६३॥
यज्ञभंग करिकै सब बानर आये रामचंद्रके पास।

रावण चलिभा तबलंकासे मनमेंछोड़ि जियनकीआश ॥६४॥
असगुन होनलगे मारग में सेनाचली लंकपतिक्यार।
जूझको डंका बाजन लागो गर्जत चले शूरसरदार ॥ ६५ ॥

॥ अथ रावणकी दूसरीलड़ाई ॥

कहँ लग बरणौं मैं सेनाको रावण सेना चली अपार।
आय पहुँची रामादलमें जिनके मारु मारु उच्चार ॥ ६६ ॥
निश्चरसेना ऐसे आई ज्यों दीपक पर गिरैं पतंग।
लै लै अस्त्र शस्त्र सब धाये मारैं करि करि हाथ उतंग ॥६७॥
पैदलके सँग पैदल भिरिगे औ असवारन से असवार।
दोनोंसेना यकमिलि हुइगईं बीरन रहे बीरललकार ॥६८॥
बिकट लराई निश्चरदलमें अद्भुत समर कहा नहिं जाय।
लरैं शूरमा समरभूमिमें कायर सुनिकै जायँ डेराय ॥६९॥
गदाकि चोटैं जिनके लागैं तेनर गिरैं मूर्छा खाय।
छाय अँधिरिया गइदशहूँदिशिआपन पैरनहाथदिखाय॥७०॥
खट खट खट खट तेगा बोलैं रणमां छपक छपक तलवार।
कितनेउ योधा भुइँमें गिरिगे जूझी सेना अमितअपार ॥७१॥
देखि हकीकति दोउ सेनाकी सुरगण नभमेंगये सकाय।
अस्तुति कीनी रामचन्द्रकी मारौ बेगि नाथखलराय ॥७२॥
देव विनय सुनि प्रभु मुसकाने उठि रघुबीर सुधारे बान।
जाय पहूँचे दोउ दलअन्तर देखैंखड़े लषण भगवान ॥ ७३॥

कोउ ललकारै कोऊ पछारै कोऊ डारै बाजि नशाय।
लातन मारैं कोउ मुंह फारै दांतन लेवें हाथ चबाय ॥७४॥
करैं झपेटा देयँ चपेटा फारैं पेटा अवनि लोटाय।
चलैं सड़ाका मारि झड़ाका धोबी पाटा पेंच खेलाय॥७५॥
बिन धड़ मुंडा लाखन झुंडा रणमां मारु मारु बर्रायँ।
बिन शिर रुंडा परम प्रचंडा रणमें दौड़ैं खड्ग उठाय ॥७६॥
लाखन शूरा ह्वै कै चूरा पृथिवी गिरैं पछारा खाय।
बड़ बड़ नाहू तिनके बाहू नभमें लीन्हे बाण उठाय ॥७७॥
उसरिन उसरिन मारैं योधा रण में गई अँधिरिया छाय।
शब्दकरालाअग्नीज्वालादिशिअरुविदिशिमाहिगाछाय७८॥
हाहाकारा अगम अपारा नदिया बही रक्त की धार।
मनहुँ कगारा खाय पछारा बहि बहि जावैं ऊंट अपार ॥७९॥
ढालैं कच्छा छूरी मच्छा तामें वही अनेकन जायँ।
भूत कराला औ वैताला तामें मज्जैं भुजा उठाय॥८०॥
मृतक शरीरा जे रणधीरा शोणित सरित परे उतराय।
तिनपर कंका मानहुँ रंका बैठे आमिष खायँ अघाय ॥८१॥
भरि भरि खप्पर नचैं योगिनी कहँ लग शोभा कहौं बिशाल।
चील्हन केरि खूब बनिआई कागनभई चोंच सबलाल॥८२॥
श्वान शृगाल खाय कै नाचैं देखैं आमिष अमित अपार।
सेना जूझी बहु रावण की जूझे बहुत शूर सरदार॥८३॥
देखि हकीकति निजसेनाकी रावण गयो क्रोध में छाय।
दशौ धनुष में बाण लगायो छोंड़े रामसेन में धाय॥८४॥
शक्ति चलाई दशकंधर ने बिभीषण पर दीन्ही डारि।
रक्षा कीनी रामचन्द्रने शक्ती लीन जाय उर धारि॥८५॥

बहुरि बिभीषण जामवंत पुनि अंगद बीर बली हनुमान ।
जसरिन युद्ध कीन रावणसे सो मैं कहंलग करौं बखान॥ ८६॥
रघुपति मनमें निश्चय करि लीन्हो धनुष हाथ रघुनाथ ।
कटि निषंग सजिकै ठाढ़भये सुरगण शब्द जयतिमुदसाथ ८७॥
बहुरि लंकपति मनमें सोच्यो निश्चय भयो मोर संहार ।
मैं अकेल बहु बानर सेना माया करौं बेगि यहिबार ॥ ८८ ॥
माया कीनी तब रावणने चारिहु ओर रूप रघुनाथ ।
लक्ष्मणसहित सेन बिस्मययुत चित्रितलखैं लड़ौंकेहि साथ८६॥
मारा बाण एक रघुनंदन माया तुरत दूर होजाय ।
दोउ कर जोरि बिभीषणबोले सुनिये कृपासिंधु रघुराय ॥ ९० ॥
धीरज राखै अपने चितमें अरु ना धरै पिछारू पांय ।
रथके बिना शूर संगरमें तेहिकी हारि होन की नाय ॥ ९१ ॥
ताही समय बेगि सुरपति ने मातलि सहित एक रथयान ।
तेजपुंज रथ दिब्य देखि प्रभु हर्षित चढ़े रामसुर भान ॥ ९२॥
बहुरि राम बोले लखि योधन देखहु मोर युद्ध मैदान ।
तुम बहु श्रमित भयेयहि अवसर यहकहि बढ़ेराम भगवान९३॥
रथारूढ़ लखि रघुनन्दन को बोला तड़पि गर्जि दशभाल ।
बदलो लेहौं सब बीरनको मारौं तोंहि मूढ़ यहि काल ॥ ९४॥
सुनि दुर्बचन जानि अन्तिम बश बोले बिहँसि राम रघुराय ।
जोगरजत बरसत सोनाहीं जल्पसिजनि दिखाउमनुसाय ९५॥
सुनि दशकंधर क्रोधित हुइकै छांड़न लाग राम पर बान ।
सो शर छायरहे दश दिशिमें ब्याकुल भयेदेखि सबज्वान९६॥
चन्दा सोहै जस तारागण तस रण रामचन्द्र बलवान ।
तकितकि शायक हनिहनिमारैं रणमागिरैं सुघरुआज्वान९७॥

पुनि रघुबीर समर अति कोपे छांड़न लगे अगिनियां बान।
क्षणमहँ जरें अनेक निशाचर मारे बीनि बीनि बलवान॥९८॥
पुनि रावण छोंड़ी यकशक्ती काटी रामचंद्र तेहि बार।
कोटिन चक्र त्रिशूल शूल तेहिंमारे काटि दिये करतार॥९९॥
रावणबाण हनेसि सारथि के मूर्छित गिरा बोलि जयराम।
राम कृपाकरि सूत उठायो क्रोधित भये राम सुखधाम॥१००॥
छाँड़े बाण तबहिं रघुनन्दन गवने लहलहात जनु ब्याल।
रथ सारथी तुरग सब भंजे पुनि शरआयगये तेहिकाल॥१०१॥
तब रावण दश शूल चलाये मारे चारि तुरग तेहि बीर।
तुरग उठाय कोपि तेहि अवसर मारे तीस बाणरघुबीर॥१०२॥
दशौ शीश काटे रावण के काटे बीस भुजा रिसियाय।
काटतही नवीन जमि आवैं पुनि पुनिकाटिदेंयरघुराय॥१०३॥
रहे छाय नभ शिर अरु बाहू मानहुँ अमित राहु अरु केतु।
दशमुख देखि शिरन की बाढ़ीबिसरामरणभयोरिसहेतु॥१०४॥
समरभूमि कोपा दशकन्धर मारे बाण दीन्ह रथ तोपि।
दंड एक रथ देखि न परेऊ मारे बाण लंकपति कोपि॥१०५॥
कौतुक देखि बिभीषण बोल्यो सुनिये कृपासिंधु भगवान।
अमृतकुण्ड है तेहि नाभी में यासों मरै नाहिंखलभान॥१०६॥
सुनी बात जब यह रघुनंदन लीन्हे बाण तानि इकतीस।
एकसे अमृत कुण्ड सबशोखाकाटेबीसभुजादशशीश॥१०७॥
अपना धाम दीन रघुनंदन तेहि सम धन्य धन्य कोउनाय।
जय जय बोले सकल भालुकपिसुरगणसुमनरहेबर्षाय॥१०८॥
अस्तुति कीनी रामचंद्र की सुरगण हाथ बाँधि रहिजायँ।
करिअस्तुति निजलोक सिधाये रघुवरहुक्मदीनफरमाय॥१०९

अमिरत बरसावौ सेनामें जासे मृतक सेन जीजाय।
सुनि सुरनायक लाय सुधाकोडारो मृतक सेनपर जाय॥११०॥
बानर भालू उठि उठि धाये पकरे चरण राम के आय।
राम बुलायो हनुमदादि कपि आये जामवंत कपिराय ॥१११॥
साथ मैं लक्ष्मण के सब जावो दीजो तिलक बिभीषण राय।
बेगि लेआवो तुम सीताको लक्ष्मण चले साथकपिराय ११२॥
पहुँचे जाय लंक तेहि अवसर कीन्हा तिलक बिभीषण क्यार।
जायके पहुँचेपुनि सीताढिग लाये बेगि राम दरबार ॥ ११३ ॥
मन्दोदरी आदि सब रानी आई जहां पड़ा दशमाथ।
बहुबिलापकीनातेहि अवसरपुनिसमुझाय दीनरघुनाथ ११४॥
पेखि दशानन को तेहि अवसर आयो बेगि बिभीषण भाय।
बहुबिलाप करिकरि रोवै तब पहुँचे राम तहां रघुराय ॥ ११५॥
अति समुझाय बुझाय बिभीषण पुनिसब क्रियाकर्म करवाय।
दीन तिलांजलिसबने मिलके निजकर रामचन्द्र रघुराय ११६॥
लीन परीक्षा पुनि सीताकी सो अग्नी में भई प्रवेश।
आईनिकसि अग्निकुंडीसे हर्षितभयेजानि अवधेश ॥ ११७ ॥
पुष्पक यान मँगाय सेन सह तापर चढ़े जाय रघुनाथ।
सीतालषण समेत अवधपुर गवने कृपासिन्धु मुदसाथ ॥११८॥
लंका जीति मारि दशकन्धर जेहिबिधिचले अवध श्री राम।
सोसब युद्धकाण्डकीगाथा गाई हियेधारि घनश्याम ॥ ११९ ॥
जो कोइपढ़ै सुनै निशिबासर लहि सुख चला जाय सुरधाम।
नारायणकी मनोकामना पूरण करौ राम घनश्याम ॥ १२० ॥

॥ त्रिभंगी छंद ॥

जय जय अबिनाशी घटघटबासी तेजो राशी ब्रह्म परे।

लीला तनुधारी सुर उपकारी असुरविहारी जयति हरे ॥
जय जय जगनायक जनसुखदायक बाना बिरद सुधारि धरे।
जयजयरघुनायकसाहेब लायक जानि दासजनखासकरे१२१॥

इतिलंकाकाण्डसमाप्तः ॥

॥ अथ उत्तरकाण्ड प्रारम्भः ॥

॥ दोहा ॥

लंकाकाण्ड समाप्तकरि, बर्णौं उत्तर गाथ ।
नाराणके उरबसौ, सीतापति रघुनाथ ॥ १ ॥

॥ सुमिरण ॥

॥ छन्द आल्हा ॥

निशि दिन सुमिरौं श्री गंगेजी भागीरथी नाम बिख्यात ।
सकल जगतकी तारनहारी माता धर्म तुम्हारे हात ॥ १ ॥
गंगाहेत दास भागीरथ पहुँचे हरद्धार में जाय ।
कीन तपस्या शिवशंकर की हर्षित भये शम्भु सुरराय ॥ २ ॥
मांगौ मांगौ भागीरथजी हम हैं अति प्रसन्न महराज ।
गंगा मांगी शिवशंकरसे पूरण किये जक्त सब काज ॥ ३ ॥
गंगा यमुना और सरस्वती संगम कीन प्राग में जाय ।
नाम त्रिबेणी सबजग जानैमज्जन कियेपाप नशिजाँय ॥४॥

अक्षय बट है कल्प वृक्ष जहँ अरु है भरद्वाज अस्थान ।
बेनीमाधव जहां बिराजत दर्शन जासु मुक्त निर्वान ॥ ५ ॥
काशी कनवज कानपूर अरु सागर सेतु और हरद्वार ।
गंगाजी के तेज पुंजमें जरि जरि पाप होत सब छार ॥ ६ ॥
शुभ बर दीजै गंगे माई पूरण सबी कीजिये काम ।
पापनशावनि सन्तउबारनि नित अस्नान देतिसुखधाम ॥७॥
दास तुम्हारो शरणागत है सेवक जानि हिये हर्षाय ।
बाणी ज्ञान बुद्धि बर दीजै बिनती करूँ शीश पद नाय ॥ ८ ॥
छोंड़ि सुमिरनी आगे बरणौं उत्तरकाण्ड केर सब हाल ।
नारायण मुकुन्दकृत आल्हा चित दै सुनहुवृद्धअरु बाल ॥९॥

॥ सवैया छन्द ॥

मैं सुमिरौं तुम्हरे पदपंकज बेगि बिनय सुनिये रघुनाथा ।
मेरे तो एक तुम्ही प्रभु हौ अब काह बनाय लिखौंबहुगाथा ।
स्वारथ साथ सबै नर देत न देत कोऊ परमारथसाथा ॥
दीन पुकार करौं रघुनंदन बेगि करौ जन जानि सनाथा १०॥

॥ छन्द आल्हा ॥

वर्ष चतुर्दश के अंतरमें बाकीरहा एकदिन आज ।
सोचत नगरनारि घर बैठे पाई खबरि नाहिं रघुराज ॥ ११ ॥
अवधनिवासी प्रभु बियोगसे सबको गयो अंग मुरझाय ।
उही समैयाके अवसरमें सुन्दर शकुन रहे दरशाय ॥ १२ ॥
शकुन देखि सब हर्षित हुइगे प्रभुका आगम रह्यो जनाय ।
कौशल्यादिक मातु हर्षियुत मनमें प्रीति रही अतिछाय॥१३॥

भरत नयन भुज दक्षिण फरकहिं सुन्दर शकुन देखिहर्षाय ।
पै दिन एक शेष समुझत ही मनमेंगये भरत मुरझाय॥१४॥
खबरि न भेजी रघुनंदनने जान्यो मोहि कुटिल दुखभागि ।
अहह धन्य लक्ष्मण बड़भागी जो रघुनाथ चरणअनुरागि१५॥
कपटी कुटिल जानि रघुनायक ताते मोहि साथ नहिं लीन ।
जो प्रभु कर्तब हमरी समझै तौ निस्तार कल्पशत हीन ॥१६॥
जनके अवगुण नहिंकछु मानैं हैं प्रभु दीनबंधु रघुराय ।
मोरे जिय भरोस प्रभु मिलिहैं सुन्दर शकुनहोयँ सुखदाय१७॥
बीते अवधि प्राण रहि जावैं म्वहि सम अधम अन्यनहिंकोय ।
रघुबरबिरहसिन्धु अति बाढ़यो तामें भरत मग्न मनसोय १८॥
उही समैया के अवसर मैं भुसुर रूप धारि हनुमान ।
आये भरतलाल केसन्मुख हर्षित जपत राम भगवान॥ १६ ॥
बैठ कुशासन भरतलालहैं मस्तक जटा मुकुट कृश गात ।
मनमें सुमिरत रामरामहैं अतिशय श्रवण नयन जलजात २०॥
देखत हनूमान अति हर्ष्यो जाना भरत सरिस को आन ।
बोल्यो श्रवण सुधासमबानी मनमहँ बहुतभाँति सुखमानि२१॥
जासु बिरह शोचहु निशि बासर पुनि प्रभु रटहु जासु गुणपाँत ।
सोई रघुकुलतिलक शिरोमणि आवत धाम अवधकुशलात२२॥
अमृत समान बाक्य यह सुनिकै जैसे तृषावन्त को नीर ।
तैसे तनमन अति आनँदयुत बोले भरत बचन गंभीर॥२३ ॥
को तुम तात कहां ते आये मोहिं प्रियबचन सुनाये आन ।
मैंरघुनाथ केर किंकर हौं हौं कपिजात नाम हनुमान ॥२४॥
सीतालषणसमेत सेनयुत आवत असुर जीति रघुनाथ ।
तुम्हरे चित्तप्रबोधहेत प्रभु आगे भेजि दीन मोहिंनाथ॥ २५ ॥

सुनिकै बाणी भरतलालजी सादर उठे मिलनकी आस ।
हृदय लगायो हनूमानको सबबिधि जानि रामकोदास ॥२६॥
मिलत प्रेमजो भयो भरतके सो नहिं उरमें सक्यो समाय ।
आनंद आंसू ढरकन लागे औ तन रह्यो मोदसों छाय॥२७॥
कपि तव दर्श सकल दुख बीते मानहुँ मिले मोहिं रघुनाथ ।
काह देउँ तुमको मैं हनुमत ममउरचढ़े न एकौबात ॥२८॥
यहि संदेश सदृश सुख नाहींअन्य न सूझि परै जग मोहिं ।
नहिंहौंउऋणतातमैंतुमसेअबप्रभु चरितसुनावहु मोहिं ॥२६॥
भरतलाल पद बंदन करिकै भाषण लाग वीर हनुमान ।
जोजोचरितकीनरघुनायकताको कह्योसकलकपिगान ॥ ३० ॥
सुनि यह चरित प्रसन्न चित हुई बोले भरतलाल महराज ।
सुनुहनुमानजानिकिंकरमोहिंसुमिरतकबहुँ रामरघुराय ॥ ३१ ॥
सुनिकै बानी भरतलालकी बोले हनूमान शिरनाय ।
प्राण पियारे तुम रघुबरके सुमिरैं तुमहिं नित्य रघुराय ॥ ३२ ॥
को बड़भागी तुमसन राउर जिनयश कहैं राम नितगाय ।
क्यों नहिं सब गुणयुत तुमहोवो हौरघुबरिकेरलघुभाय ॥ ३३ ॥
मैं यह कह्यों सत्य प्रभु तुमसे मानों बचन मोर परमान ।
पुनि पुनि भेंटत भरतलालजी हर्षित हृदय प्रेममनमान ॥३४॥
आज्ञा मांगि नाय पद मस्तक प्रभुपहँ चल्यो बेगि हनुमान ॥
समाचार सब प्रभुहिं सुनाये सुनिप्रभुहर्षिचलायोयान ॥३५॥
हर्षि भरत कोशलपुर आये गुरुसन सकल सुनायो हाल ।
पुनि मंदिरमहँ बात जनाई आवत नगर राम सुख हाल ॥३६॥
सुनत सकल जननी उठि धाईं भाषी कुशल भरत समुझाय ।
समाचार पुरबासिन पाये धाये पुरुष नारि समुदाय ॥ ३७ ॥

कहँलग बरणौं मैं तेहि अवसर जो आनंद नगर नर नारि ।
पुरशोभा देखाति बनिआवै निर्मल बहै वायु अरुवारि ॥ ३८ ॥
कथा गति बरणौं पुरबासिन की सबकोराम मिलनकीआस ।
मंगल गावैं सकल सुंदरी आवत जानि रामसुखरास ॥ ३९ ॥
इतश्रीभरत बिप्र सँग लीन्हे देखत बाटचले अगमान ।
उतश्रीरामचन्द्र आनँद युत लीन्हे संगभालुकपिज्वान ॥ ४० ॥
आये नगर अयोध्याऊपर बोले बिहँसि राम भगवान ।
कपिपतिजामवंतलंकापतिसुनिये बालितनयहनुमान ॥ ४१ ॥
यद्यपि स्वर्ग लोक अति उत्तम ज्याहि काबरणत बेद पुराण ।
है तथापि प्रिय मोहिं अवधपुरहै नहिपुरीजगतमेंआन ॥ ४२ ॥
जन्म भूमि हमरी यह सुन्दर है सब भाँति मोहिं सुखधाम ।
उत्तर सरजूजी बहती हैं मज्जन कियेजाय ममधाम ॥ ४३ ॥
निकट अयोध्या के प्रभु आये अरु पुनि लाये भूमि बिमान ।
उतरिकै पुष्पकते प्रभु बोले तुम कुबेरपहँ जाउ बिमान ॥ ४४ ॥
पुनि प्रभु देख्यो सब पुरजन को तिनके अग्र गुरू महराज ।
तिनके मध्य देखि भ्रातादोउ दुर्बल अंग रहेतहँ भ्राज ॥ ४५ ॥
रामचन्द्र लक्ष्मण तब धाये तुरतै गहे गुरू पद जाय ।
हृदय लगायो दोउ भैयनको आशीर्वाद दीन हर्षाय ॥ ४६ ॥
बड़े प्रेमसों पुनि गुरुनायक पूंछी कुशल प्रश्न सुखपाय ।
तव पदपंकजके भेंटेते सबविधि कुशल मोर मुनिराय ॥ ४७ ॥
पुनि पद बन्दे सब बिप्रन के धरि कै भूमि आपनो माथ ।
कुशल प्रश्नकरि सबविप्रनसों हर्षितहृदयरामरघुनाथ ॥ ४८ ॥
गहे भरत पुनि प्रभु पदपंकज पुलकित हृदय प्रेम अतिछाय ।
परेभूमि नहिं उठत उठाये बलकरि कृपा सिन्धु उरलाय ॥ ४९ ॥

कहँलग बरणौं मैं प्रेमावलि धारे अमित रूप रघुराज ।
यथायोग्यमिलि सबकाहूकोकीन्हे हर्षित सकलसमाज ॥ ५०॥
पुनि प्रभु भेंटे जाय केकई सो लखि मनमें गई लजाय ।
बिविधभांतिसे रघुनन्दन ने दीन्हो माते ज्ञानदृढ़ाय ॥५१ ॥
सृष्टि विधाता की जहँलग है माता करौ वचन बिश्वास ।
मायाबंधनसों सब बांधे औ फंसरहे मोहकी फांस ॥ ५२ ॥
जड़ अरु चेतन जहँलग देखो हैं सब बँधे कर्म की पाश ।
भलअरुअनभलजो जसकीन्ह्योसो तसलहै कर्म कीआश५३॥
लज्जा लावौ ना मन अन्तर माता कछू दोष नहि त्वार ।
यहिविधि समुझायो माताकोयह सबमाता कर्महमार ॥ ५४॥
तहँते उठिके श्रीरघुनन्दन भेंटे जाय आपनी मात ।
मिले सुमित्राको रघुनन्दन आशीर्वाद दीनहर्षात ॥ ५५ ॥
लक्ष्मण मिले सकल मातन सौं सबसों मिले प्रेम मन लाय ।
कहँलग बरणौं मैं प्रेमावलि हर्षित नगर नारि मुदपाय॥ ५६॥
सीता भेंटी गुरुपत्नी को पुनि सब सासुनको शिरनाय ।
आशीर्वादपाय अति हर्षीं पुरकी नारि मिलींसबधाय ॥५७ ॥

॥ रामाभिषेकप्रारम्भः ॥

॥ बंदना—छंद दोवै ॥

जयति गणाधिप बुद्धिबिनायक बंदनीय सुखदायक ।
जयति बुद्धिदाबानि भवानी बरदानी सबलायक ॥
जय शंकर शंकर के दाता जयति हनूमत पायक ।

सुजन आपनो जानि कृपानिधि हूजै सबै सहायक १ ॥
अशरण शरण जगत प्रतिपालनि दास जानकी अंबा।
रामचन्द्र प्रिय परम पावनी तुही एक अवलंबा।
जेहि बिधि चाहो मातु निबाहो बन्दौं पद रज तेरे।
पूरवा सबै मनोगति मेरे मातु दयाद्दग हेरे ॥ २ ॥

दोहा ॥

मंत्रिन बोलि बशिष्ठ कहि, रचौतिलकहितसाज।
शुभसुखदायकसुदिनअति,आजराजरघुराज ३

॥ छन्द आल्हा ॥

सुनिकै आज्ञा मुनिनायक की मंत्री सजन लगे सबसाज।
सब नर नारी हर्षित ह्वैकै करिबे लगे आपनो काज ॥ ४ ॥
गुरु बशिष्ठ बोले रघुबरसे जलदी जायकरौ असनान।
सुनि अस्नान कीन रघुनन्दन हियमेंराखि शंभुकोध्यान ५ ॥
पहिर पिताम्बर को जल्दीसे संध्या करन लगे रघुराय।
श्वर्ण सिंहासन को मँगवायो हर्षित बदन बेगि मुनिराय ६ ॥
मधुर मनोहर दोऊ मूरति तापर बैठि सीय रघुराय।
माथनवायो सब विप्रनको जयजयकार रही ध्वनि छाय ७ ॥
भरत शत्रुहन दहिने ठाढ़े बायें लषण लाल हनुमान।
आस पास सब राजा सोहैं एकते एक शूर बलवान ॥ ८ ॥
जगमग जगमग होय अयोध्या सरसर चलै तीनिहू बाय।
झल झल झलकै श्रीसरजूजल थलथल रहीअवनिहर्षाय९॥
धामधाममें केशर पोती चमचम चमकि चमकि रहिजाय।

द्वारद्वार में बन्दनवारे घर घर रहे पताका छाय ॥ १० ॥
को गति बरणै पुरबासिनकी सोने कलश दिये धरवाय ।
घृत सों पूरित दीपक सोहैं सुंदर गीत रहीं सबगाय ॥ ११ ॥
कहँ लगबरणौं मैं पुर शोभा सुनिये तिलककेर अब गाथ ।
दधि दूर्वा अक्षत अरु चन्दन यहसबधरयो थालमुनिनाथ १२ ॥
सकल तीर्थन को जल लैके तुरतै गये सिंहासन पास ।
तिलकलगायो रघुनन्दनके पूजी सकल नारि नर आश ॥ १३ ॥
पुनि सब विप्रन ह्वै यक ठौरी कीन्हो तिलक रामकेशीश ।
पुत्रपतोहूकी छबि देखत माता ध्यावैं हृदय गिरीश ॥ १४ ॥
तीनों माता रघुनंदनकी आरति करैं मोद अधिकाय ।
वस्त्राभूषण करैं निछावर मोती हीरा रहीं लुटाय ॥ १५ ॥
घोड़ा हाथी औ रथ दीन्हे कोटिन गऊ दीन पुजवाय ।
सब याचक गण भये अयाचकजयजयरामरहेसबगाय ॥ १६ ॥
सुमनवृष्टि बरषैं सब सुरगण भेरी शंख रहे हहराय ।
झाँझ मृदंग आदिसबबाजैंतिनकाशब्दरहाअतिछाय ॥ १७ ॥
घनन घनन घन घंटा बाजैं दादिर दारा करैं सितार ।
गमक गमकगमगमकैतबलाअरुढोलकको शब्दअपार ॥ १८ ॥
डिम् डिम् डिम् डमरू बाजैं बीणा झन्न झन्न झन्नाय ।
झम् झम् झम् झम् बजैं पैंजनी रंभानृत्यकरैं मनलाय ॥ १९ ॥
देखैं कौतुक सकल देवता अपने अपने चढ़े बिमान ।
पुरमें बाजैं अनंदबधाई घर घर होय मांगलिक गान ॥ २० ॥
उहीं समैया उहिअवसरमें धारे देव मनुज के रूप ।
पृथक् पृथक्तिन अस्तुतिकीन्ही राजत तहांरामनरभूप ॥ २१ ॥
बन्दीजन का बेष बनाये आये तहां चारिहू बेद ।

बिनय सुनावैं रघुनंदनको जानै कोउन तिनको भेद ॥२२॥
जय जय सगुण रूप निर्गुण प्रभु जयजयसकलभूपशिरताज ।
दुष्टबिनाशी सुर सुखराशी जय जय महाराज रघुराज ॥ २३॥
भवभयहारी नर तनुधारी मारी दुष्ट तारकानारि ।
शाप उधारी गौतमनारी जय जय सीतासहित खरारि ॥२४॥
तुम्हरी मायामें सब मोहे सुर नर असुर झारि संसार ।
कालकर्मगुण अवगुण साने भरमैं माया सिंधु अपार ॥२५॥
कृपा तुम्हारी जापरहोवै माया जाय न ताके पास ।
शुद्धजो चाहै अपनी काया सोनर धरै भक्तितव आश ॥ २६॥
मान मोह मदमें जो भूलै ते नर भरमैं कल्प हजार ।
भक्ति तुम्हारी जेहि उर आवै सो नर चलाजाय भवपार॥२७॥
भक्ति बिहीन होय ब्रह्मासम ताको नहीं जगत निस्तार ।
चरण तुम्हारे सब सुर ध्यावैं पावैं कबहुँ न पारावार ॥ २८ ॥
सोई पंकज चरण तुम्हारे सन्मुख देखि रह्यौं रघुराय ।
नमोनमो ते चरण तुम्हारे इन यश कहौं कहां लगगाय॥२९॥
हमको चरणभक्ति प्रभु दीजै करुणासिंधु पाहि भगवान ।
एवमस्तु रघुनन्दन बोले करिकै बहुत भांति सन्मान ॥ ३० ॥
निज निज धाम गये श्रुति सुरगण आये शंभु जहां रघुबीर ।
गद्गद बाणी ते शिव बोले प्रेमसे पुलकित सकल शरीर ३१॥
जय रघुनन्दन सुर उर चन्दन जय सुरधेनु भक्तहितकार ।
अवधबिलाशी सबसुखराशी महिमातुम्हरी अमित अपार३२॥
सिंधुहि पाटे दशशिर काटे बालिहिं हना एकही बान ।
निजप्रणपाला दीनदयाला राखासदा साधुउर मान ॥ ३३ ॥
जन सुखकारी गर्वप्रहारी सुमिरौं सदा बाल तव रूप ।

भवभयहारी सबसुखकारी जयजय नमोनमो नरभूप ॥ ३४॥
बाल स्वरूपा तब नरभूपा संतत करै हृदय मम बास।
यहबर मांगौं श्रीरघुनन्दन पूरण करौ हमारी आस ॥३५॥
एवमस्तु बोले रघुनन्दन करि कै बहुत भांति सन्मान।
तबकैलाश गमन शिव कीन्होउरमें राखिरामकोध्यान ॥ ३६॥
दान मान सों पूरण हुइके गवने बिप्र आपने धाम।
निज निज भवनगये नरनारी पूरण भयेचित्तसबकाम ॥३७॥
गुरु बशिष्ठ गवने निज मंदिर अरु रघुनाथ कीन तब शैन।
भरत शत्रुहन लषणलालजी उठिकै चले आपने ऐन ॥३८॥
महाराज रघुनन्दनजी का जे नर तिलक कहैं नित गाय।
सुरदुर्लभ सुखजगमें पावैं अन्तिम रामधामको जाय ॥ ३९॥

॥ अथ विभीषणादिनिजगृहागमन ॥

❁ सुमिरण ❁

॥ छन्द आल्हा ॥

मैं पद बन्दौं दिननायक के जो प्रत्यक्ष देव संसार।
महिमाजिनकी सब जग जाहिर पूरण ब्रह्मरूप करतार ॥ १ ॥
हैंअबिनाशी सब सुखराशी अंजलि दिहे करैं उद्धार।
जिनके उदयहोत जगजागै निज निजकाज करैसंसार ॥ २॥
रबिमंडल सब देव बिराजैं जिन की कृपा होय भवपार।
लवण त्यागि अरु नेम धर्मसों रबिदिन एकबारआहार ॥३॥

भक्ति करै रवि नारायण की आरति करै धारि विश्राम।
सूर्यपुराणसदृश जो बरतै सो नर चला जायरविधाम ॥ ४ ॥

॥ छंद पद्मावती ॥

जय जय जगकर्ता त्रिभुवन भर्ता विनय हमारी श्रवणकरो।
नहिं दूजी आशा राखत दासा बाना बिरद सुधारि धरो॥
सबभांति निवाजो साजहिं साजो ज्ञान देहु अज्ञान हरो।
दीजै जग मुक्ती पूरणभक्ती अवढर ढरनि सुबानि ढरो ॥ ५ ॥

॥ छन्द आल्हा ॥

बहुत दिवसबीते यहि विधिसेंनितनित होयप्रीतअधिकाय।
समयसुहावन सबमनभावन हर्षित नगर राज रघुराय ॥ ६ ॥
यकदिन प्रातजगे रघुनंदन प्रातः कृत्य कीन हर्षाय।
रत्नजटित सिंहासन बैठे सुर नर सकल रहे यशगाय ॥ ७ ॥
भरत लक्षिमण औ रिपुसूदन बैठे शीश रामको नाय।
गुरुबशिष्ठ निज शिष्यन संयुत आये सभामध्य हर्षाय ॥ ८ ॥
उठिसिंहासन सों रघुनंदन बन्दन कियो गुरूपद जाय।
हाथ पकरिके गुरुनायकको आसन दियो बराबरि जाय ॥९॥
करि पदबंदन रघुनंदनको हनुमत लीन्हो चमर उठाय।
मन्दमन्दगति चमर हिलावैं अरुमनरामचरणमें लाय ॥१०॥
कपिपति और लंकपति बैठे नल अरु नीलबालिको लाल।
जामवंत ऋक्षनपति बैठे सचिव सुमंत वृद्ध तेहि काल ॥११॥
उही समैया के अवसर में बोले रामचन्द्र महराज।
सात महीना पूरण हुइके लंकातजे मोहिं कपिराज ॥ १२ ॥

बाम धाम सुख राज्य त्यागिकै लङ्का गये हमारे साथ।
तुम्हरे बल से रावण मारा सारा तिलक बिभीषणमाथ ॥ १३ ॥
यहँपर राजैं सोउ बिभीषण त्यागा हेतु हमारे भ्रात।
निजगृह जाउ बेगि तुम दोऊ त्यागौ नहीं बंधुको नात ॥ १४
जब तब ह्यां तुम आवत रहियो हौ तुम भरत बंधुसम तात।
राजनीतिसों निजपुर पाल्यो शाल्यो सदा दुष्टके गात ॥१५॥
गऊ विप्रसुर संतन मान्यो जान्यो यही नीतिको सार।
कपि पति और बिभीषण बोले सुनिये महाराज सरदार ॥१६॥
मनसा बाचासों हम जानैं गुरु पितु मातु सखा अरु भाय।
हमरे सर्वस हौ तुम स्वामी तव पद छांड़ि कहां हमजांय॥ १७॥
रामचन्द्र तब बड़े प्रेमसों कीन्हों बहुत भांति सन्मान।
नाना विधि बस्त्राभूषण दैदीन्हींसखाजानि भगवान ॥१८॥
भरत शत्रुहन लषणलाल युत पठवन हेत चले रघुराय।
तिनके पीछे हनूमानजी पठवन हेत चले हर्षाय ॥ १६ ॥
नयनन आंसू भरि कपिराजा गद् गद् वचन कहेउ परिपांय।
कृपा बनाये हमपर रहियो हौ तुम पितासदृश रघुराय ॥ २०॥
कहा बिभीषण औ कपिराजा नल औ नील ऋक्षके नाथ।
भक्ति तुम्हारी नित उरबाढ़ै यह बर मिलै मोहि रघुनाथ ॥२१॥
एवमस्तु रघुनन्दन बोले तब सब कीन्हों सबहिं प्रणाम।
उरमें राखि चरण रघुबरके अरु सब गये आपने धाम ॥ २२ ॥
तीनौ बंधुन सह रघुनंदन आये हर्ष सहित दरबार।
पुनि निषाद गुहसों प्रभुबोले गवनौभवनसखा यहिबार २३॥
बहुत भांति प्रभु सादर करिकै दीन्हो भूषण बस्त्र मँगाय।
दै निजभक्ति दीन आयसुप्रभुगवनेहृदयधारि रघुराय ॥२४॥

बोले बिहँसि बहुरि रघुनन्दन सुनिये बालितनय मम बात।
धाम आपनेको अब गवनौ तुमको बहुतदिवस भे तात।।२५।।
सुनिकै बाणी रामचन्द्रकी अंगद गिरयो मूर्छाखाय।
ह्वै सचेत बोल्यो मैं किंकर सुनिये दीनबंधु रघुराय।। २६।।
पिता हमारे अन्त समयमें तुमते लहेउ रहै वरदान।
अंगद अपनो सेवक करिये सुनिये भानुवंश में भान।।२७।।
मम पितु वचन सत्य करिये प्रभु रखिये सदा चरण सेवकाय।
किंकर तुम्हरेका किंकरहौं नहिंतव उचित त्यागरघुराय।।२८।।
आरत बाणी सुनि बोले प्रभु हियमें धरौ पुत्र तुम धीर।
भरत बंधुसम तुमप्यारे हौ यह कहि भरा राम दृगनीर।।२९।।
बिकल तुम्हारी माता हुइहै तिनका आवौ देखि दिखाय।
सेवा कीन्यो निजमाता की अंगद यही धर्मसमुदाय।। ३०।।
चचा आपने की आज्ञा को आलस छोड़ि कियो हर्षाय।
यहकहिनिजकरसों रघुनन्दनभूषण बस्त्र दियोपहिराय।।३१।।
गिरयो लकुट इव तब धरणीमा ठाढ़ो भयो जोरि दोउ हाथ।
भक्ति आपनी मोको दीजै करुणासिन्धु पाहि रघुनाथ।।३२।।
एवमस्तु रघुनायक बोले अंगद चलिभा शीश नवाय।
पवनतनय तेहि पाछे चलिभा पठवन हेत हृदय हर्षाय।।३३।।
पुरके बाहर जब दोऊ भे अंगद कह्यो सुनौ हनुमान।
सुरतिदिवायो रघुनन्दनको अबतुमलौटिजाउ बलवान।।३४।।
माथ नवायो तब अंगदका प्रभु पहँ लौटि चले हनुमान।
आयके पहुँचे सभा मध्यमें राजत जहां राम भगवान।। ३५।।

॥ दोहा ॥

नारायण रघुपति समुद, भरतहिंनिकटबुलाय।

कीर्तिअंजनी सूनुकी, कहत न जातनगाय ३६॥

॥ भैरवीतर्जगजल ॥

भरत सुनिये कछू हनुमत बड़ाई ।
कहूँ केहि भांति मैं मुख एक गाई ॥ ३७॥
जलधि तरि शत्रु सुत आरामनाश्यो ॥
महाबल बुद्धि से लंका जराई ॥३८॥
सिया संबोधि मन धीरज धरायो ॥
बहुरि सुधि आयसब मोको सुनाई ॥३९॥
लगी संग्राम माहि शक्ती लषणउर ।
सजीवन लायकै मुर्छा जगाई ॥ ४० ॥
समर लंकेशप्राति अति घोर कीन्हो ।
बली हनुमानकृत भरतै सुहाई ॥ ४१ ॥

॥ इति ॥

॥ अथ संतअसंतलच्चण ॥

॥ छन्द आल्हा ॥

बन्दन करिकै रामचंद्रपद बोले भरतलाल महराज ।
संत असंतनके लक्षण सब कहिये कृपासिन्धु रघुराज ॥ १ ॥
बाणी सुनिकै भरत बंधुकी बोले मृदुल बैन रघुनाथ ।

संत असंतनकी करणी सब बरणी वेद पुराणन गाथ ॥ २ ॥
संतन जानौ तुम चंदनसम कुल्हरी सदृश असंतन मान।
चंदनरूपी हृदय साधुको कुल्हरीसम असाधु परमान ॥ ३ ॥
बचन कुल्हारा जो असाधुके संतन हृदय देयँ सो
तबहूं ताते उठैं सुगंधैं संतनकेरो यहै प्रभाव ॥ ४
काटे खंड होत चंदन के सो वह परत बिप्रके साथ।
रगरि चढ़ावैं सब देवनपै पाछे देत आपने माथ ॥ ५ ॥
सबके प्यारो है सो चंदन कुल्हरी क्यार सुनो अब हाल।
धारउलटि गइ जब कुल्हरीकी तबसोपरै अग्निकीज्वाल ॥६ ॥
बहुत तपै पुनि होय लाल जब तब तेहि परै घननकी मार।
कूटि पीटिकै होय बराबर तबहूँ तजै न अपनो कार ॥ ७ ॥
ऐसेहि जानौ तुम असाधु को त्यागत नहीं आपनो भाव।
बचन नम्र मनु उठैं सुगंधै संतन केरो सहज स्वभाव ॥ ८ ॥
मन नहिं लावैं विषय वासना अरु पर नारी मातुसमान।
परदुख देखे दुखी होत हैं पर सुखसुखी संतको जान ॥ ९ ॥
शत्रु मित्र कोऊ नाहिं जिन के मनमें राखैं सहज बिराग।
लोभ हर्ष मदभय नहिंराखैं औनित भजैंमोहिंछलत्याग ॥१०॥
मृदुल चित्त दीननपर दाया मिथ्या करैं न बाद विबाद।
मनसा बाचा और कर्म्मसों त्यागैं नहीं कभी मर्य्याद ॥११॥
यह सब लक्षण हैं संतन के अब तुम सुनौ असंत स्वभाव।
संगति तिनकी जोनर धारैं अंतिम होय ताहिदुखदाव ॥ १२ ॥
काहूके देखैं जब संपति मानहुँ गिरी तापकीगाज।
जहँ कहुँ निंदा सुनहिंपराईमानहुँ मिली संपदा आज ॥१३॥
बिपदा देखैं जब काहूकी मानहुँ मिली स्वर्ग की राज।

सुनहिं बड़ाई जब काहूकी मानहुँ बिगड़ि गये सबसाज॥१४॥
दण्ड अदण्डनको नित देवैं सेवैं नहीं गुरू पितु मातु।
...मपुर जावैं मानहुँ बचन सत्य तुम तात॥ १५॥
... झूठै देना झूठै करैं सदा सनमान।
...ज्ञा नित उठि भाषैं झूठै देवैं दान महान॥ १६॥
...

...री बाणी ऐसी बोलैं मानौ बोलि रहा है मोर।
...ाय पचावैं ते सर्पन को ऐसो निर्दय हृदय कठोर॥ १८॥
...गुणहिं पछारे अवगुण धारे सारे तिलक दुष्टता काज।
कामके मारे क्रोधके जारे घूमैं तजे जगतकी लाज॥ १९॥
ऐसे प्राणी नहिं सतयुग में त्रेता भये न एकौ तात।
कोउ कोउ प्राणी द्वापर ह्वैहैं कलियुगमांहि पांतिकीपांत॥२०॥
सुनहु भरत जे सुजन शिरोमणि ते नहिं करैं खलन कोसाथ।
काज पराये जो लगि जावैं तौ दैदेइँ आपनो माथ॥ २१॥
बेद पुराण शास्त्रको संमत सो तुम सुनो भरत धरि ध्यान।
परउपकारी की समताको है नहिं पुरुष जगतमें आन॥ २२॥
नाहिं सतावै काहु जीवको सबमें जानै बास हमार।
ऐसी मति राखै निशिबासर सो नर चलाजाय भवपार॥ २३॥
यह सुनि बाणी रामचन्द्रकी बोले भरत बचन परि पांय।
धन्य धन्य है तुमको स्वामी हो प्रभु धन्य धन्य रघुराय॥२४॥
यहि बिधि सदा राम रघुनंदन भोगैं राज देहिं उपदेश।
नीति धर्म नित उठि समुझावैं दुखकोबास नाहिंलवलेश॥२५॥
कहँलग बरणौं रामचरित मैं जो प्रभुचरित सिंधु मंझधार।

केवल रामनाम यकनौका जेहिचढ़ि जगत होयभवपार॥२६॥
उत्तर रामचरित की गाथा जो नर पढ़ै सुनै नित [illegible]
सो नर सुखीरहै निशिबासर रघुपति चरणहोय अतिप्रे[illegible]
जोनर आल्हखण्ड रामायण पढ़िहैं नित्यनेम [illegible]
अथवा सुनिहैं प्रेमभक्तिसों रहिहैं सुखी सौख्य बरपाय ॥२[illegible]
पण्डित नारायण मुकुंद जी नित बिद्याको करैं प्रचार।
[illegible]बरेली अरु लखीमपुर है दूकान पुस्तकन क्यार ॥ २६ ॥
शास्त्रपुराण आदि की भाषा उल्था करत रहत दिनरात।
पुनि नवीन पुस्तक नित बिरचैं ध्यावैं सदाराम विख्यात॥३०॥
सम्बत् उनइससै बावनमें हियमें सुमिरि राम करतार।
चैत उजेरी तिथि नवमी में शुभ दिन आनिपरो गुरुवार ३१॥
मैं आरंभ कीन्ह यह आल्हा पूरण कियो मास शुचिमाहिं।
क्षमिहैं चूक जानिमोहिंकिंकरसज्जनगिनाइं दोषकछुनाहिं३२

॥ सवैया ॥

काशी प्रयाग गया मथुरादि अनेकन तीर्थको पुण्य धरै।
दान असंख्यन देइ कोऊ बहुरो जप यज्ञ सुकोटि सरै॥
सो हरिधाम निरंत बसै अरु अन्तसमय यमशोक टरै।
राम मुकुंद लहै फल ए नित जो यह पुस्तक पाठ करै॥३३॥

॥ दोहा ॥

लीला श्रीभगवानकी, जो नर करै प्रचार।
नारायण प्रभुकृपाते सुखी रहै संसार ॥ ३४ ॥

इति श्रीमत्पण्डितनारायणप्रसादमुकुंदरामकृत
आल्हखण्डरामायणं संपूर्णम् ॥

Printed at The Lucknow Printing Press:—Lucknow.